U 712




# JAWAHAR-UL-HIND

(Volume - 3)

EDITOR :

**Dr. A. ZAIBUNISSA**. M.A. (Urdu) M.A. (Hist.) B.Ed.Ph.D.

GENERAL EDITOR :

**K. DAMODARAN**. M.A.,

AR
231

Government Oriental Manuscripts Publication No. : 436
Islamic Publication No. : 30

# JAWAHAR-UL-HIND

## (Volume - 3)

**EDITOR :**

DR. A. ZAIBUNISSA. M.A. (Urdu) M.A. (Hist.) B.Ed.Ph.D.
Urdu Pandit
Government Oriental Manuscripts Library, Chennai - 5.

**GENERAL EDITOR :**

K. DAMODARAN. M.A.,
Director
Department of Archaeology,
Chennai - 113.

Government Oriental Manuscripts Library,
Chennai - 600 005.
**1999**

**Price : Rs.79/-**

# ஜவகர் உல் இந்த் - தொகுதி III

## நூற் சுருக்கம்

ஹாஜிர் ரசா அலி எனும் உருதுப் புலவர் யாத்த பாக்களின் தொகுப்பு இது. கி.பி. 17ஆம் நூற்றாண்டு நூல்; இந்தியா முழுவதுமிருந்த பல உருதுப்புலவர்களின் பாக்களும் அவர்களின் வாழ்க்கைக் குறிப்புகளும் கொண்ட நூல். தமிழ்நாட்டு உருதுப் புலவர்களின் பாக்களும் அவர்தம் வாழ்க்கைக் குறிப்புகளும் இந்நூலில் உள்ளன.

எனவே, தமிழகத்தைப் படம் பிடிக்க இந்நூல் ஒருவாற்றான் உதவும்.

கி.பி. 17ஆம் நூற்றாண்டு வரலாற்றை விளக்க, ஆய்வாளர்களுக்கு இது பயனாகும்.

**முனைவர். சு. சௌந்தரபாண்டியன்**
எம்.ஏ(தமிழ்), எம்.ஏ(ஆங்), பி.எட், டிப்.வ.மொ, பிஎச்.டி.
காப்பாட்சியர்
அ.கீ.சு. நூலகம், சென்னை - 5.

**Printed at :** Royapettah Stationery and Printing and Allied Products Producers Indl. Co-op. Society Ltd.,
26, Koya Arunagiri 1st Street, Royapettah, Chennai - 600 014.

# JAWAHAR UL HIND
## VOLUME - 3

Editor's Note

The present edition is the continuation of the second volume of Jawaharul Hind. As this work is arranged in the alphabetical order, this third volume under description contains about 110 poets, selective verses in alphabetical order begining with the letter; ذ Zal and ends with the letter ک K a f . Many odes, gazals and poems of moral and ethical interest are found in this edition. Besides this a short biographical account in Persian is found for each selection. This Tazkirah possesses a high literary merit.

**Dr. A. Zaibunissa**, M.A.(Urdu) M.A.(Hist) B.Ed.Ph.D.,
Urdu Pandit
G.O.M.L. Ms. - 5.

# THE WINGS OF URDU

This is a valuable 17th century collection of songs which portray the language and lives of many Urdu poets including a few born in Tamilnadu.

Haji Raza Ali is the author of this compilation work.

Perhaps the flourishing Tamil poets of 17th century may have enkindled this author, Ali, who lived in North Arcot in Tamilnadu.

Interestingly Haji Raza Ali was a relative of Nawab of Arcot.

In this way, this is a conspicuous work to get published.

**Dr. S. Soundarapandian**
M.A.(Tamil) M.A. (Eng.), B.Ed., Dip.Skt., Ph.D.
Curator
G.O.M.L.

# جواہر الہند

(حصہ سوم)

از

## ڈاکٹر زیب النساء

ایم۔اے (اردو) ایم۔اے (ہسٹری) بی۔ایڈ۔پی۔ایچ۔ڈی

گورنمنٹ اورنٹیل میانو سکرپٹ لائبریری

مدراس۔۵

# جواہر الہند

(حصۂ سوم)

## پیش لفظ

تذکرہ جواہر الہند اپنی نوعیت کی پہلی کوشش ہے۔اس سے قبل ہم کتابِ ھذا کی جلد اول اور دوم اہل علم حضرات کی خدمت میں پیش کر چکے ہیں۔اب بحمد اللہ یہ جلد سوم ہدیہ ناظرین ہے۔اس جلد میں حرف تہجی کے اعتبار سے حرف "ک" سے لیکر حرفِ "میم" تک کے شعراء کا اردو منتخب کلام موجود ہے۔فارسی میں مختصر تذکرہ۔ حسبِ سابق دیا گیا ہے۔اس جلد میں تقریباً 110 شعراء کا منتخب کلام پیش خدمت ہے ۔جنوبی ہند میں تاریخی وادبی حیثیت سے یہ اہم تذکرہ مانا جاتا ہے۔ امید ہے کہ ناظرین اکرام اس سے استفادہ حاصل کریں گے۔

از

ڈاکٹر زیب النساء ایم۔اے (اردو) ایم۔اے (ہسٹری)۔بی۔ایڈ۔پی۔ایچ۔ڈی



U 612

## فہرستِ شعراء


| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | کلیمؔ | محمد حسین کلیم | دہلی | 8 | 9 |
| 2 | کمالؔ | شاہ کمال الدین حسین | مانک پور | 8 | 9 |
| 3 | گمانؔ | اشرف علی خان فغان | | 1 | 10 |
| 4 | کنایتؔ | زوجۂ نواب عماد الملک | | 2 | 10 |
| 5 | کنورؔ | | | 5 | 10 |
| 6 | کوچکؔ | شاہزادہ مرزا وجیہ الدین | دہلی | 1 | 11 |
| 7 | کوثرؔ | مہدی علی خان | لکھنو | 5 | 11 |
| 8 | گویاؔ | شیخ حیات اللہ | فرخ آباد | 1 | 12 |
| 9 | گویاؔ | حسام الدولہ نواب فقیر محمد خان بہادر | لکھنو | 10 | 12 |
| | | (ل) | | | |
| 10 | لطیفؔ | میر شمس الدین | لکھنو | 1 | 13 |
| 11 | لطیفؔ | میر لطیف علی | | 3 | 13 |
| 12 | لطیفؔ | میر قطب الدین | آرکاٹ | 7 | 13 |
| 13 | لطفؔ | مرزا علی | دہلی | 69 | 14 |
| | | (م) | | | |
| 14 | مائلؔ | میر محمدی سیدی | جہاں آباد | 1 | 18 |

| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 15 | مایلؔ | محمد یار بیگ | لکھنو | 1 | 18 |
| 16 | مایلؔ | سید کاعظم علی | خیر آباد | 1 | |
| 17 | ماہرؔ | فخر الدین خان | لکھنو | 1 | |
| 18 | مبتلاؔ | مرزا کاظم | لکھنو | 1 | |
| 19 | مبتلاؔ | | | 1 | 19 |
| 20 | مجذوبؔ | مرزا غلام حیدر بیگ | جہاں آباد | 4 | |
| 21 | مجنونؔ | | دہلی | 1 | 20 |
| 22 | مجنونؔ | | عظیم آباد | 1 | |
| 23 | مجرمؔ | میر فتح علی | دہلی | 1 | |
| 24 | مجرمؔ | رحمت اللہ | اکبر آباد | 3 | |
| 25 | مجبورؔ | | دہلی | 1 | 21 |
| 26 | محزونؔ | میر ناصر خان | دہلی | 3 | |
| 27 | محزونؔ | عالم شاہ | امروہہ | 3 | |
| 28 | محوؔ | حسین علی خان | اکبر آباد | 1 | 22 |
| 29 | محوؔ | شیخ عظیم اللہ | میرٹھ | 1 | |
| 30 | محبؔ | شیخ ولی اللہ | دہلی | 1 | |
| 31 | محبتؔ | نواب محبت خان | بریلی | 10 | |



| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 32 | محنتؔ | مرزا حسین علی | جہاں آباد | 2 | 23 |
| 33 | محشرؔ | اکرام اللہ خان | بدایون | 1 | |
| 34 | محشرؔ | مرزا علی نقی | کشمیر | 2 | 24 |
| 35 | محسنؔ | میر محسن | | 1 | |
| 36 | محترمؔ | خواجہ محترم علی خان | عظیم آباد | 5 | |
| 37 | محکمؔ | | | 5 | 25 |
| 38 | محمودؔ | محمود خان | | 20 | |
| 39 | مخلص | میر باقر | اکبر آباد | 1 | 26 |
| 40 | مخلصؔ | مخلص علی خان | مرشد آباد | 8 | |
| 41 | مدحتؔ | | لکھنو | 1 | 27 |
| 42 | مدہوش | | | 1 | |
| 43 | مذنبؔ | شیخ آدم | | 12 | |
| 44 | مرزاؔ | آقا مرزا | لکھنو | 2 | 28 |
| 45 | مرزاؔ | حکیم فضل اللہ | پانی پٹ | 3 | |
| 46 | مرزاؔ | ہدایت اللہ | دہلی | 1 | |
| 47 | مرزاؔ | | | 1 | |

| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 48 | مروتؔ | صغیر علی | مدراس | 16 | 29 |
| 49 | مرہونؔ | مرزا علی رضا | شاہ جہان آباد | 26 | 30 |
| 50 | مُزمّلؔ | مزمل شاہ | | 1 | 33 |
| 51 | مسرورؔ | شیخ پیر بخش | لکھنو | 3 | |
| 52 | مسرورؔ | مرزا سنکی بیگ | جہان آباد | 1 | 34 |
| 53 | مسرورؔ | شرف الدین احمد | میرٹھ | 1 | |
| 54 | مسکینؔ | سید عبدالواحد خان | دہلی | 1 | |
| 55 | مسرتؔ | شیخ وزیر علی | دہلی | 1 | |
| 56 | مستندؔ | یار علی خان | عظیم آباد | 1 | |
| 57 | مسیحؔ | براتی | کشمیر | 1 | 35 |
| 58 | مُشیرؔ | قطب الدین | جہان آباد | 1 | |
| 59 | مشتاقؔ | عبداللہ خان | جہان آباد | 7 | |
| 60 | مشتاقؔ | حافظ تاج الدین | میرٹھ | 1 | 36 |
| 61 | مشتاقؔ | محمد واصل | | 1 | |
| 62 | مشہورؔ | | بریلی | 1 | |
| 63 | مشہورؔ | مرزا محسن | | 18 | |
| 64 | مصدرؔ | ماشاءاللہ خان | دہلی | 1 | 37 |



| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 65 | مصحفیؔ | غلام ہمدانی | مراد آباد | 56 | 37 |
| 66 | مضمونؔ | | | 1 | 41 |
| 67 | مضمونؔ | شیخ شرف الدین | اکبر آباد | 2 | 42 |
| 68 | مضطرؔ | کنور سین | لکھنو | 3 | |
| 69 | مضطرؔ | مرزا سنگین | | 2 | 43 |
| 70 | مضطربؔ | محمد حاجی | دہلی | 1 | |
| 71 | مظہرؔ | مرزا جان جاناں | اکبر آباد | 3 | |
| 72 | مظفرؔ | سید مظفر علی خاں بہادر | | 1 | 46 |
| 73 | معقولؔ | | | 1 | |
| 74 | معنیؔ | محمد امین | | 1 | |
| 75 | معینؔ | معین الدین خان | الہ آباد | 1 | |
| 76 | معروفؔ | الہی بخش خان | | 33 | |
| 77 | مغلؔ | مغل علی | کشمیر | 1 | 49 |
| 78 | مغمومؔ | میر مشیت علی | | 1 | |
| 79 | مفتونؔ | مرزا کریم بخش | گورگان | 2 | |
| 80 | مفلسؔ | محبّ علی | رام پور | 1 | |

| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 81 | مقبولؔ | مقبول بنی | جہان آباد | 1 | 49 |
| 82 | مقتولؔ | ابراھیم بیگ اصفہانی | جہاں آباد | 1 | |
| 83 | مقصودؔ | | لکھنو | 1 | 50 |
| 84 | ملالؔ | | لکھنو | 1 | |
| 85 | ملنگؔ | ملنگ شاہ | | 3 | |
| 86 | ملولؔ | شاہ شرف الدین | | 1 | |
| 87 | مملوؔ | | | 2 | |
| 88 | ممتازؔ | | فیض آباد | 1 | |
| 89 | ممتازؔ | امیر الہند نواب والاجاہ ثانی | کرناٹک (آرکاٹ) | 37 | 51 |
| 90 | ممنونؔ | میر امانت علی | عظیم آباد | 1 | 53 |
| 91 | ممنونؔ | نظام الدین | سونی پت | 38 | |
| 92 | منیرؔ | وجیہہ الدین | | 3 | 56 |
| 93 | منیرؔ | خواجہ آفتاب خان | | 1 | 57 |
| 94 | منشیؔ | میر محمد حسین | شاہ جہاں آباد | 2 | |
| 95 | منشیؔ | مول چند | دہلی | 2 | |
| 96 | منتظرؔ | نور الاسلام | | 6 | 58 |
| 97 | منتظرؔ | شیخ امام الدین | اکبر آباد | 1 | |



| شمارہ | تخلص | نام | مقام | تعداد اشعار | صفحہ نمبر |
|---|---|---|---|---|---|
| 98 | منعمؔ | نور الحق | بریلی | 1 | 58 |
| 99 | منعمؔ | موہن لعل | | 2 | |
| 100 | منصفؔ | منصف علی خان | عظیم آباد | 2 | 59 |
| 101 | منتؔ | میر قمر الدین | سونی پت | 16 | |
| 102 | موزوںؔ | میر فرزند علی | لکھنو | 3 | 61 |
| 103 | موزوںؔ | چھتر سنگھ | دہلی | 1 | |
| 104 | موجؔ | خدا بخش | اکبر آباد | 1 | 62 |
| 105 | موتسؔ | حکیم سعادت علی | بنارس | 1 | |
| 106 | مومنؔ | حکیم محمد مومن خان | | 188 | |
| 107 | مہرؔ | رجب بیگ | | 1 | 74 |
| 108 | مہرؔ | منشی مہر چند | فرخ آباد | 3 | |
| 109 | مہلتؔ | مرزا علی | لکھنو | 1 | |
| 110 | میرؔ | میر محمد تقی | اکبر آباد | 2865 | |

بسم اللہ الرحمن الرحیم

کلیم تخلص میر محمد حسین کلیم از شعرای مسلم و مشہور و معروف یزنہٗ میر تقی میر است واز سلنائے دہلی در طب دستگاہی نام دار دچہ در فارسی وچہ در ریختہ شعرش بسیار علی مقام دیوان و مثنویات وغیرہ یادگار خود گذاشتہ صاحب گلشن ہند نوشتہ کہ نام کلیم شیخ محمد حسین است یک رسالہ در عروض و قافیہ بزبان ریختہ نوشتہ و ہمچنین ترجمہ فصوص الحکم بزبان ریختہ کردہ یک کتاب در نثر بزبان ریختہ بہ نہایت رنگین بیان نوشتہ صاحب دیوان است ودر عہد دولت احمد شاہ فردوس آرامگاہ بود ودر شاہ جہاں آباد سفر آخرت دید ہشت اشعار اوراست ؎

قبر میں بھی لئے ہمراہ گیا اپنے کلیم
آہ کیوں درد دل اپنا نہ کسی کو سونپا

آتی ہے دل یہ قلقل مینا سے اب شکست
وہ دن گئے کلیم کہ یہ شیشہ سنگ تھا

ہو چکا حشر گئے دوزخ و جنت کو خلق
رہ گیا می تیرے کوچے میں گرفتار ہنوز

پیری کی بھی سیر کر گئے ہم
اس پل سے بھی گذر گئے ہم

وہاں غصہ ہوئے رقیب پر تم
یہاں مارے ادب کے مر گئے ہم

رکھوں میں آنکھوں میں کیونکر تجھے کہ ہے برسات
پھر ایسا گھر کے جو خانہ خراب ٹپکے ہے

دیوانہ ترا وعدے پر اپنے اگر آوے
منہ دیکھو فلاطوں کا جو عہدے سے برآوے

غرورِ حسن کیا ممکن کہ اس سے درد کو پہنچے
غرض تم سن چکے احوال ہم فریاد کو پہنچے

کمال تخلص شاہ کمال الدین حسین اصلش از کڑہ مانک پور بزرگانش از ارباب مناصب بود ندوی ترک لباس کردہ کسوت درویشی پوشیدہ دل بر سیاحت نہادہ ہنگام ورود لکھنو از قلندر بخش جرأت امداد میخواست ہشت ابیات ازوست ؎



جز شکست و شیشۂ دل کچھ نہ دیکھا اور کام
مر تفع جس دن سے ہے یہ چرخ مینائے ہوا

اور دکھلایا تماشا مجھ کو وحشت نے کمال
میں تماشائی تھا جس کا وہ تماشائی ہوا

کالی نہ یہ گھٹا ہے نہ دود اپنے آہ کا
پر تو ہوا پہ ہے کس زلفِ سیاہ کا جوں جوں

یہ بھی کچھ بیٹھنے کا بزم میں اسلوب ہے واہ
جون جون ہم آگے بڑھیں آپ سرکتے جاویں

میری چاک جگر اے وائے جب سینے سے درگذرے
تو یوں جراح بولے اب کے سینے سے درگذرے

طلائی رخ پہ اپنے گر نہ خط سبز مینا تو
خوش آتا ہے یہ سادا ہی ہم اس مینے سے درگذرے

یہ قالین و دوشالا کس کو دکھلایا ہے اے منعم
یہ دو نو پشم ہیں ہم ایسے پشمینے سے درگذرے

بہ شکل خضر گذری عمر تنہائی میں گر ساری
تو لطفِ زندگی کیا ہے ہم ایسے جینے سے درگذرے

گمان تخلص از شاگردان اشرف علی خان فغان از نامش آگہی فغان نشد ناچار یک شعر ازوست

واسطے جس کے سبھی مجھ کو برا کہتے ہیں
وہ جو سنتا ہے تو کہتا ہے بھلا کہتے ہیں

کنایتگم زینست از دودمان عفت زوجۂ نواب عماد الملک غاز الدین خان کہ نظام تخلص ایشان است حسب الامر شوہرش گفتار خویش بنظر میر قمر الدین منت می آوردہ ناچار دو بیت ازوست۔

مقابل ہو اگر لب کے ترے مصری چبا جاؤں
تری آنکھوں سے ہم چشمی کرے بادام کھا جاؤں

شمع کی طرح کون روجانے
جس کے جی کو لگے ہے سو جانے

کنور تخلص از اسم وحالش واقفیت نیست پنج اشعار ازوست ؎

تقریر کرے وصف کو خلاق جہاں کا — مقدور کہاں لطق کو کیا منھ ہے زبان کا
خارج ہے تخیل سے توہم سے گمان سے — ذات اس کی جو واقف ہے سب اسرار نہاں کا
حامد ہیں سبھی ذرہ سے خورشید تک اوسکے — حقا کہ خداوند ہے وہ کون و مکان کا
ممکن نہیں ٹک اسکی تجلی کی بیان ہو — اس جائے تعقل کا گذارا نہ گمان کا
رہتا نہیں دایم کنور یک طرز پہ عالم — گذرے جو بہاراں وہیں موسم ہے خزان کا

کوچک تخلص شاہزادہ مرزا وجیہ الدین مرحوم در زمان جلوہ فرمای بلا دمشرق عزم گلگشت بہشت نمودہ جسدش رابدہلی آوردند و متصل مزار کشمیر الانوار سلطان المشائخ کہ ۳ سہ فرسخ از دہلی دور است دفن کردند این بیت از فکرت اوست۔

یہاں تلک پاؤں میں پھپھولے ہیں — کہ قدم بھر چلا نہیں جاتا

کوثر تخلص مہدی علی خان ولد قطب الدین خان ابن آقا علی خان کو چک برادر مومتمن الدولہ اسحاق خان کہ از امرائے نامی عہد فردوس آرام گاہ محمد شاہ بود مسقط الراسش لکھنو است از تلامذۂ ناسخ این پنج اشعار از نتائج افکار اوست۔

چشم میں عشق کے اعجاز سے آنسو ٹھہرے — ورنہ کشتی میں ہے دریا کا سمانا مشکل
تیرا تو آسرا تھا جدائی میں یار کے — اے موت تو بھی مجھ سے گریزان ہے ان دنوں
تربت پہ میری ایسے برستی ہے یکسی — بے اختیار شمع کے آنسو ٹپک پڑے
دل پھٹ گیا کدورت طبع نگار سے — حیرت کی جا ہے آئینہ ٹوٹا غبار سے



ہوں وہ بلبل کہ یہ تھا شوقِ اسیری پسِ مرگ — پر بھی اڑکر میرے صیاد کے گھر تک پہنچے

گویا تخلص شیخ حیات اللہ از اہل فرخ آباد و بمناصب ممتاز در سرکار انگریزی بہرہ ور ماند ایں بیت اوراست۔

جس کم سخن سے کیجئے تقریر بول اٹھے — ہے ہم میں وہ کمال کہ تصویر بول اٹھے

گویا تخلص حسام الدولہ نواب فقیر محمد خان بہادر از امرای نامی لکھنو وباوجود ہجوم دینا بدین مایل قدردان اہل ہر فن است و شعرای آن دیار بمد حش رطب اللسان بودند واز تلامذۂ شیخ امام بخش ناسخ است صاحب دیوان این دو ابیات ازوست ؎

نہ آنے کا ترا شکوہ عبث ہے — کبھی میں آپ میں آیا تو ہوتا
ضعف سے رہتا ہے اب پاؤں پہ سر — آپ اپنی ٹھوکریں کھاتے ہیں ہم
گر پڑے دانہ اگر جلنے لگے مثل سپند — یہ حرارت بعدِ مردن بھی ہے اپنی خاک میں
وصل اگر منظور تھا پرویز کا گھر کھودتا — کوہ کن دیوانہ ہے شیریں تو پتھر میں نہیں
درد پہلو میں رہا کرتا ہے جب سے تو نہیں — ہجر میں بھی ایکدم خالی میرا پہلو نہیں
نہ میرے زخم پر رکھو مرہم — میرے قاتل کی یہ نشانی ہے
ٹھکرا کے چلے جبین کو میرے — قسمت کے لکھے نے یاوری کی
مآل عاشق و معشوق ہے ایک — سنا ہے شمع سوزان کے زبانی
آیا جواب نامہ پسِ مرگ تب کھلا — تھی دیر اس لئے میرے خط کے جواب کی
زاہد وہ جرم کیا کرتا ہوں میں بہر ثواب — دل ہے کعبہ اسے کرتا ہے سیہ پوش مجھے

## در حرف اللام ۳ اسماء

لطیف تخلص میر شمس الدین از مردم بندر سورت ست به لکھنو اقامت ورزیده یک بیت ازوست۔

گھر میں جا بیٹھ رہا اس سے خفا ہو تو لطیف　　کیا ہی غصہ تیری اس بات پر آتا ہے مجھے

لطیف تخلص میر لطیف علی از ارادت کیشان و تلامذۂ خواجہ میر درد است جواہر رانیکو شناختے ۳ بیت ازوست۔

روتے ہیں شیخ و برہمن سبھی دل کے ہاتھوں　　گبر نکلا نہ یہ کافر نہ مسلمان نکلا
رہتا ہے درد روز دلِ ناتوان میں　　کیونکر اثر نہ ہو وے ہماری زبان میں
دامن کشیدہ جاتے ہو میرے غبار سے　　تقصیر ایسی کیا ہوئی اس خاکسار سے

لطیف تخلص میر قطب الدین ساکن مدراس اصلش محمد پور عرف آرکاٹ ذی برکات باقی احوالش باعث نظافت در نظر باریک بین ہم نیامد۔

گئہ جو کر چکے پھر مت کرو ہوا سو ہوا　　کرم تو حق ہے غضب سے ڈرو ہوا سو ہوا
کسی حریف سے محفل میں کام پڑ جاوے　　قصور مت کرو تم بھی دھرو ہوا سو ہوا
بیٹھ کے شیشے جو تم کئے خالی　　بہار جاتی ہے جلدی پھرو ہوا سو ہوا
قفس سے چھوٹ کے جاویگی پھر کہاں بلبل　　اسی میں خیر ہے پڑ کر مرو ہوا سو ہوا
لطیف تم نے جو اوقات مفت میں کھوئے　　اسی کے درد میں اب دن بھرو ہوا سو ہوا
فلک بچارہ ہے خود پریشان وہ کسکی تائید کیا کرے گا　　جہاں میں ایسا نہیں ہے نادان جو اس کے اوپر گلہ کریگا
مثال کیا محل کسی نے فلک کی رنگریزی پر لے آیا　　جو اپنی داڑھی کو رنگ سکا نہیں وہ کب کسی کو رنگا کرے گا



لطف تخلص مرزا علی اصلش از استر آباد است در دہلی نشو و نما یافتہ و در نواح عظیم آباد ساکن و بحیدر آباد رفتہ قصاید اثنا کردہ صلہ ہا یافتہ صاحب گلشن بے خار نوشتہ کہ نسبت شاگردی بہ میر تقی میر داشتہ امادر گلشن ہند من تالیف ہموں مرزا علی لطف فقیر جامع الاوراق بچشم خود ملاحظہ کردہ کہ دران مسطور است کہ اصلاح فارسی از والد بزرگوار کاظم بیگ خان اس طرآبادی ہجری تخلص نمودہ و مشورۂ نظم ریختہ فقط بطبعزاد خود است سی ۳۷ و ہفت ابیات اوراست۔

سنتے تھے طوفان نوح آنکھوں سے دیکھا وہ تو لطف　　دیکھئے یہ چشم گریان اور اب دکھلائیں کیا
دیکھ کل نبض میری رو کے لگا کہنے طبیب　　کبھی میں نے تو یہ آزار نہ دیکھا نہ سنا
چشم اور گوش زمانہ میں مقر اس کے لطف　　ثانی حیدر کرار نہ دیکھا نہ سنا
بہنے سے ایک پل بھی نہیں اشک رہ گیا　　دل ہو کے آب کیا بلا آنکھوں سے بہ گیا
ہر ایک نے تن پہ چاک کفن خوں کتاں کیا　　تربت پہ گشتگان کے جو اپنے وہ مر گیا
اے خضر راہ گم شدگان وقت لطف ہے　　آگے گئے ہیں یار میں پیچھے ہوں رہ گیا
گر قتل کیا ہے تو کوئی بات بتا رکھ　　یہ لطف کا خون ہے نہ میری جان چھپے گا
کربلا کا واقعہ جب سے سنا ہے تو نے لطف　　ہوں تیرے ہر سال کو ماہ محرم دیکھنا
ہے کون سبزہ رنگ خرامان کہ رشک سے　　جون شمع سبز جلتا ہے ہر سر و باغ کا
ساقی لگا دے خم میرے منھ سے کہ بار بار　　احسان کون کھینچے سبو اور ایاغ کا
تیرے کانوں تلک بھی لطف کچھ آواز آتی ہے　　ہے ایک عالم کو تیرے نالہ و فریاد کا شکوہ
فرہاد سا نہ رنگ نہ مجنون سا کیا حال　　اس شعر کو پڑھتا تھا وہ ناکام محبت

کل لطفؔ کے مرقد پہ گئے ہم تو تہِ خاک
اس شعر کو پڑھتا تھا وہ ناکام محبت

اے اہل محبت کوئی بھولے سے بھی ہرگز
لینا نہ خبر دار کبھی نام محبت

دیویگا زیرِ خاک بھی آرام خاک لطفؔ
پہلو میں یوں ہی گر رہا یہ بیقرار دل

یک آشناء بامزہ صد عالم آشنا است
بیگانہ دو جہاں سے میں آشنائے دل

آئینہ دار نور جمالِ علی ہو لطفؔ
منظور تجھ کو یار اگر ہے صفائے دل

تھا روز تو گذرا تیرے بیمار کا جوں توں
کیا جانئے کیونکر کٹی شب کچھ نہیں معلوم

اے ہم قفساں کوئی تو صیاد سے کہدو
مدت ہوئی حالِ چمن اب کچھ نہیں معلوم

ہے یہ بھی نئی چھیڑ شب وصل میں سوبار
پوچھے وہ کتنی رہی شب کچھ نہیں معلوم

اس عشق کی دولت نہ فقط جاں سے گئے ہم
دل سے گئے دینِ سے گئے ایمان سے گئے ہم

گر جان سے گئے ہم تو نہیں جان کا کچھ غم
صد شکر نہیں خاطر جاناں سے گئے ہم

اس زلف نے کافر کیا اور رخ مسلمان
دل دے کے غرض گبر و مسلمان سے گئے ہم

اس رنگ سے گر فصل بہار آئی تو اب کے
ہاتھوں سے جنون تیرے گریبان سے گئے ہم

شور زغن و زاغ بھی ہے جو چمن میں
تو نغمہ سرایان چمن یہاں سے گئے ہم

ہے لطفؔ علی قوت بازوی ضعیفان
ہر مور کہے کیون نہ سلیمان سے گئے ہم

دل تک بات بھی لانے کی یہاں طاقت اب بہمات نہیں
اور وہاں ہر آن فشار دل کے سوا کچھ بات نہیں

زلف کو اس کے کہنا سنبل دور یہ فہم رسا سے ہے
غنچہ کہتے اس کا دہن پر غنچہ میں وہ بات نہیں

گئی جوانی آئی پیری موئے سیاہ سب ہوئے سفید
تا کے غفلت جاگ اے غفل صبح ہوئی اب رات نہیں

باد صبا جو جاوے دکن سے کہیو ہند کے یاروں کو
صبر کا تحفہ بھیجو ہمیں اسے بہتر سوغات نہیں

بات پر اپنے آجاویں تو سر پر پہاڑ اٹھاویں لطفؔ
سمجھ تو یہ کیا لوگ ہیں وہ بھی جن سے اٹھتی بات نہیں

کعبہ سے ہم نہ واقف نہ بتکدے سے آہ
یہاں آستان دل ہے جبہ سائیاں ہیں



اے لطفؔ اس غزل پر کہنا بقول سودا
یہ عاشقی نہیں ہے زور آزمائیاں ہیں

آپ تو بات میں بگڑتے ہیں
واہ کیا منھ سے پھول جھڑتے ہیں

جا کے ٹک اپنے گشتگان کو دیکھ
ساتھ کن حسرتوں کے گڑتے ہیں

لطفؔ تو اور آستانِ علی
وہاں ملایک جبین رگڑتے ہیں

آقا کا، خدائی کا، وہ جو عہد غلامی
اے لطفؔ وصی شہ لولاک سے باندھے

یہی ہے لازم اے عزیزو مدد تم اپنے خدا سے چاہو
نبیؐ کے صدقے سے وہ تمہاری تمامی عقدوں کو وا کریگا

خدا نے اس امتحان کے خاطر عدم سے ہستی میں ہمکو لایا
کہ شکر اپنا ملک فلک سے زیادہ آدم کیا کریگا

خلاف اس کا نہیں عزیزو خمار الفت میں مال و زر کے
اگر وہ چاہے تو خاک صحرا کو پل میں رشک طلا کریگا

فلک کی دول ہمتی کے اوپر کبھی نہ گھبراؤ اے عزیزو
جو شیر یا ور دیا تھا تم کو وہ رزق در روزی بھی تم کو دیگا

لطیفؔ لازم یہی ہے تجھ کو کچھ اپنی عقبیٰ کی فکر کیجئے
کہاں تلک تو فلک کا شکوہ بتوں کی غیبت کیا کریگا

## ولہ

ترے باغ حسن سے اے صنم تو کل ملا نہ ثمر ملا
مگر ایک شاخ جدائی سے جو ملا سو خار جگر ملا

میں عدم سے لے کے یہاں تلک اسی جستجو میں تیری رہا
کسی باغ و بر سے ثمر مجھے نہ ادھر ملا نہ ادھر ملا

ارے جوہری مجھے مت ستا میں غریق
کہ سوائے دانۂ اشک کے نہیں کوئی مجھ کو گہر ملا

یہی داغ ہے ارے بلبلو کہو کیا ہوا وہ کدھر گیا
جو اڑا یہ صحن چمن سے اب کہیں اسکا پھر نہیں پر ملا

نہ تو دوستی نہ تو دشمنی نہ طمع کسی کی نہ آرزو
مگر اسکا دل سے غلام ہوں جو خوشی سے شام و سحر ملا

نہ بدی کسی کی بیان کروں نہ خوشی کروں نہ خوشامدی
یہی خوش ہے اس کی خدائی میں جو کہ مجھ کو ملا

کبھی در پہ دیر کے جا رہا کبھی جی حرم سے لگا رہا
یہ سوائے دل کو لطیفؔ کے کہیں یار کا نہیں گھر رہا

U 712



صبا تم ملو گے بلبل تو اس کو میرا سلام بولو
جو میں نے بولا سو یاد رکھ کے وہ دلربا کو سلام بولو

اگر وہ پوچھے پیام سن کر ہے کون ایسا ہمارا عاشق
جو اس تعشق سے بول بھیجا وہ یار جانی کا یار بولو

جواب اس کا یہی ہے بلبل جو تم نے روز ازل سے صاحب
خرید جس کو کہ کر چکے تھے وہی تو ہے یہ غلام بولو

یہاں کے جور و جفا سے دل یہ تن کو کب تک جتن کریگا
یہ وہ بدن ہی جدا ہو تجھ سے زمین کے نیچے وطن کریگا

عمر عزیز تیری سر اپا رنج و بلا میں گذری
عذاب دوزخ ہو جب ترے پر تو کس عرض محن کریگا

مشکل سے کرنے ہے کون مشکل کشا جہاں میں
مگر جو مشکل کشا ہے تیرا وہ نار دوزخ چمن کریگا

نہیں ہے ماتم سرا میں یارو یہ غم کسی سے ادا نہ ہوگا
جو غم کہ شہدائے کربلا کا جناب حضرت حسن کریگا

لطیف سچ ہے کہ حوضِ کوثر اسی کی خاطر خدا بنایا
الم میں آل نبیؐ کے رو رو جو موج دریا نین کریگا

اگر خریدہ ہے وہ تمھارا تو اس کو جلدی سے تم بلالو
تمہاری دوری نے زندگانی ہے اس کے اوپر حرام بولو

نقاب ہجرت اٹھا کے رخ سے چمن کو رشک سے بناؤ
تمہارے زلف سیہ کی الفت کئی ہے جنگل میں شام بولو

جو دم خوشی سے چمن میں گذرے سو ہے غنیمت ارے عزیزو
وگرنہ اس گلشن جہاں میں کہاں ہے کسکو قیام بولو

لطیف پر جو گذر رہی ہے نہیں ہے پوشیدہ تم سے
یہ درد اول سے تا باخرو دلربا کو پیام بولو

یہی نصیحت ہے ما سلف کی سمجھ کے منہ سے سخن نکالو
زبان بے استخوان کو میرے بلائے بد سے کوئی سنبھالو

گلہ کسی کا کسی کے آگے کسی طرح کا نہ تم لے جاؤ
اگر وہ شکوہ کرے تمہارا تو سن کے اسکو ہنسی میں ٹالو

محبِ خالص جو ہو تمہارا اس سے ہرگز نہ منہ کو موڑو
خلاف اسکا جو ہو منافق تو اسکی الفت پہ خاک ڈالو

جو دل میں خوفِ خدا نہ ہووے وہ دل کو سینے سے دور کیجئے
ہے دوستوں کا یہی مقولہ بغل میں دشمن کے تیئں نہ پالو

جہاں میں کوئی چیز آبرو سے نہیں زیادہ ارے عزیزو
تم اسکو آبِ گہر سمجھ کے روانگی سے بہت بچالو

سرائے فانی سے ہم بھی اپنا غبار بستر جھٹک رہے ہیں
ذرا تو ٹھہرو ہمارے خاطر بقا کی بستی کو جانے والو



کہاں نصیحت کا ہے زمانہ جو سن کے اوپر عمل کرے ہے
لطیف خاموش ہو رہو تم کسی کو اب کچھ نہ بولو



## در حرف المیم نودونہ اسماء

مایلؔ تخلص میر محمدی سیدی بودہ در جہان آباد شاگرد مولوی قدرت اللہ اکبر آبادی واستاد شاہ نصیر دہلویست یک شعر از نتائج افکار اوست۔

کیا کیا کہوں میں تجھ سے دل زار کی ہوس
مشہور ہے جہاں میں بیمار کی ہوس

مایلؔ تخلص محمد یار بیگ از اہالی لکھنو یکے از شاگردان قلندر بخش جرات است ایک بیت ازوست۔

پیتا ہوں جام مے کے عوض کانسہ بنگ کا
مایلؔ ہوا ہوں جب سے میں یک سبز رنگ کا

مایلؔ تخلص سید کاظم علی از اہالی خیر آباد است در ایعان شباب عمرش بسر آمدہ این شعر اوراست۔

شب ہجراں کی آہ ایک طرف
لاکھ اہ سیاہ ایک طرف

ماہرؔ تخلص فخر الدین خان فرزند اشرف علی خان فغان یکے از شاگردان مرزا رفیع السودا از ساکنان لکھنو بودہ ناچار این بیت ازوست۔

ملی اتنی نہ فرصت بھی کہ اٹھکر مانگتے پانی
ہوا تیر نگاہ یوں آہ دل میں کارگر کس کا

مبتلاؔ تخلص اسمٰعیل مرزا کاظم المخاطب از پیشگاہ وزیر الممالک بمردان علی

خان اصلش از مشهد مقدس ووی در لکھنو و متولد گردیدہ بزرگانش باحترام زیستہ اند گویند کہ مبتلا بفارسی صاحب دیوان است و ہم تذکرہ فراہم آوردہ این بیت از فکرت اوست۔

شیشۂ دل پٹک دیا تو نے  سنگ دل آہ کیا کیا تو نے

مبتلا تخلص از اسم ورسمش آگہی نیست این شعر از وست۔

وہ تیری سایۂ دیوار میں پاے راحت  چاندنی رات کو اے رشک قمر بھول گئے

مجذوب تخلص مرزا غلام حیدر بیگ از اہل جہاں آباد شخصے است کہ سود بفرزندیش برداشتہ بود صاحب گلشن ہند نوشتہ کہ نام مجذوب میر غلام حیدر بیگ است فرزند سرتاج شعرا مرزا رفیع السودا شاعر شیرین کلام در آشنا پرستی و یکرنگی مشہور خاص و عام در نظم ریختہ صاحب دیوان و در حسن ترکیب ناظم رنگین بیان صاحب دو دیوان و در حسن ترکیب ناظم رنگین بیان صاحب دو دیوان در جواب میر تقی میر تخلص مرزا علی لطف گوید در سن یکہزار و دو صد و پانزدہ ہجری مقدسہ بہ عسرت معاش در لکھنو دیدم چہار بیت از وست۔

خوباں سے جو دل ملا کرے گا دھڑکا ہے یہی کہ کیا کرے گا
آوے بھی مسیحا میرے بالیں پہ تو کیا ہو  بیمار یہ ایسا تو نہیں جسکو شفا ہو
اشک آنکھ میں ہو عشق سے تا دل میں غم رہے  یہ گھر ہے وہ خراب کے آتش میں نم رہے
طوبےٰ کے نیچے بیٹھ کے روؤں گا زار زار  جنت میں تیرے سایۂ دیوار کے تلے



مجنون تخلص مجہول الاسم مشہور بدرویش سربرہنہ شخصی بودہ از اولاد راے بھیم ناتھ بزرگانش بیگ دووا سطہ باسلام مایل شدند از تلامذۂ میر تقی میرا ست گویند کہ در کوچہ وبازار عور محض میگشت واین معنی دلیل ناشیر تخلص است امامکشوف نشد کہ جنون سبب گردیدن باین تخلص است یا تخلص سبب گردیدن بجنون سخن کوتاہ یک بیت اور است۔

جی سے جی چاہے ملو تم نہ کسی سے پوچھو  مجھ سے کیا پوچھتے ہو اپنے ہی جی سے پوچھو

مجنون تخلص نامش معلوم نشد یکی از اہل عظیم آباد است کسب سخن از میر ضیا کردہ این شعر از فکرت اوست۔

دن میں سو سو بار اسکے روبرو جانا مجھے  اسمیں سودائی کہے یا کوئی دیوانہ مجھے

مجرم تخلص میر فتح علی سید یست از دہلی عالی حسب والا نسب بجستجوی کیمیاء بر آمدہ مانند عنقا گردیدہ ناچار شعر ہذا از وست۔

اپنی خواہش پوچھتے ہو تو بھی چاہے دل  چپکے بیٹھے سامنے صورت تمہاری دیکھتے

مجرم تخلص رحمت اللہ در اکبر آباد بحرفہ کسب معاش میکردہ از مدت مدید از ان شغل در گذشتہ ولباس فقیرانہ در بر کردہ فیض صحبت میر محمدی بیدار یافتہ سہ بیت از افکار اوست۔

دل افگار دیا دیدۂ خونبار دیا چرخ ناساز نے کیا کیا مجھے آزار دیا
کی میں نے شکایت تو وہ بولا یہ خفا ہو گر ہم ہیں جفا جو تو کسی اور کو چاہو
کل غیر کے گھر رہنے کی کیا جھوٹ ہے پیارے کہا جائے حاضر ہوں مجھے گھورتے کیا ہو

مجبورؔ تخلص حق رسا از تلامذۂ شاہ نصیر دہلوی است این بیت ازوست این بیت ازوست

محزونؔ تخلص میر ناصر خان خلف سید محمد نصیر رنج تخلص کہ بالفعل سجادہ نشین خواجہ میر درد است کتب درسی نیک متحصر دارد خصوصاً در ریاضی امروز مہارتے کہ اورا ست دیگر یرا نیست گاہی لب بہ سخن میکشاید سہ ۳ ابیات اوراست۔

جھوٹ ہے اور سے کب میں نے لڑائی آنکھیں تم نہ بے فایدہ رو رو کے سجائیں آنکھیں
شاید اس وقت گیا آپ کا دھیان اور کہیں بات کرنے میں جو تم ربط سخن بھول گئے
نہ تو نامہ ہے نہ پیغام زبانی آیا حیف محزونؔ مجھے یارانِ وطن بھول گئے

محزونؔ تخلص عالم شاہ از مشائخ زادگان گڈھ یکتہ است و مصحفی کہ اورا از امروہہ دانستہ سہ ۳ ابیات ازوست۔

بے محابا چاک کرتا ہے گریبان کے تئیں کس کے آہنے سے چمن میں گل کو سودا ہو گیا
تم نہ فریاد کسی کی نہ فغان سنتے ہو اپنے مطلب ہی کی سنتے ہو جہاں سنتے ہو
اہل دنیا تو نہیں دیتے ہیں محزونؔ غم کی داد کوہ کن کو خواب شیریں سے جگاؤں نہ تو سہی



محوؔ تخلص حسین علی خان اکبر آبادی مخدمات انگریزی بسر می برد یک بیت اوراست ؎

سنگ پھینکے ہو میری قبر پہ گل کے بدلے گالیاں دی ہے پس مرگ بھی قل کے بدلے

محوؔ تخلص شیخ عظیم اللہ از اہل میرٹھ است ناچار این شعر ازوست۔

متاع دل گرانمایہ ہے اپنے پاس اے ہمدم یہ دولت اسکو بخشیں گے جسے ہم یار دیکھینگے

محبؔ تخلص شیخ ولی اللہ از مردم دہلی در لکھنو فوت کردہ با مرزا رفیع السودا علاقہ شاگردی داشتہ از وظیفہ خواران سرکار میرزا سلیمان شکوہ بہادر بودہ یک بیت اوراست ؎

خانۂ دل کہ نہ ہو عشق کا آئین جس میں ہے وہ قرآن کے نہیں سورۂ یاسین جس میں

محبتؔ تخلص نواب محبت خان فرزند ارجمند حافظ الملک نواب رحمت خان مرحوم کہ ایالت بریلی و متعلقات آن بر ایشان مسلم بود و فور شہرت از تفصیل مستغنی کردہ وی نیز چون پدر صاحب ورع و تقات است و خداوند فہم و فراست بہر دو لفظ حرف می زند صاحب گلشن ہند آور دہ کہ محبت در جمیع اصناف سخن گفتہ و اصلاح از مرزا جعفر علی حسرت گرفتہ در معاصرین خویش مشہور بودہ و بعد انتقال نواب حافظ رحمت خان در لکھنو آمدہ نواب آصف الدولہ مرحوم اعزاز و اکرام کردہ و بمشاہرۂ معقول معزز فرمودہ این دو اشعار افکارش اینست۔

جس کو تیری آنکھوں سے سروکار رہے گا — بالفرض جیا بھی تو وہ بیمار رہے گا
عاشقوں میں مجھے لکھا تو نے — آج چہرہ مرا بحال ہوا
قید ہوتے ہی ہوا دونوں جہاں سے آزاد — میں تو بندہ ہوں محبت کے گرفتاری کا
یہ بڑھا دیوانہ پن اپنا کہ ناصح دل ہوا — تھا مرا ہم درد لیکن مجھکو سمجھانے لگا
دشمن کی آنکھ میں بھی پہنچے نہ اے صبا دیکھ — میرا غبار کیجیو برباد اسطرح کا
منزل اول ہے ابھی عشق کی اے تاب و توان — چھوڑ جاتے ہو تم افسوس یہیں مجھ کو کیا
جاتے ہیں جلد پھینکے تو سن کو عمر کے ہم — کیا کیجئے محبت گھر دور ہے ہمارا
آپ کچھ غیروں کو چھپ چھپ کے رقم کرتے ہیں — یہ جو ہو جھوٹ تو ہم ہاتھ قلم کرتے ہیں
گالی کا انتظار تو حسد سے گذر چکا — منھ کو کہاں تلک تیرے دیکھا کرے کوئی
یا تھا فلک پر اسکا دماغ اب بھی خاک پر — دل کی عجب بلندی و پستی نظر پڑے

محنت تخلص مرزا حسین علی نژادش از جہاں آباد خودش در لکھنو و نشو و نمایافتہ و مشورت سخن با قلندر بخش جرات می کردہ این دوبیت اوراست ؎

احوال میرا دھیان سے سنتا تھا و لیکن — کچھ بات جو سمجھا تو کہا میں نہیں سنتا
اس بت نے جو غیروں پہ کیا لطف تو یارو — مجھ سے نہ کہو بہر خدا میں نہیں سنتا

محشر تخلص اکرام اللہ خان از بدایون است در انجا از مشاہیر بودہ ناچار یک شعر اوراست۔

ہمیں نظر نہیں آتا کہ جی بچے محشر — کوئی دن اور اگر درد انتظار رہے



محشر تخلص مرزا علی نقی کشمیری الاصل و منشاء وی لکھنو است بہر دوزبان فکر میکرد غرور شاعری داشتہ بعد قتل مرزا علی مہلت کہ تفصیل این اجمال تحت ترجمہ اوست۔ خوفاً از انجا فراری شدہ بہ دہلی رسیدہ باخواجہ میر درد پیوستہ از یشان فایدہ ہاے بسیار برد اشتہ بہ لکھنو رفتہ چون سالے چند بر این گذشت ورشۂ مقتول مذکور قاتل مسطور را بقصاص کشتند ناچار 2 دوبیت اوراست۔

دور میں اس چشم کے گردوں کو آسایش نہیں — کس گھڑی کس دم نئے فتنے کی فرمائش نہیں
جان منتظر ہے آنکھوں میں وقت رحیل ہے — جلدی پہنچ کہ تیری ہی آنے کی ڈھیل ہے

محسن تخلص میر محسن برادر زادۂ میر محمد تقی است ناچار یک شعر ازوست ؎

حسرف تیرے عقیق لب کا شوخ — زندہ کرتا ہے نام عیسیٰ کا

محترم تخلص خواجہ محترم علی خان از کلانیان عظیم آباد است سخن را بشاہ گھسیٹا متخلص بہ عشق گذرانیدہ این پنج ابیات اوراست۔

اے محترم اتنی اشک باری — کھل جائے یہ ابر برس کر
دوستوں نے مرے کہا ان سے — محترم کو کہو تو یہاں لائیں
لگے کہنے کہ شرط کرلو تم — ہم جو مجلس میں اس کو بلوائیں
رونہ دیوے کہ جس کے رونے سے — ساری محفل کے چھچھے جائیں
پیغام پھر جنون کے آنے لگے ہیں مجھ تک — شاید بہار کے دن نزدیک آن پہنچے

محکم تخلص از حالش آگاہی نشد این پنج اشعار اوراست۔

مجھے حیف ہے تیرا اے صنم کہوں جا کے آہ یہ کس سے بس — نہ ملا درس ، نہ ملا درس ، نہ ملادرس، نہ ملا درس
یوں پکار اٹھا ترے در پہ شب مجھے چور کہہ کے وہ بدلقب — ترا آج عکس ترا آج عکس ترا آج عکس
تیرے ہجر میں مجھے اے صنم یہاں پورے روتے دو ماہ کم — ہوے دو برس ہوے دو برس ہوے دو برس ہوے دو برس
لپ غم کے آنے اٹھا بھڑک خدا صنم یہ جگر مرا — نہ پیا چرس نہ پیا چرس نہ پیا چرس نہ پیا چرس

مجھے بر میں محکم کہربا ومیں جان کر جو لپٹ گیا
ہر خارو خس ہر خارو خس ہر خارو خس ہر خارو خس

محمود تخلص محمود خان برادر زادۂ اعظم الدولہ میر محمد خان سرور جو انیست خوش فکر و خوش گفتار۔ کم سخن و خوش لقا خوش گل و شیرین زبان۔ بہ پیرایۂ حلم و ادب آراستہ صاحب گلشن بے خار گفتہ کہ یکی از احباب فقیر است این بست اشعار از نتائج افکار اوست۔

گھر سے بے پردہ وہ رشک مہ روشن نکلا — نالۂ دل بھی میری جان کا دشمن نکلا
افسوس ہو احشر میں کیا بے گنہ کا — قاتل جو ہمیں سر بہ گریبان نظر آیا
ہیں اپنے تصور نے محالات کئے سہیل — پردے میں بھی مجھ کو رخِ جانان نظر آیا
مجھ کو جز مرگ عدو سے بھی ہوا رنج — وہ شوخ جو انگشت بدندان نظر آیا



دشمن کو میرے گور پہ لانا نہیں اچھا — مردے کو مسلمان کے جلانا نہیں اچھا
ہے زخم جگر ناوک قاتل کی نشانی — اے چارہ گرو اسکو مٹانا نہیں اچھا
بیداد گذشتہ کی کرے کیونکر شکایت — اسکو وہ مزہ یاد دلانا نہیں اچھا
تھا وصل میں یک ہجر میں دو ہیں مرے معشوق — کم موت کے جانب نہیں جاناں سے تعلق
نہ ڈرا نار جہنم سے عبث اے واعظ — ہے بجز ذکر عدو ہم کو جلانا مشکل
اس وعدہ فراموش نے آنے کو کہا تھا — دروازے ہی پر رہنے لگے آٹھ پہر ہم
جان کیا چیز ہے پر عشق میں تاثیر تو ہو — کوئی مر جائے اگر تو کوئی دلگیر تو ہو
وہ صیدھوں کے شوق اسیری ہے خود مجھے — صیاد بے دماغ کو رنج کیں تو ہو
ایسا ہی سبک زیست نے ہجراں میں کیا ہے — گر چاہے تواف سے کوئی بیمار اڑادے
اس ناتواں کو بام پہ پہنچا دے ہمنشین — شاید کے اس کے گھر کی طرف کی ہوا چلے
دیکھتا کون ہے محمود عدو کو بخوشی — جب نظر کرتے ہیں افلاک پہ لاچاری سے
اب تو حد تاثیر کی اے رشک خونین ہو چکی — سب طراز دامن دلدار رنگین ہو چکی
مرتکب ہم سوگنہ کہ ہو چکے پر ہے خموش — کیا وہ بھی خود بھی قدردان لذت دشنام ہے
لاغری سے میں نظر آتا نہیں — چارہ گر بیٹھے ہیں ماتم داری سے

مخلص تخلص میر باقر اکبر آبادی نسبت تلمذ بمصطفی خان یکرنگ داستہ درزمان دولت محمد شاہ لوائے سخن می افراشتہ یک بیت اوراست۔

میں تو بندہ ہوں تیرے جور و جفا کا لیکن — سخت دھڑکا ہے مجھے اس دل سودائی کا

مخلص تخلص مخلص علی خان ا. ایش سفید گردکان مرشد آباد است صاحب گلشن ہند.

در تذکرۂ خویش ذکر کردہ کہ مخلص علیخان مخلصؔ تخلص خواہر زادہ نواب نوازش محمد خان شہامت جنگ ساکن مرشد آباد جوان خندہ رو کشادہ پیشانی دایم خوشوقت و خوش زندگانی صاحب دیوان شاید در سن یکہزار و دو صد و ہفت ہجری مقدسہ در بنگالہ انتقال کرد ہشت ابیات اوراست۔

مخلصؔ خفت میں لیکر یہ مشت خاک اپنی — سجدے کو تیرے در پر یا بو ترابؑ آیا
مخلصؔ کیا دریافت یہ میں سنگ محک سے — جو عیب کسی کا کہے منھ اسکا ہو کالا
آخر یہ دل ہمارا کچھ داد کو نہ پہنچا — جز نالہ کوئی اس کے فریاد کو نہ پہنچا
جو ہیں زخ سے اپنے اسنے جو ذرہ نقاب الٹا — اسی دم حجاب کہا کر پھرے آفتاب الٹا
دل مست ہے سودہ زدہ تدبیر نازک — دیوانہ زبر دست اور زنجیر ہے نازک
محبت میں تیری جا کر پھنسا دل — در یغا ہاے دل واحسر تا دل
کیونکہ ہو ویگی زندگی اب آہ — دل کی نوبت تو جان پر آئی
کوئی اپنے اسیروں سے تغافل یہ بھی کرتا ہے — قفس میں مر گئے ہم یہ خبر صیاد کو پہنچی

مدحتؔ تخلص لکھنوی نام معلوم نگردید یکے از تلامذۂ مرزا جعفر علی حسرت است ناچار یک شعر ازوست۔

لے گئی ہجر تیری گور میں یار آخر کار — روز فرقت نے دکھائی شبِ تار آخر کار

مدہوشؔ تخلص نامش معلوم نشد از شاگردان میر سوز بودہ این بیت اوراست۔

مرا جس ناز سے تو نے لیا دل — خدا جانے ہے اسکو یا مرا دل

مذنبؔ تخلص شیخ آدم کتاب دراز قام ہفت قلم منتخب زمان ودر جلد نویسی نادر دوران کہ تا حال عمرش بہ نود سالہ رسیدہ زیادہ از لک بیت نوشتہ باشد و دیگر در فنون ہم لعل بے بہا این



دوازدہ ابیات ازوست۔

بتلاؤں کیا نمونہ میں ان چشم زار کا — نقشہ بعینہ ہے بس ابر بہار کا
شعلہ نہ بھڑکا آہ کا نکلا نہیں دھوان — جل کو لسے سارا کھ ہوا دلفگار کا
مجنون کے روبرو ہوا لیلےٰ کا انتقال — تھا یہ پتنگ اس کے ہو شمع مزار کا
شہر عدم کو پہنچا جو ملکِ وجود چھوڑ — کب اس کو ہے خیال کسی دوستدار کا
معصوم چہاردہ ہیں شفیع اور خدا کریم — مذنبؔ کو ذغدغہ نہیں روز شمار کا
مر گئے بعد کہاں کا رشتہ کدھر کا ناتا — غیر تنہائی کے ساتھ کہو کون آتا
آہ کا شعلہ بھڑک اتنا ہوا اپنا بلند — ابر میں پانی نہ ہوتا تو فلک جل جاتا
بوند آنسو کا جو آنکھوں سے گرا خاک اوپر — پھر وہ موتی کو کوئی ڈھونڈھے کہاں ہے پاتا
ڈال پر بیٹھی ہوئی کہتی تھی بلبل افسوس — آج جو گل ہے کھلا باغ میں کل مرجھاتا
خواہش رب پہ رضامند رہو مذنبؔ صابر — وہی ہو ویگا خدا حکم جو ہے فرماتا
موجود میں نہاں ہو معدوم میں عیان ہو — معلوم نہ ہوتا ہے کیا حال ہے کہاں ہو
بستے خیال میں ہو دستے نہ خواب میں ہو — بھولے نہیں ہو جاتے یاد آتے جانِ جان ہو

مرزاؔ تخلص آقا مرزا نام اصلش از مازندران ووی در لکھنو متولد شدہ پدرش محمد اسمٰعیل نام تجارت پیشہ بود از تلامذۂ میر تقی میر است دو شعر اوراست۔

بالیں سے جب وہ پھر گیا غش سے کھلی تب آنکھ — مجھ نارسا کے طالع خوابیدہ دیکھنا
ہنچائے تا نہ کوئی کہ یہ کس کی لاش ہے — سر تن سے لے گیا میرا قاتل تراش کے

مرزاؔ تخلص مشہور بمرزا ننھا اسمش حکیم فضل اللہ از سکنائی قصبہ پانی پت اشعار فارسی ہم میگفت در طب مہارتے شایان داشتہ ۳ اشعار از فکرت اوست۔

دل جو اپنا تھا سو ہی بیگانہ — اس زمانے میں کوئی یار نہیں
سخت مشکل میں ہے ہجر میں جینا — زندگی اپنی اختیار نہیں
خالی اس سے نہیں ہے کعبہ و دیر — کون سے سنگ میں شرار نہیں

مرزا تخلص ہدایت اللہ دہلوی از مہرۂ فن موسیقی است یک بیت اوراست۔

دل ہاتھ سے اشک آنکھ سے جی تن سے چلا جائے — اے وائے مصیبت کوئی کس کس کو سنبھالے

مرزا تخلص خواہرزادۂ حکیم مرزا محمد خان وتلمیذ رستم بیگ شاگراست ناچار یک یک بیت ازوست۔

اگر زلف دراز یار میں ہے صد گرہ مرزا — دلِ صد چاک یہ ہم بھی نشان شانہ رکھتے ہیں

مروت تخلص صغیر علی نام فرزند حکیم کبیر علی از مردم سنبھل از شاگردان قلندر بخش جرأت در گلشن بے خار آوردہ کہ او مثنوی بہ تتبع میر حسن گفتہ و مناط دعوی وی درین فن ہمان بودہ این بیت ازو خوش کردہ شد۔

غیروں پہ دیکھ دیکھ کرم اس نگار کا — چین بر جبین ہے نقش ہماری مزار کا

نظم پرداز نیکو شناس غلام محمد بہاؤالدین حسین ساکن مدراس کشیر الناس مینو اساس المتخلص مروت شاگرد ارشد بہجت ذکرش در حرف الباگذشت فرزند ارجمند غلام محمد خان ابن حاجی غلام قطب الدین خان خواہرزادۂ جدم نواب والاجاہ اول جنت مکان این شانزدہ ۱۶ لیات مسطور۔

نکلا پہلو سے تو آنکھوں میں مقر پیدا کیا — دل نے کیا برسات میں رہنے کو گھر پیدا کیا



روتے روتے ہے یہ عالم دیدۂ بے نور کا — جا چکی بینائی لیکن گھر بنا ناسور کا
ضعف سے تنگ اسقدر ہے حال اس رنجور کا — وسعتِ کونین گھر آتا نظر ہے مسور کا
برباد کیجئے نہ مروت بہار عمر — چاروں طرف بگلشن ہستی خزان ہے اب
آئیو اے لخت دل مژگان چشم زار پر — پھولتے گلزار میں ہیں پھول نوکِ خار پر
ناتوانی سنگ مرقد ہے دل بیمار پر — تودہ ہائے خاک ہے بینائی چشم زار پر
مذہب الفت مروت سب ہے دنیا میں خوب — کچھ مزاباقی نہیں اب کفر میں اسلام میں
پھنسئے مت اے عاشق رو کاکلوں کے دام میں — قید ہوتے ہیں مسافر دن کو ملک شام میں
خاکیوں کو خاک زیر چرخ ہو آرام و چین — چرخ مہر و ماہ کھاتے ہیں فلک کے دام میں
قصور کے تصدق ہوں عبث کچھ عیش و عشرت میں — مزے یاد آرہے ہیں وصل کے کیا خوب فرقت میں
کہیں تجھ بن نہ ہم اے ماہ لقا جاتے ہیں — برق کی شکل جہاں میں کبھو آجاتے ہیں
یہ وہ ہستی ہے کہ جب آئے تو روتے آئے — اور جو جاتے ہیں تو ہنستے کو رلا جاتے ہیں
عمر برباد کر اے گل تیرے ہاتھوں ہے ہاتھ — مشت خاک اپنی ہوا پر نہ اڑا جاتے ہیں
گلشن دہر میں گل کھاویں مروت کب تک — باغ فردوس کی اب کھانے ہوا جاتے ہیں
داغ دل بس ہمیں تازیست چمن کا ہے کو — چادر گل تن عریان ہے چمن کا ہے کو
رنج کیا کیا نہ میں اس عشق میں دیکھا دیکھو — سینہ دیکھو مرا دل دیکھو کلیجہ دیکھو

مرہون تخلص مرزا علی رضا وطن اصلی وی مشہد مقدس وخودش در شاہ جہاں آباد متولد شدہ بحیدر آباد رفتہ از تلامذۂ میر ممنون این بست ۲۶ و شش اشعار اوراست۔

ہر آرزوی دل کو حرماں نے خون کیا ہے — گردن پہ یاس کے ہے خوں اپنی آرزو کا
جز یک نگاہ خشم کبھی اس کی خو نہیں — قسمت تو دیکھ یہ بھی کبھو ہے کبھو نہیں

# مستزاد

ہے مطرب و ساقی و می و ساغر و مینا اور بزم مسرت
زندان ہے یہ تجھ بن ہمیں اے انجمن آرا، یہ محفل عشرت
معلوم نہیں کون گیا پاس سے اپنے، ایک بار جو یہاں سے
دل مسکن غم اور یہ سینہ ہوا اپنا، معمورۂ حسرت
مدت سے فراموش ہے کچھ درد کی لذت، یہاں زخم جگر کو
ٹک حکم تبسم کا نمک ریز کو فرما، اے کان ملاحت
کر قتل دلی مصلحتاً پوچھوں ہوں تجھ سے، بتلا رکھ انھی سے
پوچھے کہ تیرا کون بتا قاتل تو کہوں کیا، فردائے قیامت
محفل میں تھی اس شعلے کو اغیار سے گرمی، اور شمع صفت ہم
تا صبح پھنکی اشک کے آتش سے سراپا، جل جائے یہ غیرت
جاتی ہے چھپی نور بنا گوش میں اسکے، یہ عقدہ لالی
کم جس سے صفاے سحری میں ہو یہ سرما، اللہ رے صباحت
یاس والم وحسرت وداغ وغم حرمان، سب دل میں بھرے ہیں
ہم بے سر وساماں بھی رکھتے ہیں مہیا سامان محبت
کس طرح سے ہو باز شب وصل میں یارب، یہ خاطر دلگیر
ہے دل میں گرہ اپنے یہاں لاک تمنا، اور تھوڑی سی فرصت
یاران سفر منزل مقصود کو پہنچے، اور ضعف سے مرہونؔ
تنہا رہے اس دشت میں جون آبلہ فرسا، اے دائے مصیبت



# مخمس

ہوائے ابر ظالم سخت اب تجھ بن ستاتی ہے
روندھا آتا ہے جی جوں جوں گھٹا یہ اڈی آتی ہے
لگے ہے سن سنانے جی ہوا جب سن سناتی ہے
نہ تنہارات کالی ہجر کی ہم کو ڈراتی ہے
کڑک کر کوند کر بجلی جد ہی آنکھیں دکھاتی ہے

قیامت ہے گھٹا کا جھوم مستی وار آنا
جھکوروں سے پون کی وہ نہالوں کا جھکے جانا
یہ سبزی لہلہی صحرا کی اور موروں کا چلانا
پپیہے کی صدائیں سن کے تجھ بن جی کا گھبرانا
ڈراتی تسپہ پیرن کو کلا کوکیں سناتی ہے
یہ دن برسات کے تجھ بن ہمیں اب یوں گذرتے ہیں
ہوائیں چلتی ہیں ٹھنڈی تو آہیں سرد بھرتے ہیں
گرجنے کی صدا سنتے ہیں جس دم نالہ کرتے ہیں
برستا دیکھتے ہیں مینھ کو جوں جوں رو رو مرتے ہیں
چمک بجلی ہر یک پل بیکلی دل کی بڑھاتی ہے

ہمیں ساقی ہوا برسات کی تجھ بن ہے ترساتی
سہانی اس ہوا میں میکشی ہر گز نہیں بھاتی
ترا بوسے کا جھکنا یاد کر ہے چشم بھر آتے
طرح شیشے کے روتے روتے بس ہچکی ہی لگ جاتی
لبِ ساغر پہ یہاں جس دم صراحی منھ جھکاتی ہے
چمن میں بلبلوں کو گل سے ہے اس فصل میں صحبت
میسر وصل سے شمشاد کے قمری کو ہے عشرت
پتنگوں کو وصل شمع سے محفل میں ہے راحت
نصیب اپنے نہیں مرہون دلی اس شوخ سے وصلت
یہ رت ہے عیش کی بے یار پر کیا مفت جاتی ہے

مزمل تخلص مزمل شاہ از قدماست یک بیت اوراست۔

میں نہ کہتا تھا مزمل دے نہ دل نقد ایسا رائیگاں کھونا نہ تھا

مسرور تخلص شیخ پیر بخش از سکنائے قصبۂ کاکوری کہ پنج فرسخ از لکھنو است اصلاح نظم از مصحفی گرفتہ ہم رکاب مرزا اسلیمان شکوہ بہادر گذارش در جہاں آباد فتادہ بود ۳ اشعار ازوست۔

کہتی ہے یہ بروقت مجھے آبلہ پائی آگے کو قدم دشت معیلان سے نہ اُٹھے
کرتے ہیں وہ غرفے سے اشارے کئی دن سے ہیں پیچھے پڑے دل کے ہمارے کئی دن سے
کر پھر سیر لیلےٰ محمل سوار جائے مجنوں بھی ساتھ جوں شتر بے مہار جائے



مسرور تخلص مرزا سنکی بیگ از مردم جہاں آباد و تلمیذ حکیم میر عزت اللہ خان عشق است ناچار این شعر ازوست۔

سدا اُس چشم میگوں سے یہ دل مستانہ رکھتے ہیں
صراحی کی ہوس نہ خواہش پیمانہ رکھتے ہیں

مسرور تخلص شرف الدین احمد پسر غلام محی الدین عشق و مبتلا از مردم میرٹھ است اشعار ریختہ بعبارت ریختہ گرد آوردہ است این بیت اوراست۔

ہے غیر کے گھر وہ شمع محفل دن رات مجھے یہی جلن ہے

مسکین تخلص سید عبدالواحد خان جوانے حریف و ظریف ہنگام ورود دہلی سخن کہ میگفت بر مومن خان میخواند اکنوں بہ ان دور بسری برد یک بیت اوراست۔

کیوں نہ اٹھنا بیٹھنا مشکل ہو اس رنجور کا
جس کو اب تک رفتگی بھی ایک سفر ہے دور کا

مسرت تخلص شیخ وزیر علی استفادۂ شعر از حکیم عزت اللہ عشق کردہ از باشندگان دہلی است از چند سال بہ حیدر آباد رفتہ بجرگۂ شعرای چند ولعل بود دو شعر ہذا اوراست۔

اگر چہ روتے روتے کھوئیں آنکھیں نہ رکھا دیدۂ خونبار پر ہاتھ

مستمند تخلص یار علی خان از رہالی عظیم آباد و تلامذۂ مرزا مجھو فدوی است این بیت ازوست۔

نزع تک وصل کی ہے یار اُمید ہے مثل ایک دم ہزار اُمید

مسیح تخلص براتی نام سوداگر یست کشمیری الاصل ناچار ازو شعر هذا است۔

شاید کہ موے زلف کاشانہ تھا دستِ غیر
بے ڈھب رہا تھا جی کو میرے پیچ و تاب رات

مشیر تخلص قطب الدین از مردم جہاں آباد یست گویند کہ از ارشد تلامذۂ شاہ نصیر است چنانچہ صاحب گلشن بے خار نوشتہ کہ فقیر اورا در محفل مشاعرہ دیدہ و کلامش ہم در انجا شنیدہ پیرو طریقۂ استاد است این بیت یکی از افکارات اواست۔

یہ غل ہے کہ وحشی نے ترے پاؤں نکالے
پھر دشتِ جنون سلسلہ جنبان نہ ہوا ہو

مشتاق تخلص عبداللہ خان المخاطب بہ مشتاق علی خان ایرانی نژاد است بزمرۂ شعرائے پائے تخت جہاں آباد بشمار می آمد پارۂ جفر و رمل میدانست ہوس کیمیا سازی بسیار داشت اکثر خطوط را چون زیبا و دلاویزی نگاشت ہفت ابیات او راست۔

کی یک نگاہِ یاس جو مژگانِ یار پر
سو برچھیاں چلیں دلِ امیدوار پر
جی بند ہو نکل بھی گیا تو کھلی رہی ہے
اے چشمِ آفرین ہے تیرے انتظار پر
مٹے ہے دم بدم یہاں وصل کے تدبیر کا نقشہ
دکھائی دے ہے بے ڈھب کچھ ہمیں تقدیر کا نقشہ
دم مرگ مت پوچھ لکنت کا باعث
کبھی اشک بھر آئی تو پی گئے ہم
کہ مد نظر آبرو تھی کسی کے



زباں پر گرہ گفتگو تھی کسی کے
رنگ کیوں سبز ہے چہرے کا تیرے اے مشتاق
کبھی اشک بھر آئے تو پی گئے ہم
کہ مد نظر آبرو تھی کسی کی
کس نے دیکھا ہے تجھے زہر بھری آنکھوں سے
اپنی ہم سدگی پہ پھولتے تھے
پھر جو دیکھا وہاں خدائی ہے

مشتاق تخلص حافظ تاج الدین ساکن میرٹھ چشمش از حلیہ نور عوراست ناچار یک شعر ازوست۔

کوہ کن و پرویز کو قصہ اپنا اپنا سنانے دو ہے یہ وہی افسانۂ شیرین ایک پری دیوانے دو

مشتاق تخلص محمد واصل نام شاعر یست از بداؤں ناچار یک بیت اوراست۔

ہمارے کام پہ ہر چند آسمان پھرے تجھے قسم ہے جو تو اس طرف کو آن پھرے

مشہور تخلص از کایتاں بریلی است باوجودیکہ متخلص بمشور است حالش مشہور نیست ناچار این شعر ازوست۔

خوشی سے کیوں نہ اے مشہور اب بغلیں بجائیں ہم
ملے گا یار ہم سے آج پھر بازو پھڑکتے ہیں

مشہور تخلص مرزا محسن دیگر حالش معلوم نشد این ہجدہ ابیات ازوست۔

ہو کیوں نہ مرے دل کو اذیت کئی دن سے پھر غیر پہ کرتا ہے وہ شفقت کئی دن سے
اغیار سے وہاں اسکو ہے خلوت کئی دن سے یہاں نوع دیگر ہے میری حالت کئی دن سے
دیوانہ ہوں کس آہوے وحشی کا جو مجھ کو بن بن لئے پھرتی ہے یہ وحشت کئی دن سے
صد حیف کے شیرین نے کبھی یہ نہ کہا کیوں تر خون میں ہے فرہاد کی صورت کئی دن سے

کوئی آفت جان یہاں سے ہے گذرا کہ ہے برپا
جنبش میں جو ہے لیلےٰ کی تربت کئی دن سے

مرنے کی خبر اس کی نہیں قیس کو شاید
تربت پہ میرے شور قیامت کئی دن سے

افسوس نہیں آج میاں منتظر اس جا
یہ غم ہے میرا باعث رقت کئی دن سے

ہوتے تو پہنچے وہ میرے داد سخن کو
رورو کے یہی آتی ہے حسرت کئی دن سے

طرح غزل اب جی میں ہے مشہورؔ لکھوں میں
جو لانی پہ ہے اپنی طبعیت کئی دن سے

افراط الم نے کیا خونِ دل کئی دن سے
یہ تازہ مصیبت ہوئی نازل کیا کئی دن سے

جلدی لے خبر اسکی کہ بیمار کا تیرے
تشخیص ہوا ہے مرضِ سل کئی دن سے

لو شیخ مبارک ہو کہ اب نام تمہارا
اس شوخ نے رکھا ہے حواصل کئی دن سے

مشہورؔ پر ازدرد غزل اور بھی یک لکھ
ہے طبع تری شعر پہ مایل کئی دن سے

ہوں گرم فغاں کیونکہ عنادل کئی دن سے
بوتک نہیں گل کی انہیں حاصل کئی دن سے

اے قیس چلا بخد سے کیا ناقہ لیلےٰ
آتی ہے جو آواز جلا جل کئے دن سے

کس قاتل بیدرد کا کوچہ ہے کہ یہاں سے
یک روز نیا نکلی ہے گھایل کئی دن سے

پیر اپنے اب عرس میں کیا جاکے کرو گے
اے شیخ جی وہاں ہو بھی چکا قل کئی دن سے

اب آب و ہوا یہاں کی ہمیں راس نہیں ہے
مشہورؔ ہے جی میں چلیں کابل کئی دن سے

مصدرؔ تخلص ماشاء اللہ خان پدر میر انشا اللہ خان است عاداتست کہ پسر بنام پدر شناختہ می شود وگاہے بخلاف نیز کذا ہذا وے در طلب جایگاہی شائستہ دارد گاہے بسخن ہم تو جہ می آرد این شعر از فکرت اوست۔

کافر ہو سبا تیرے کرے چاہ کسو کی
صورت دکھاوے مجھے اللہ کسو کی

مصحفیؔ تخلص غلام ہمدانی اصلش از قصبۂ امروہہ من مضافات مراد آباد در عنفوان جوانی بجہاں آباد آمدہ طرح اقامت افگندہ آخر ہا بہ لکھنور فتہ و تا نفس آخر ہمدراں



جا قرار گرفتہ وفاتش در سن یک ہزار و دو صد و چہل ہجری مقدسہ رو دادہ عمر بسیار یافتہ ابتدائیش انتہای دورۂ سودا بود باجرأت و انشأ مشاعرات و مطارحات کردہ شش دیوان ریختہ و دو تذکرہ تمام کردہ و دیوانی در فارسی و تذکرہ ہم دارد مشق او از این جا توان دریافت در بلاد مشرق بسیار مسلم و باستادی علم بود و اکثر سخنوران آن بلندان اکتساب فن از و کردہ اند ہر چند بتقاضائے شیوۂ بسیار گویاں اکثر کلامش پر کم مایہ واز لطایف خالیست اما گزیدۂ اشعار او در نہایت رجحت والا و مرتبت عالی است چنانچہ این ابیات کہ از دو انین وی گزیدہ آمد پیداست این پنجاہ و شش ابیات او راست۔

## ردیف "الف" شانزدہ ابیات

میں اسی رشک سے مرتا ہوں کہ کل غیر نے ہائے
ہاتھ ہنگام قسم کیوں ترے سر پہ رکھا

درد و غم کو بھی ہے نصیبہ شرط
یہ بھی قسمت سوا نہیں ملتا

تھا اگر روز قیامت تو بھی ہم شادان رہے
وہ جو ایک دن اس کے ملنے کا مقرر ہو گیا

اے مصحفیؔ ہتوں میں ہوتی ہے یہ کرامت
دل پھر گیا نہ تیرا آخر خدا سے دیکھا

نامے کے میرے پرزے لاڈالے میرے آگے
نامے کا میرے قاصد یہ کیا جواب لایا

مرض عشق سے گر اب کے سنبھل جاؤنگا
تو میں دو چار برس کو کہیں ٹل جاؤں گا

مجھ کو قاصد کے تغافل نے تو مارا ہے ہے
روز ظالم یہی کہتا ہے کہ کل جاؤں گا

مصحفیؔ ہم تو یہ سمجھے تھے کہ ہو گا کوئی زخم
تیرے دل میں تو بہت کام رفو کا نکلا

مت میرے رنگ زرد کا چرچا کرو کہ یہاں
رنگ یکساں ہمیشہ کسی کا نہیں رہا

صیاد کی گلی ہے وہ کوچہ کیا کہ جس میں
سر خاک پر پڑا ہے اکثر کبوتروں کا

فصل گل فصل خزاں دو نو گئیں اے صیاد
مرغ دل کون سے موسم میں رہا ہو دیگا

بھیج دیتا ہے خیال اپنے عوض اپنے مدام
کس قدر یار کو غم ہے میری تنہائی کا

چین سے کیونکر میں سوؤں کہ شب ہجر مجھے
یاد آتا ہے وہ راتوں کا جگانا

تیرا کیا یار کے دامن کی خبر پوچھو ہو ہم سے
یہاں ہاتھ سے اپنا ہی گریباں گیا تھا

تلوار کو کھینچ ہنس پڑے واہ
ہے مصحفی کشتہ اس ادا کا

ترے کو اس بہانے مجھے دن کو رات کرنا
کبھی اس سے بات کرنا کبھی اس سے بات کرنا

## ردیف التا یک بیت

آنے کی تیری کہہ کے مرا دل تو خوش کیا
قاصد نے گو کہ اپنی طرف سے بنائی بات

## ردیف "ح" یک بیت

پیری میں اور بھی ہوے غافل ہزار حیف
بے اختیار لے گئی ہم کو یہ خواب صبح

## ردیف "ل" ایک بیت

تھا آپ کا یہ دیوان مرا نامۂ اعمال
کاہے کو فرشتوں نے لکھا نامۂ اعمال

## ردیف "م" سہ ۳ بیت

چھیڑ مت ہر دم نہ آئینہ دیکھا
اپنی صورت سے خفا بیٹھے ہیں ہم

آنے دو اسے جسکے لئے چاک کیا ہے
ناصح سے گریبان کو سلانے کے نہیں ہم

ہر دم کو سمجھتے ہیں دم بازی سیں ہم
غافل تو ہوا ہم سے ذرہ بھی تو نہیں ہم

## ردیف "ن" نہ بیت

پھٹ چکا جب سے گریباں تب سے
ہاتھ پر ہاتھ دھرے بیٹھے ہیں

وہی دست اور وہی گریباں چاک
جب تلک ہاتھ پاؤں چلتے ہیں

تو آئے نہ آئے ولے ہم تو ہر شب
تیری راہ تا صبح دم دیکھتے ہیں



ہائے وہ دل کہ جسے میں نے بغل میں پالا
اب اسے یوں ہدف ناوک مژگاں دیکھوں

فلک گر ہنساتا ہے مجھ پر کسی کو
میں ہنس کر فلک کی طرف دیکھتا ہوں

کھانے نہیں دیتے ہیں مجھے خون جگر بھی
نالے تو میرے حلق کے دربان ہوئے ہیں

وہ سنے یا نہ سنے اس کو ہم اپنا احوال
پس دیوار کھڑے ہو کے سنا جاتے ہیں

چوکھٹ پہ جن کے میں نے رو رو کے رات کاٹی
سنتا ہوں صبح تھا وہ مہماں کسی کے گھر میں

کوچے سے نکل کر ترے میں نالہ کروں گا
معلوم ہوا اب مجھے تاثیر نہیں یہاں

## ردیف "و" دو بیت

میں ہوں وہ تلخ کام کہ روز وصال بھی
آئے جو لب پہ خندہ میرے زہر قند ہو

اپنا بھی جی سے جانا اب ہو چکا مسلم
ہم رہ سکیں ہیں کوئی جب تم چلے سفر کو

## ردیف "ہ" یک شعر

تھی شب وصل کھل گئی جو ہیں آنکھ
رنگ فق ہو گیا سحر کو دیکھ

## ردیف "ے" بست و دو بیت

کنج قفس میں ہم تو رہے مصحفی اسیر
فصل بہار باغ میں دھو میں مچا گئیں

ہم نذر تیغ یار کریں اس کو مصحفی
گر یہ کے ہاتھ سے جو بدن میں لہو رہے

جور فلک سے ہم نہ کبھی سر اٹھا سکے
جوں شمع زیر تیغ یہاں عمر کٹ گئی

مصحفی یار ہیں اس وقت کے سب مردہ پسند
بد نہ تھا ہم بھی تخلص جو مزاری کرتے

نہ کہیں صبح ہی ہوتی نہ تو خواب آتا ہے
رات آتی ہے تو ایک مجھ پہ عذاب آتا ہے

میں تیرے واسطے سر پٹکوں ہوں دیواروں سے — چین کس طرح تجھے خانہ خراب آتا ہے
او دامن کو اٹھا کے جانے والے — ٹک ہمکو بھی خاک سے اٹھالے
آتا ہے جی میں رو کے ڈبودوں اسے بھی سب — یہ تھوڑی سی جو پانی کے باہر زمین ہے
ازبس دو چند شوق رہا مجھ کو نامہ بر — آیا جو وہاں سے ایک تو پھر یہاں سے دو گئے
ہائے کعبے سے پھرا اب تک ہر گز نہ مصحفی — اسکو وہاں کیا جانے کس بت سے محبت ہو گئی
تو آکے بیٹھے دم نزع جس کی بالیں پر — وہ مر بھی جائے تو آنکھیں کبھی نہ بند کرے
تری تصویر کولے کر شیرین — اپنی چھاتی سے لگا رکھتی ہے
دل کے دھڑکوں کا یہ عالم ہے کہ بے منت دست — پرزے ہو ہو کے گریبان اڑا جاتا ہے
یہ شب ہجر میں اٹھ اٹھ کے قلق کے مارے — دل کو دیتا ہوں تسلی کہ سحر ہوتی ہے
وعدۂ قتل سے رکھتا ہوں دل اپنے کو میں شاد — کہ اسی وعدے میں یک وعدۂ دیدار بھی ہے
پیری میں بھی ہم الفت طفلاں سے نہ چھوٹے — لکھ پڑھ بھی چکے قید دلبستاں سے نہ چھوٹے
وہ جی میں یہ نازاں کے مرا رعب تو دیکھو — میں خوش کہ خیال بھی مجھ دور کسے ہے
صبح کی شام ہوئی شام کی پھر رات ہوئی — یہی وعدے میں تو کب اس سے ملاقات ہوئی
مجھ کو پامال کر گیا ہے ابھی — یہ جو دامن اٹھائے جاتا ہے
اس کو صحبت کا گر دماغ نہیں — طبع اپنی بھی کچھ علیل سی ہے
ہرگز دراس کا وا نہوا ہم سے سینکڑوں — سر کو ٹپک ٹپک پس دیوار مرگئے
غم کھاتا ہوں جتنا میری نیت نہیں بھرتی — کیا غم ہے مزے کا کہ طبیعت نہیں بھرتی

مضمون تخلص یکے از عصران میر و مرزا است دیگر حالش معلوم



نشد یک بیت اور است۔

"جی سے اس بن کون ہے خوش واہ یہ ہو وہ نہ ہو — کس کو خواہش ہے معاذاللہ یہ ہو وہ نہ ہو

مضمون تخلص شیخ شرف الدین از اولاد شیخ فرید شکر گنج نور اللہ مضجعہ از مردم قصبہ جاج مہو کہ از متعلقات اکبر آباد است نوبتی دارد جہاں آباد شدہ بود از تلامذۂ خان آرزو است فکرتش مقصور بر ایہام است کہ شیوۂ اہل زمانش بودہ در دلی انتقال شد دو شعر ازوست۔

ہم نے کیا کیا نہ ترے عشق میں محبوب کیا — صبر ایوبؑ کیا، گریۂ یعقوب کیا
ہمارا اشک قاصد کی طرح ہرگز نہیں تھمتا — دلِ بیتاب کا شاید لئے مکتوب جاتا ہے

مضطر تخلص کنور سین از سکنائے لکھنو است از عرض دوازدہ سال بہ علاقۂ تحصیلداری ڈبائے کہ از متعلقات بلند شہر است بسر اوقات میازد صاحب گلشن بے خار نوشتہ کہ بارہا از من ملاقی شدہ است شوق شعرش از اندازہ افزوں تر و ہفم انکسار فراواں دارد قصیدہ در واقع کربلا نوشتہ دو سہ ۳ بیت ازان بر من خواندہ بود معلوم می شد کہ مضامین معقول یافتہ باشد و خود را از تلامذۂ مصحفی می کرد این ۳ سہ اشعار از نتائج اف کار اوست۔

خلل انداز وفا کونسا غماز ہوا — کہ جواب خط مضطر قلم انداز ہوا
سوزِ جگر کو دیدۂ پر نم کو دیکھئے — ان آفتوں کو دیکھئے اور ہم کو دیکھئے

ابھی سے بیقراری ہے تو ہم نے دل مضطر مقرر رات کاٹی

مضطر تخلص اسمش مرزا سنگیں شخصے ذہن وخوش اختلاط تعارف باصاحب گلشن بے خار دارد این دو شعر ازوست۔

کیا کیا دستِ جنون یہ تیری بے جانی نے میں تو خوش تھا کہ کفن میں بھی گریبان ہوگا

تھا خود وہ تڑپنے سے خجالت زدہ ہم تو مضطر کے کبھی خون کا دعویٰ نہ کرینگے

مضطرب تخلص درگا پرشاد از کائتیان لکھنو واست از تلامذہ محمد عیسیٰ تنہا ایک شعر اوراست۔

ترے وعدے پہ اب ہے دم شماری بہت اختر شماری کر چکے ہم

مضطرب تخلص محمد حاجی فرزند قاضی رحمت اللہ خان کہ قاضی القضات دہلی بود از تلامذۂ ممنون است بالفعل سرے بنظم ندارد بعد وفات پدرش خدمت قضا بوی تعلق گرفتہ مردے مہذب و مادب ایک شعر اوراست۔

کٹتی کسی طرح سے نہیں یہ شب فراق شاید کہ گردش آج تجھے آسمان نہیں

مظہر تخلص اسم شریفش مرزا جان جان علوی نسب بزرگان ایشان از ارباب مناصب بودہ اند پدر بزرگوار ایشان بعلتی از عالم گیر بادشاہ آزردہ ترک منصب گفتہ مرزا در اکبر آباد نشو و نما یافتہ عاقبت میانہ جہاں آباد طرح سکونت



انداختہ کسب باطن از خدمت سید نوربد اونی نقشبندی فرمودہ بسبب پاکیزگی گوہر و حسن فطرت قطعاً بر خازف دینار و نکردہ از ریعان شباب طالب شیخ و تہذیب نفس مایل و بریاضت مصروف ماندہ شاہ غلام علی کہ از مشاہیر شیوخ دہلی است از مریدان اوست وبا ہمہ فضایل ہمہ تن ورد مجسم دل نرم و ہنگامۂ عاشقی گرم داشت شورش در سر و بر عناجو انان نظرش بود اگر لختے بشرح نفاست و نزاکت طبعش پردازد دفتر باید نوشت و وفور شہرت ازان معذور داشتہ سخن کوتاہ فکر سخن فارسی بسیار می کردہ بغایت پسندیدہ مطلوب و مقبول دارد دیوانے مختصر فراہم آوردہ بیاضی جمع کردہ است خریطۂ جواہر نام بر تماشایش ہید است کہ سلیقۂ انتخاب ہم شایستہ بشیوۂ دیگر ارباب تذکرہ کہ در رطب ویابس تفرقہ و تمیز نمیکنند نمیماند وقتے ابیات ریختہ ہم میگفتہ در ماہ محرم ۱۱۹۲ ہجری بعضے از تعصب کیشان بیباک و بیدردان سفاک شہیدش کردند واو خونش بقاتل نبخشید میر قمر الدین منت عاشق حمید امات شہید اتاریخ وفاتش یافتہ و مرزا علی لطف در تذکرۂ خویش چنین گفتہ کہ مرزا مذکور در نظم و در نثر ریختہ نہایت خوش بیان و نادر زمان بود کہ اصل وطنش اکبر آباد و نشو و نمایش بشاہ جہاں آباد است و فقیہ صاحب درد مند تخلص و میر عبد الحی تاباں تخلص از شاگردان رشیدش است میگویند کہ ہفتم روز عاشورہ بر لب بام خویش نشستہ بودند کہ ناگاہ یکی از سرداران رہیلہ برائے ملاقاتش آمد ایشان از برائے او پائیں آمدہ باہم نشستہ بودند کہ ناگاہ بہ

زبر بام شان گزر علمہا شدہ سردار رہیلۂ مذکور استادہ شدہ سینہ زنی کردو موافق عادت بسلام شدہ مرزای مذکور ہمچنان کہ نشستہ بودند بلکہ متبسم شدہ فرمودند در مقدمہ کہ یک ہزار ودو صد سال شدہ آنرا در ہر سال تازہ کردن بدعت است وبہ ہیزم ہا اسلام و تسلیم کردن نہایت خفت عقل مردم کہ ہمراہ علم بودند این گفتگو شنیدند وذکر تعصب مرزاء مذکور در ہر عاشورہ و محفل عزادو ۳ سہ شب جاری بود آخر شب شہادت کہ عبارت از شب دہم عاشورہ است شخصی بر در شان آمدہ واوشانرا طلبید چونکہ اوشان بیرون آمدند بے گفت وشنید پنجہ باوشان زدہ راہ خود گرفت کہ سن مبارک شان ہم قریب صد سال بود وایشان ازاں صدمہ زخم کاری خوردند لیکن با استقلال طبعیت خویش باز خود را بر بالا خانہ رسانیدند رسن بجہز ازویک صد ونود وچہار ۱۱۹۴ھ ہجری مقدسہ ازین صدمہ روح پاکش از قالب عنصری جدا شدہ بہ روضہ رضوان مقیم گشت ومرزا رفیع السودا نیز تاریخ وفاتش فرمودہ۔

## تاریخ وفات

مظہر کو کیا قتل جو یک مرتبہ شوم — اور اسکی ہوئی خبر شہادت کی عموم
تاریخ وفات اس کی کہی از روی درد — سودا نے کہ ہائے جان جاناں مظلوم

واین سہ ۳ اشعار از خیالات اوست۔

لوگ کہتے ہیں ہوا مظہر یکس افسوس — کیا ہوا اس کو وہ اتنا بھی تو بیمار نہ تھا



ہم نے کی ہے توبہ اور دھومیں مچاتی ہے بہار — ہائے بس چلتا نہیں اور مفت جاتی ہے بہار
خدا کے واسطے اس کو نہ ٹوکو — یہی یک شہر میں قاتل رہا ہے

مظفر تخلص سید مظفر علی خان خلف سید قلندر علیخان بہادر از تلامذہ ممنون یک بیت اوراست۔

تجھ کو ہی پوچھتا تھا کل نزع میں مظفر — آیا بہت ہی رونا ہم کو جو تو نہ آنا

معقول تخلص حالش واضح نگشت این شعر از فکرت اوست۔

رقیبوں پر غضب ڈر ہم گئے ہیں — ہوا زخمی کوئی مرہم کر گئے ہیں

معنی تخلص محمد امین از سکنائے جوانب مشرق است وفاتش میانہ کول اتفاق افتادہ ناچار یک بیت ازوست۔

سرمہ منظور نظر ٹھہرا ہے چشم یار کو — نیلا گنڈا ہی نہ پایا مردم بیمار کو

معین تخلص معین الدین خان از تلامذۂ مرزا رفیع السودا در الہ آباد بسر می برد ناچار یک شعر ازوست۔

ہوں میں وہ دیوانہ کہ بہار آنے سے پہلے — زنجیر میں رکھتے معین مجھ کو جکڑ کر

معروف تخلص الہی بخش خان نام برادر کوچک فخر الدولہ نواب احمد بخش خان بہادر فرزند کہیں مرزا عارف خان برادر شرف الدولہ قاسم خان کہ از

اعاظم امرای عہد ذوالفقار الدولہ نواب مخف خان بہادر بودہ غفر اللہ لہم اجمعین بفیض صحبت درویشاں محلقہ ایشان در آمدہ ترک دنیا گفتہ بافن شعر الفتے پیش از پیش داشت در سن یکہزار و دو صد و چہل و دو از ہجرت خیر البشر صلواۃ اللہ و سلامہ الاکبر این جہاں گذراں راگذاشت صاحب دو دیوانست اکثر خیالات رنگین مضامین دلنشین دارد این سی ۳۳ و سہ اشعار ذیل از دیوان اول اوالتفات یافت۔

اور تو باتیں بری چھٹ گئیں سب جیتے جی
آنکھ منہ ہی پر چھٹا ایک مگر دیکھنا

تھا شب وعدہ یہ احوال ہر ایک کھٹکے پر
چونک پڑتا تھا کہ اب کے تو مقرر آیا

چشم تر سے گرچہ آمژ گاں یہ ہانی پھر گیا
اسپہ تھی تو نوح کے طوفان پہ پانی پھر گیا

کہتا ہے جب وہ ہنسکر ہے گر یہ اختیاری
آتا ہے اور مجھ کو بے اختیار رونا

سینۂ پرداغ کے دولت لئے جائینگے ساتھ
مثل قاروں کچھ نہیں جائینگے ہم یہاں چھوڑ کر

کعبے میں مئی پیا کئے ہیں یار
مسجد و خانقاہ ایک طرف

بات کا اپنی وہاں نباہ نہیں
دوستی کا نباہ ایک طرف

اٹھے جہاں سے ہم آتے ہی ان کے اے معروفؔ
غرض کہ ختم ہے بس اس سے اب سوا تعظیم

کہا جو میں نے کہ اس ناتواں کا سینۂ حال،
کہا جو حال سنادے وہ نا تواں نہیں

سوگئے جو اسکے ہم دیوار کے سایۂ تلے
ہم کو اس تقصیر پر اس نے بیٹھایا دھوپ میں

وضو کو مانگ کے پانی خجل نہ کر معروفؔ
یہ مفلسی ہے تیمّم کو گھر میں خاک نہیں

یہ لاوج خاک نشینی میں عشق نے بخشا
کرے ہے آہ میری آسماں سے باتیں



ڈبو دیا مجھے اس چشم تر کو کیا کوسوں
جلا دیا مجھے سوزِ جگر کو کیا کوسوں

آپ جس وقت رقیبوں کی قسم کھاتے ہیں
ہم رقیبوں کے نصیبوں کی قسم کھاتے ہیں

اپنی آنکھیں باندھتا آئے نہ تجھ کو مجھ پر رحم
میری آنکیں کس لئے باندھی ہے اے جلاد تو

مئے کے پینے سے تو ہر چند بناہے توبہ
پر مغاں سے یہ خجل ہوں کہ الٰہی توبہ

کیسی بے رحمی خدا نے اس کے جی میں ڈالدی
بات رونے کی میری سن کر ہنسی میں ڈالدی

دیکھ کر رفتار اس خوش قد کی کہتی ہے نسیم
جان یہ کس نے تن سروسہی میں ڈالدی

جواب خط نہیں دیتا نہ دے جواب تو دے
کہ قاصد آکے جو کچھ دے خبر شتاب تو دے

کچھ تو سمجھ لیا ہے جو اس کو دیا ہے دل
کیوں نا صحاعبث ہمیں سمجھائے جائے ہے

تو ایک مجھ سے کاش وفا کر کہ بعد ازین
مقدور کیا جو کوئی تجھے بے وفا کہے

دیکھی جو سب نے شدت وہاں بھی میری بکا کئے
کیا کیا ہنسی ہوئی ہے دیوار قہقہہ کی

عمر آخر ہو چکی قاتل نہیں ملتا کوئی
کاٹ ڈالوں جی میں ہے اپنا گلا تلوار سے

وہاں زخم جگر پر بھی ترحم نہیں کرتے
کیا فایدہ پھاڑا جو گریبان کسی نے

صید شاہیں کی طرح ہوں میں اسیر الفت
ذبح کرتا ہے تجھے جو کہ چھڑاتا ہے مجھے

کس سے فریاد یہ میں جاکے کروں مثل سپند
خوبرو جو ہے جہاں میں سو جلاتا ہے مجھے

گر یہ وآہ وفغان سے ایکدم فرصت نہیں
ہم سمجھتے تھے محبت کام بیکاروں کا ہے

ہم تو جھوٹے ہیں محبت میں مگر
امتحان بھی نہیں کرتا کوئی

خرق عادت اپنے دیوانہ کی دیکھ
جس طرف کو وہ چلے پتھر چلے

بعد مرنے کے ملی میری سیہ بختی کی داد
نعش کے ہمراہ تھا وہ موے سر کھولے ہوئے

معروفؔ اب تو دیکھتے ہو تم ہمیں غریب
ٹک منھ لگائے یار تو پھر ہم کو دیکھئے

روٹھنے کو تو چلے روٹھ کے ہم وہاں سے ولے — مڑ کے تکتے تھے کہ اب کوئی منا کر لیجائے

ناتواں مجھ سے کس طرح مکرے قاتل دو — ہوں میں وہ جزو کہ جولا یجزی ہوونے

**معلؔ** تخلص مغل علی خلف محمد عسکری کشمیری الاصل شعر هذا از دست۔

خورشید جو نکلا ہے اس وقت پہ لرزاں ہو — کوٹھے پہ کھڑا شاید وہ مہ لقا ہوگا۔

**مغمومؔ** تخلص میر مشیت علی از تلامذہ حکیم عزت اللہ خان عشق این بیت از فکرت اوست۔

خیال چشم میگوں میں قدم مستانہ رکھتے ہیں — دیوانے ہیں ہمارا نام جو دیوانہ رکھتے ہیں

**مفتونؔ** تخلص مرزا کریم بخش از دودمانِ گورگانی دو بیت اور است۔

**مفتونؔ** خمار بادۂ سب ہو تو پھر پیؤ — یک جام جا کے ساقی پیمان شکن کے پاس

مفتونؔ عجب مزا ہے ملاقات بے غرض — ملئے اگر کسو سے تو مطلب نہ چھیڑیئے

**مفلسؔ** تخلص محبّ علی حالش از تخلص پیداست در رام پور بعطر فروختن کسب معیشت میکر دیک شعر از واست۔

آؤں گا لاکھ بار پہ درباں ترے کہیں — مفلس مجھے سمجھ کے بے آبرو کریں

**مقبولؔ** تخلص مقبول بنی فرزند انعام اللہ خان یقین از سکنائے جہاں آباد از تلامذۂ ثناء اللہ خان فراق شمردہ می شود ناچار یک بیت از وست۔

دل گرفتاری کو اس زلف کے چاہے تھا — عشق نے ڈالی ہے یہ پاؤں میں زنجیر بزور

**مقتولؔ** تخلص ابراہیم بیگ اصفہانی نژاد است مولد ش جہاں آباد اکتساب فنون نظمیہ از خدمت غلام ہمدانی مصحفی کردہ ناچار شعر ہذا از وست۔



میں یہاں خوں رویا ہوں ہاتھوں سے ان کے جو پاؤں میں اس کے حنا باندھتے ہیں

مقصودؔ تخلص از سوقیاں لکھنو است ناچار این بیت اور است۔

بوسہ لینے سے خفا ہوتے ہو کیوں مشفق من — بوسہ وہ شئے ہے کہ دونو کو مزا دیتا ہے

**ملالؔ** تخلص از ساکنان لکھنو ناچار این شعر از وست۔

موت آئی نہ سر شام جدائی مجھ کو — سخت جانی نے عجب رات دکھائی مجھ کو

**ملنگ شاہؔ** تخلص از حالش واقفیت نیست سہ اشعار از واست۔

میرا درد غم تجھ پہ اظہار ہوگا — ادھر منزل عشق بسیار ہوگا

ادھر تو جگر میرا پارہ پارہ — ادھر مرہم وصل طیار ہوگا

ملنگ شاہ سائیں تو ہیں جگ میں روشن — ادھر لعل و گوہر کا بازار ہوگا

**ملولؔ** تخلص شاہ شرف الدین از درویشانست شعر هذا او راست۔

تیری جدائی نے یہاں تک ہمیں ملول کیا — کہ زندگی کے عوض مرگ کو قبول کیا

**مملوؔ** تخلص بر احوالش وقوف نیست ناچار دو اشعار از واست۔

سرو قد گل سا چہرہ جب دکھایا آپ نے — قمری و بلبل کو آپس میں لڑایا آپ نے

مصحفِ رخسار پر رکھتے قدم ہے باربار — زلف کافر کو عبث سر پر چڑھایا آپ نے

**ممتازؔ** تخلص یکے از سکنائے فیض آباد از شاگردان سودا است این بیت اور است۔

ہمارے رونے سے دل کا غبار اٹھتا ہے — کے جیسے پانی کے چھڑکے غبار اٹھتا ہے

ممتاز تخلص امیر الہند نواب والاجاہ ثانی رئیس مستقل کرناٹک خلف الصدق اکبر نواب والا جاہ اول و عموی حقیقی این جامع الاوراق در جودت طبع و درز ذہن وذکا عربے نظیر و رمال بینی وحاضر جوابی بیمثال سی و ہفت ۳۷ اشعار اور است۔

## ردیف "ا" سی ۳۰ ابیات

پر کم مر اکوئی کام رہا ہے نہ رہیگا — دینا میں بجز نام رہا ہے نہ رہیگا

دارا و سکندر کی وہ دولت نہ رہی ہے — یہ گردش ایام رہا ہے نہ رہیگا

صرف خوشی میں خاطر دلگیر پر لکھا — جون آب و رنگ غنچہ تصویر پر لکھا

تدبیر سے وہ مٹ نہیں سکتا ہے زینہار — جو کچھ قلم نے دفتر تقدیر پر لکھا

ہر چیز کی ہے گردش دوران پہ سرنوشت — میرے جنون کو حلقہ عز نجیر پر لکھا

نامہ ہمیشہ نال کبوتر یہ تھا عمل — سواب کے آپ نے وہ پر تیر پر لکھا

اپنے تو اعتقاد ہم اب تک ہیں بے گناہ — کیا جانئے وہ کونسی تقصیر پر لکھا

ممتاز بیقراری دل کا بیان شوق — گرچہ نہیں تھا قابل تحریر پر لکھا

ثابت نہ رکھا مسجد و بت خانے کو تو نے — اے کافر بد کیش یہ اسلام ہے تیرا

باوصف قدامت کے تو یوں پوچھے ہے مجھ سے — باشندہ کہاں کا ہے تو کیا نام ہے تیرا

کس لئے جاتا ہے تو اے شیخ بیت اللہ کو — گھر کیا جب دل میں وہ کعبے میں کیا باقی رہا

واعظ نادان ڈراتا ہے ہمیں دوزخ سے کیوں — جب ڈرایا یار سے پھر کیا مزا باقی رہا

کچھ نفع بجز ضرر نہ پایا — میں عشق کو خوب آزمایا

آتی ہے مجھے کباب کی بو — ظالم نے کسو کا دل جلایا



کل امر بہار باغ کے بیچ — ایسا رویا مجھے رُلایا

اول سے تو تھا جنون بھرا دل — پھر تو نے ہے اسکو منھ دکھایا

اب کہتے ہیں دیکھ کر اسے خلق — دیوانے کو ہے پری کا سایا

ممتاز مجھے نہیں تھا معلوم — اللہ نے پھر یہ دن دکھایا

معتقد میں تب تو ہوں گا ناخن تدبیر کا — کھل سکے عقدہ اگر رشتہ کوئی تقدیر کا

جنگ تھا خسرو سے تجھ کو عشق تیرا کیا کیا — مفت میں جاتا رہا جی ایک بے تقصیر کا

گر کرے لاکھوں برس سجدے تو پھر کیا فایدہ — شیخ جی اب تو نے دیکھا حال اپنے پیر کا

باز کیوں آتا نہیں اے دل تو زلف یار سے — باوجود عقل دیوانہ ہے تو زنجیر کا

شعر کیا کوئی کہہ سکے ممتاز تیرے روبرو — رنگ اڑ جاتا ہے ٹک چہرہ تو دیکھو میر کا

ہرگز نہ سرو اپنا قامت پہ ناز کرنا — اوروں کے بھی قدوں پر ٹک چشم باز کرنا

اے دل جو اپنے گھر میں وہ بادشاہ خوباں — ہے کفر عاشقی میں افشاے راز کرنا

قاضی کو دیجیئے ساقی دو چار ساغر مئے — تیرے تو ہاتھ میں ہے مئی کا جواز کرنا

زلفوں کو چھوڑ منھ پر سنتا ہے یار باتیں — ممتاز وقت شب ہے قصہ دراز کرنا

ڈروں میں کس لئے رنجش سے بہار میں کیا تھا — خزان کو اب جو میں روؤں بہار میں کیا تھا

تیرے ہی واسطے آئے عدم سے ہم یہاں تک — وگرنہ ہستی ناپایدار میں کیا تھا

## ردیف "ر" دو بیت

اے رہ نورد کشور عشاق راست کہہ — باشندگان شہر جدائی کی کیا خبر

صیاد اب کے موسم گل ہے بہار پر — آزاد مشربوں کی رہائی کی کیا خبر

## ردیف "ن" پنج بیت

گزر ایگا شاید کہ وہ بیباک چمن میں — آتا ہے نظر جامۂ گل چاک چمن میں
یک روز ممتاز سے بولا کہ تو چل باغ — ٹک غنچہ و گل دیکھئے اور تاک چمن میں
اتنا ہی کہا سن کے میری بات کو کر آہ — بن یار کروں سیر چمن خاک چمن میں
جو سر پٹکنے سے اے شیخ جی ملے اللہ — پھر ایک سجدہ کرے تو میں پچاس کروں
بلا سے گر وہ نہ مانے مرا کہا ممتاز — میں اپنے چنگے بھلے جی کو کیوں اداس کروں
زلف تیری ایک میرے ہاتھ ہے — بیٹھو جی پیارے رو آدھی رات میں
یار آیا ہے شب دیجور میں — چاند نکلا پر اندھیری رات میں
لائیے تشریف میرے گھر کے بیچ — تم سے کہنا کچھ ضروری بات ہے
کیا ہوا نین حضرتِ آدم سے چوک — ہم بھی آخر آدمی کی ذات ہے
کب تلک ممتاز پر غصہ ہو تم — بس کرو در گذرو جھوٹی بات ہے

ممنون تخلص میر امانت علی از ارباب عظیم آباد پئے کسب علوم بہ دہلی فایز شدہ در محافل مشاعرہ بیشد واستفادہ از میر فرزند علی موزوں می کرد این شعر اوراست۔

اے وائے کہ تیرے لئے اس خاک نشین کو — جون باد لئے پھرتی ہے گھر گھر طیش دل

ممنون تخلص نقاوہ دودمان سیادت نظام الدین نام فرزند کلاں میر قمر الدین منت اصلش از قصبۂ سونی پت من توابع دار الخلافت شاہ جہاں آباد و مولد و منشایش ہموں شہر خجستہ ن ۔بنیاد کسب فنون از خدمت والد بزرگوار خود کردہ مدتے بہ لکھنو بسر بردہ زمان دراز بزمرۂ شعرای پایہ تخت حضور والا سر فراز ماندہ از پیشگاہ خلافت فخر الشعرا لقب یافتہ اکنوں از چند گاہ بکوہستان اجمیر میگذارند طرز گفتارش خیلے دلچسپ و دلنشین و ملاحت کلامش نہایت عذب و شیرین در بستن مضامین بیگانہ یگانۂ زماں در فکر صحیح صایب نادر



دوران قوت نظم اکثر اضاف سخن دار دایں ۳۸ وبشت اشعار از نتائج افکار اوست۔

## ردیف "الف" یازدہ بیت

بُرا مانئے مت میرے دیکھنے سے — تمہیں حق نے ایسا بنایا تو دیکھا
قربان ناز نغش میری دیکھ کر کہا — گردن پہ کس کے خون ہے اس بے گناہ کا
صبح تک کیا کیا نہ مجھ کو تھیں سماجت ہائے شوق — رات کہہ کر روبرو صفحہ تیری تصویر کا
لے لیا بوسہ تو اس نے دین نہ کیا کیا گالیاں — یہاں گناہ سے بھی زیادہ ہے مزا تعزیر کا
بیتابی دل تیری شہیدوں کی کہاں جاے — کچھ کم رگ بسمل سے نہیں تار کفن کا
روان خون ہے چپ وراست دونو آنکھوں سے — جگر کا فکر جدا سوچ ہے جدا دل کا
ممنون قضا نے ہم کو دیا کیا بغیر دل — سو وہ بھی نظر کاوش و تشویش ہو گیا
کیا سینۂ فرہاد نہ تھا تیشۂ فولاد — یوں نقش جو شیرین کا سر سنگ پہ کھینچا
لڑتے تھے ہم آنکھ مواسیر میں دل مفت — سمجھا تھا لڑائی کا یہ نادان تماشا
کچھ چاندنی سی ہے در و دیوار پر مگر — مہمان قریب خانہ کوئی ماہ رو ہوا
اے فوج چاک اب سر تاراج کس لئے — تختہ تباہ تو میرے دامان کا ہو چکا

## ردیف "ت" یک بیت

آمد سے ترے ہم پہ جو ہوتی تھی سو ہم لے — اب دغدغہ حشر نہ پروائے قیامت

## ردیف "ر" دو شعر

میں نثار اس شوخ کے اپنی بلائیں آپ لیں — آئینہ میں زلف چھوٹے اپنے منہ پر دیکھ کر
یہ نہ جانا تھا کہ اس محفل میں دل رہ جائیگا — ہم یہ سمجھے تھے چلے آئینگے دل پھر دیکھ کر

## ردیف "ط" دوبیت

خط پارہ پارہ کر کے دیا پھیر دیکھ لطف ۔ میرے جواب خط میں ہیں پہنچے ہزار خط
شاید کہ جائے طول سے وہاں خود بخود پہنچ تحریر کیجئے جو بصد اختصار خط

## ردیف "ف" یک بیت

قاتل ہے وہ نہ ہووے کہ ممنوں کی نعش پر کہتا تھا ایک جوان بہت بار بار حیف

## ردیف "ق" دوشعر

خط نہیں جا چکا کہ گھبرایا پھر رہا ہوں جواب کا مشتاق
یوں تو وہ ہے فرستہ خو لیکن ہے ذرہ آدمی کسی کا شوق

## ردیف "م" یک بیت

جلاد کے یہاں جنبش ساعد پہ نظر تھی کچھ ذبح کے ایذا دم بسمل نہیں معلوم

## ردیف "ن" شش اشعار

یہ کہاں نصیب کہ آئے تو بخیال اپنے میں ہو بہو ترا نقشہ کھینچ کے روبرو گلہ شکوہ دو دو پہر کریں

شب وعدہ چشم ہے راہ پر جو ذرا بھی کھٹکے کسی کا در
تو صدائے پا تری جان کر کہوں اب تلک تھے کدھر کہاں

کیا کہیئے وہاں مزاج تو نازک ہے اور یہاں قصہ دراز سخت زبوں ہے زبان نہیں
ممنوں مبادا آئے کہیں ہجر ناگہاں ناکامیوں سے وصل ہے میں آؤ خو کریں
درد دل تجھ سے کہا جاوے ولیکن ظالم ہم سے یہ قصۂ جان سوز کہا جائے کہاں



ترے غم نے یہاں تک کیا بے مزہ کہ جینا بھی اپنا نہ بھایا ہمیں

## ردیف "و" دوشعر

ہستی ہی ہستی مل گئی بسمل کی آرزو تھی خون بہا میں خندۂ قاتل کی آرزو
کہیں جانا ہے تو جا چک کہ اگر جان بھی جائے نہ بلاؤں نہ بلاؤں تجھ کو

## ردیف "ھ" دوبیت

شب ہمکو کشت و خوں رہا فوج غم کے ساتھ سو حسرتیں شہید ہوئیں اپنے دم کے ساتھ
مکتب میں بھی سبق تھا الف لام میم کا طفلی ہی سے ہوا ہوں میں خوگر الم کے ساتھ

## ردیف "ے" ہشت اشعار

مہربانی کی تصدق لگ کے سینے سے مرے یوں لگا کہنے کہ ممنون آرزو کچھ اور ہے
رکھ دیجئے قلق میں دم تیغ پر یہ دل لیکن خیال بوسۂ ابرو نہ کیجئے
بس جنازور آزمائی ہو چکی دلبروں سے ہاتھا پائی ہو چکی
رات تھوڑی حسرتیں دل میں بہت صلح کیجئے بس لڑائی ہو چکی
جگر کے دود سے رنگین نشان آہ کئے دل شہید کے غم میں علم سیاہ کئے
میں نامہ و پیغام سے گذرا کہیں یارب کچھ قاصد بیچارہ کی اپنی خبر آئی
اس دست حنائی نے آنسو جو میرے پونچھے حسرت سے لہو ٹپکا دو چار کے آنکھوں سے
اللہ رے فرط شوق جو یکدم ہو تو نہاں بے طاقتی جھکائی ہے کس کس کے گھر مجھے

منیر تخلص وجیہ الدین فرزند شاہ نصیر طبع خوش داشتے بریعان جوانی داعی اجل را لبیک اجابت گفتہ این سہ ابیات اوراست۔

فرہاد سے کہتی تھی تیشہ کی زبان ہر دم　　مغموم نہ ہو نادان سنگ آمد و سخت آمد
اس باغ جہاں میں کبھی پھولے نہ پھلے ہم　　جون نخل چنار اپنے ہی آتش میں جلے ہم
غضب چہرہ پایا ستم آن پائی　　تجھے پائی تصویر کیا جان پائی

منیر تخلص خواجہ آفتاب خان شاگرد سعادت یار خان رنگین این شعر از وست۔

جی چاہتا ہے زلف کا تیرے بیان کریں　　شانے کے دانت توڑ کے اپنی زبان کریں

منشی تخلص میر محمد حسین خلف ابو الحسن المعروف بہ میر کلن کہ محسن خط از مشاہیر شاہ جہاں آباد بودہ اصلش از ایران و بزگانش در دہلی سکونت اختیار کردند وی آخر ہا بہ لکھنو رفتہ در حضرت مرزا سلیمان شکوہ بہادر بخدمت انشا پردازی مامور بتقاضائے صحبت لب بسخن آشنا مئی کردو ہمیں تقریب منشی تخلص قرار دادے ہم بدرستی خطوط معروض و موصوف بود از افکار اوو بیت است۔

نہ پوچھو اس پری کے حسن کا عالم کہ آفت ہے　　بلا شوخی غضب رفتار قامت یک قیامت ہے

جو پوچھا اس لیس لوگوں نے کے منشی کون ہے بولے
مجھے کچھ یوں ہی اس سے دور کی صاحب سلامت ہے

منشی تخلص مول چند از شاگردان نصیر کایتی است در دہلی قصص شاہنامہ را بہ رخیتہ نظم کردہ است دو شعر اوراست۔

چشم ہے قہر بلا زلف قیامت قامت　　اس لئے لوگ تمہیں آفت جاں کہتے ہیں
خواہش نہیں کہ ہاتھ مرے سیم وزر لگے　　یہ آرزو ہے سینے سے وہ سیمبر لگے



منتظر تخلص نور الاسلام نظر بطریق اکابرش بصدق و صفا و صلاح مایل شاگرد مصحفی این نشش اشعار اوراست۔

ہر دم خیال یار جو پیش نظر رہا　　ہجراں میں بھی وصال ہمیں بیشتر رہا
کل شب وصل جو تھی کیسی مچائی تھی دھوم　　بولتا آج نہیں مرغ سحر آخر شب
چاہت مرے دل کی آزما دیکھ　　ظالم کہیں تو بھی دل لگا دیکھ
مارا ہے کوہ کن نے سر اپنے پہ تیشہ ہائے　　دل کو لگی ہو چوٹ تو کیا آدمی کرے
کیوں سیر لالہ زار کو اس بن گیا میں ہائے　　جو تازہ ہو گئے میرے داغ کہن کئے
ہمارے جی میں تو ہے زہر کھا کے سو رہئے　　ولے یہ ڈر ہے نہ تہمت ہو یار پر اپنے

منتظر تخلص شیخ اما الدین اکبر آبادی ناچار یک بیت اوراست۔

جس گھڑی یار گلستان کی طرف جاتا ہے　　ہاتھ ہر گل کا گریباں کی طرف جاتا ہے

منعم تخلص قاضی نور الحق خدمت قضائی بریلی باوی بودہ صاحب گلشن بیخار نوشتہ کہ اعظم الدولہ وصف بسیاری از وذکور ساختہ از شعرای مسلم فارسی شمردہ و بمراتب علمی منوط دانستہ این مطلع کہ باعدم التفات بریختہ بخاطر داشت وی گفتہ بود از تذکرۂ اعظم الدولہ نقل کردہ شد یک شعر از وست۔

وہ نوک مژہ جب سے میرے دل میں گڑی ہے
ایسی تو کھٹکتی ہے کہ جینے پڑی ہے

منعم تخلص موہن لعل از تربیت یافتگان شان نصیر است دو بیت از وست۔

کہیں آیا ہے دلا آج قد یار نظر　　کچھ قیامت کے سے آتے ہیں جو آثار نظر

وہاں اشارہ ابرو مطع ہلالی ہے ہے یہ آہ کا مصرع مقطع فغانی یہاں

منصف تخلص منصف علی خان قوم افغان از تلامذۂ نظام خان معجز بودہ از وطن اصلی خویش کہ عظیم آباد باشد حرکت بہ دہلی نمود چند سال است کہ ہم در انجا وفات یافتہ بعلت تنگ معاشی ہابہ تعلیم اطفال بسر می بردہ در تدریس کتب مشہورہ فارسی سلیقۂ خوشی داشتہ و تحقیق نکات مفصلہ و حل غوامض مشکلہ ہم بین صحبت اساتذہ باوی بودہ شعر اوراست۔

گر عشق تیرا یہ ہے تو پھر دست جنوں سے

دامان رہیگا نہ گریباں رہیگا

خیال جاے ترا کیونکہ میرے سینے سے

جدا ہوا ہے کہیں نقش بھی نگینے سے

منت تخلص میر قمر الدین سید یست پاک گوہر اصلش از مشہد مقدس وودی بقصبۂ سونی پت از عدم بوجود آمدہ میانۂ جہاں آباد دہلی نشو نمایافتہ کسب فنون علمی فرمودہ بیعت طریقت با مولانا فخر الدین رحمۃ اللہ نمودہ دران مدت کہ بجہاں آباد بود رسم وعادت اہل سنت داشت حالیکہ بہ لکھنو آمد برود امامیہ بر آمد قصاید بمدح صاحب دولتاں از انجا گفت وجایزہا یافت وبہ کلکتہ رفت وناظم آنجا را کہ مشہور بہ گورنر جنرل می باشد ستودہ وملک الشعرا لقب یافت وبہ حیدر آباد شتافت واز پیشگاہ نواب نظام الملک بعلہ قصیدہ دہ ہزار روپیہ از نقد و جنس ذخیرہ اندوخت بعد سیر و سفر دراز باز بلکھنو دار دوراجہ محیط رای راندیم گشت وبعمر چہل ونہ سال در کلکتہ بہ تقریبی گذارش اتفاق افتادہ بود داعی اجل را لبیک اجابت کردہ وکان ذالک فی سنہ ثمان وماتین بعد الف بہ زبان فارسی در مراتب نظم



قدرت و قوت خیالاتش یک نیم صد ہزار بیت نوشتہ اند دو ۳ بیت از مثنوی او چمنستان نام کہ شرح تصنیفاتش گفتہ است آوردہ می شود ؎

## ابیات

درین عمردہ مثنوی گفتہ ام
بائیں طرز نوی گفتہ ام
چو اشعار من در عددمی رسد
شمار قصاید بصد می رسد
بود شعر من در غزل سی ۳۰ ہزار
زپا نصد رباعی گر قسم شمار

در نثر کتابے موسوم بشکرستان کہ نیز عم خود بشیوۂ سعدی نوشتہ از یادگار خود گذاشتہ گاہے بفکر ریختہ ہم می پرداخت مرزا علی لطف گفتہ کہ منت فن شعر و شاعری از فیض صحبت میر شمس الدین فقیر تخلص و میر نور الدین نوید تخلص حاصل کردہ در سن یکہزار و دو صد و شش ۱۲۰۶ھ ہجری مقدسہ از شکایت تپ محرقہ در عرصہ دو ۳ روز در کلکتہ انتقال نمود این سیزدہ ابیات اوراست ؎

خشک نالے ہو گئے بہنے سے دریا تھم رہا — چشم میں اپنے یہیں یک عمر سے کچھ نم رہا
میکدے سے ٹل گئے اہل ہوس پی پی کے جام — ایک میں وہ ہوں کہ اس دیر مغاں میں جم رہا
منت یک بار عشق سے توبہ کر — چار و ناچار عشق سے توبہ کر

کب تک مردود دین و دنیا رہنا — آجانے دے یار عشق سے توبہ کر
کل نکلتے ہیں زمین سے رنگ شعلہ — کون دل سوختہ جلتا ہے تہِ خاک ہنوز
اس آنے کا کچھ ہے لطف پیارے — ہر دم جو کہو کہ جائینگے ہم
گر اس لب جان بخش کی میں بات سناؤں — عیسیٰ بھی جو کچھ بولے تو صلوات سناؤں
خوان کرم پہ تیرے ہے سیر ایک عالم — ہم بے نصیب اب تک پاپڑ ہی بیلتے ہیں
مدعی اس سخن ساز سا لوسی ہے — پھر تمنا کو یہاں مژدۂ مایوسی ہے
تہمت عشق غبث کرتے ہیں مجھ کو منت — ہاں یہ سچ ملنے کی خوبوں سے تو ایک خوشی ہے
منت ایسے کو دل دیا تو نے — اے میری جان کیا کیا تو نے
یہیں سے ہمرہاں قافلہ اپنی تو رخصت ہے — کہ اس وادی میں ہمتو ضعف سے جون نقش پا بیٹھے

سنا تا تھا میں حال دل اس کو منت
کہاں چل بے یہاں سے یہ کیا گفتگو ہے

**موزوں** تخلص میر فرزند علی از مردم سامانہ از تلامذۂ شمس الدین فقیر است طبعی موزوں داشتہ از تاریخ گوئی بہرہ بر داشتہ بہ لکھنور فتہ رنگ سکونت ریختہ ناچار ۳ بیت اوراست۔

شمع ہر بزم نہ ہونا ہرگز — دل جلوں کا بھی کہا کیجیگا
نرگس کا پھول بھیجئے نامے میں یار کو — معلوم تا کرے وہ مرے انتظار کو
وابستہ محبت تھی پیمان کی درستی پر — دل ٹوٹ گیا میرا تم عہد شکن نکلے

**موزوں** تخلص چھتر سنگھ از کایتاں دہلی است خود را پنیرۂ مادھو رام کہ انشاء وی ودستمال اطفال است میگفت ناچار یک شعر ازوست۔



ابرو کو ترے دیکھ کے اے مطلع حسن — جو ترے کوچے سے نکلا سو غزلخوان نکلا

**موج** تخلص خدا بخش از سرایندگان مشہور است خانہ در اکبر آباد و در فن خویش سازو برگ خوشی داشتہ بیشتر بہ دہلی گذرانیدہ صاحب گلشن بیخار گفتہ کہ بارہا پیش من می آمد مرد خوش صحبتی ظریفے بودہ چند سال است کہ در لکھنو فوت کردہ طبعی موزوں داشتہ گاہے فکر شعر میکردہ ناچار یک شعر ازوست۔

لاکھوں کٹو ادیئے سر آن میں ہنستے ہنستے — اے میری جان کوئی تو تو تماشا نکلا

**مونس** تخلص حکیم سعادت علی نام از سادات گرام وازار باب بنارس مردی نجستہ و لطیف وشگفتہ وظریف است صاحب گلشن بے خار گوید کہ بتقریب ورود بلند شہر فقیر را با ایشان ملاقات دست بہم داد بلکہ از جانبین ابواب ربط و موانست بر رخ ہم کشادہ طبیب مسیح نفس است سابقا گاہ بیگاہ بفکر اشعار پرداختے اکنوں مطلقا بدین فن متوجہ نیست یک بیت اوراست۔

زبان جوش گریہ ہچکیاں لینے لگا مونس — خلل انداز ہے اب نالۂ شبگیر میں آنسو

**مومن** تخلص اسم شریفش حکیم محمد مومن خام لعل بے بہا کان سخندانی کہ یکدانہ گہر دریائے معانی فرومانروائے اقلیم سخن پایہ بلند ساز این فن استاد جناب نواب مستطاب مصطفےٰ خاں بہادر متخلص بہ شیفتہ صاحب گلشن بے خار است یکصد و ہشتاد و ہشت اشعار ازواست۔

## ردیف "ا" چہل و چہار اشعار

اس نقش پا کے سجدے نے کیا کیا کیا ذلیل
میں کوچۂ رقیب میں بھی سر کے بل گیا

نہ جاوں گا کبھی جنت میں میں نہ جاوں گا
اگر نہ ہوویگا نقشہ تمہارے گھر کا سا

یہ ناتواں ہوں کے ہوں اور نظر نہیں آتا
مرا بھی حال ہوا تیر نے ہی کمر کا سا

کیا سناتے ہو کہ ہے ہجر میں جینا مشکل
تم سے بے رحم پہ مرنے سے تو آسان ہوگا

کیونکر امید وفا سے ہو تسلی دل کو
فکر ہے یہ کہ وہ وعدے سے پشیماں ہوگا

درد ہے جاں کے عوض ہر رگ وپے میں سارے
چارہ گر ہم نہیں ہونے کے جو درمان ہوگا

دن سے پری وش کو نہ دیکھے کوئی
مجھ کو میری شرم نے رسوا کیا

دعوی تکلیف سے جلاد نے
روزِ جزا قتل پھر اپنا کیا

خدا کی یاد دلاتے تھے نزع میں احباب
ہزار شکر کہ اس دم وہ بد گماں نہ ہوا

وصل کی شب شام سے میں سو گیا
جاگنا ہجران کا بلا ہو گیا

ساتھ نہ چلنے کا بہانہ تو دیکھ
آ کے میری نعش پہ وہ رو گیا

دل لگانے کے تو اٹھائے مزے
جی بلا سے رہا رہا نہ رہا

تو فلک مرگ ہم سے سب غافل
اب کسی کا بھی آسرا نہ رہا

کیا تم نے قتل جہاں یک نظر میں
کسی نے نہ دیکھا تماشا کسی کا

وہ کرتے ہیں بیباک عاشق کشی یوں
نہیں کوئی دنیا میں گویا کسی کا

الجھائے پاؤں یار کا زلف دراز میں
لو آپ اپنے دام میں صیاد آگیا

یہ عذرا متحان جذب دل کیا نکل آیا
میں الزام اس کو دیتا تھا قصور اپنا نکل آیا

روز جزا جو قاتل دل جو خطاب تھا
میرا سوال ہی میرے خوں کا جواب تھا

ہوں کیوں نہ محو حیرت نیرنگیائے شوق
جو دل میں شعلہ تھا وہی آنکھوں میں آب تھا



کیا جی لگا ہے تذکرۂ یار میں عبث
ناصح سے مجھ کو آج تلک اجتناب تھا

بیخود تھے غش تھے محو تھے دنیا کا غم نہ تھا
جینا وصال میں بھی تو مرنے سے کم نہ تھا

موت کے صدقے کے وہ بے پردہ آئے اثر پر
جو نہ دیکھا تھا تماشا عمر بھر دکھا دیا

دشنام یار طبع حزیں پر گراں نہیں
اے ہم نفس نزاکت آواز دیکھنا

بے کام کا مآل بُرا ہے جزا کے دن
حال سپہر تفرقہ انداز دیکھنا

واعظ بتوں کو خلد میں لیجائینگے کہیں
ہے وعدہ کافروں سے عذاب الیم کا

بجلی گری فغاں سے میرے آسمان پر
جو حادثہ کبھی نہ ہوا تھا سو اب ہوا

دھو دیا اشک ندامت نے گناہوں کو مرے
تر ہو ادامن تو بارے پاک دامن ہو گیا

اس حال کو پہنچے ترے قصے سے کہ اب ہم
راضی ہیں گر اعدا بھی کریں فیصلہ اپنا

راز نہاں زبان اغیار تک نہ پہنچا
کیا ایک بھی ہما راخط یار تک نہ پہنچا

یہ کس سے ہو کہ ان لطفوں پہ گستاخی نہ ہو
غیر ہم سالب ہوا ہر چند ہم سا ہو گیا

سرمۂ تسخیر سے ہم خود مسخر کیوں نہ ہوں
آنکھ کی پتلی جو تھی جادو کا پتلا ہو گیا

نو فلک ہیں کیا کرے یہ نالۂ آتش فشاں
ایک دشمن سر سے کھویا اور پیدا ہو گیا

ہجر بتاں میں تجھ کو ہے مومنؔ تلاش زہر
غم پر حرام خوار تو کل نہ ہو سکا

شوخ کہتا ہے بے حیا جانا
دیکھو دشمن نے تم کو کیسا جانا

کیا پوچھتا ہے تلخی الفت میں پند کو
ایسے تو لذتیں ہیں کہ تو جان کھا گیا

وہ ہنسے سن کے نالہ بلبل کا
مجھے رونا ہے خندۂ گل کا

کیا شاد شاد ہوں کہ وہ ہے تلخ کام تر
میرے جو شور شوں نے عدو کو مزا دیا

مٹی ندی مزار تلک آ کے اس پہ بھی
کہتے ہیں لوگ خاک میں اس نے ملا دیا

قابو میں نہیں ہے دل کم حوصلہ اپنا — اس جور پہ جب کرتے ہیں تجھ سے گلہ اپنا
ہل جاتے ہی اغیار نکل آتے ہیں باہر — زنجیر درِ یار ہے یا سلسلہ اپنا
تھے دشت میں ہمراہ میرے آبلۂ چند — سو آپ ہی پامال کیا قافلہ اپنا
انصاف کے خواہاں ہیں نہیں طالب زر ہم — تحسین سخن فہم ہے مومنؔ صلہ اپنا

## ردیف "ب" چہل و چہار اشعار

دی تسلی تو وہ ایسی کہ تسلی نہ ہوئی — خواب میں تو میرے آئے وہ مگر آخر شب
سجدے پہ سر قلم ہو دعا پر زبان کٹے — گویا نہ وہ زمین ہے نہ وہ آسماں ہے اب
رکھ لئے سر اپنے زانوئے نازک پہ شوق سے — تیرا مریض عشق بہت ناتواں ہے اب
چشم غضب سے مشورۂ قتل کھل گیا — جو بات دل میں تھی سو نظر سے عیاں ہے اب

## ردیف "ث" دو بیت

اس ضعف میں تو سینے سے آتا ہے لب تلک — کہتے ہیں اپنے نالے کو ہم نارسا عبث
اے روز حشر کچھ شب ہجراں بھی کم نہیں — بدنام جہاں میں تیری بلا عبث

## ردیف "ج" یک بیت

مومنؔ آکیش محبت میں کہ ہے سب جائز — حسرت حرمت صہباو مزا میرنہ کھینچ

## ردیف "ح" دو بیت

خو رنج رشک غیر کے بھی ہم کو ہو گئے — اب اور کچھ نکالئے آزار کی طرح
مرچک کہیں کہ تو غم ہجراں سے چھوٹ جائے — کہتے تو ہیں بھلے کے ولیکن بری طرح

## ردیف "ر" شش بیت



تو بہ کہاں کدورت باطن کی ہوش تھی — غش ہو گیا میں رنگ مئے ناب دیکھکر
شوق وصال دیکھ کے آیا عدو کے گھر — سوجھا نہ کچھ مجھے شب ماہتاب دیکھکر
پھر گئے آنکھوں کے آگے اسکے چشم شرمگیں — پھر گئیں آنکھیں مری نرگس کا جھکنا دیکھکر
دشمنی دیکھو کہ تا الفت نہ آجائے کہیں — لے لیا منھ پر ڈوپٹہ حال میرا دیکھکر
کر دیا خاک آپ کو اس بت کے در پر ہائے ہائے — جل گیا جی لاش کو مومنؔ کے جلتا دیکھکر
کچھ کچھ درست ضد سے ترے ہو چلے ہیں وہ — یک چند اور کجروی اے آسمان نہ چھوڑ

## ردیف "ز" سہ بیت

اے جذب دل وہ شوخ ستم گر تو یکطرف — پیغام لے گئے بھی کوئی آیا نہیں ہنوز
ہائے پس مرگ بھی دفن کرے مجھ کو غیر — خاک میں ملجائے چرخ بد سر کیں ہے ہنوز
روز جزا کیوں کیا خوں کا مرے اتہام — مہر عدو بد گماں تجھ کو یقین ہے ہنوز

## ردیف "ط" یک بیت

کہنا پڑا درست کہ اتنار ہے لحاظ — ہر چند وصل غیر کا نکار ہے غلط

## ردیف "غ" دو بیت

اس مہروش کے جلوے کے قربان کیوں نہ ہوں — پروانے کو بھی رات نہ آیا نظر چراغ
جلتا ہوں اہل ناز کے تبدیل جلد سے — مومنؔ غضب ہے آتش لذت فزائے داغ

## ردیف "ف" یک بیت

دل بعد قتل بھی نہیں پھرتا کہ گور میں — منھ پھر گیا ہے کوئے ستمگار کی طرف

## ردیف "ق" یک بیت

اثر غم ذرہ بتا دینا — وہ بہت پوچھتے ہیں کیا ہے عشق
مجھ پہ عاشق نہیں ہے کچھ ظالم — صبر آخر کرے وفا کب تک
ہے شب وصل غیر بھی کاٹے — تو مجھے آزمائیگا کب تک

## ردیف "م" ہفت ے بیت

ناتواں تھے پر نہ چھوڑا مثل خار — خود الجھ کر دہ گئے دامن میں ہم
جوش وحشت نے اٹھایا لاش کو — اپنے پاؤں سے گئے مدفن میں ہم
وصل بتاں کے دن تو نہیں یہ کہ ہو وبال — مومن نماز قصر کریں کیوں سفر میں ہم
مجھ سے نہ بولو تم اسے کیا کہتے ہیں بھلا — انصاف کیجئے پوچھتے ہیں آپ سے ہی ہم
کھا کھا کے زخم سوے نمک زار پر دریغ — کھو بیٹھ اپنی جان تن آسانیوں میں ہم
خنجر نہ توڑ سخت جانی — پھر کس کو گلے لگائینگے ہم
گر ہے دل غیر نقش تسخیر — تو تیرے لئے جلائینگے ہم

## ردیف "ن" سی وشش بیت

آب وہوائے ملک محبت راس نہیں ہے ہم کو تو
ہوتے ہیں لاغر اور زیادہ جتنا ہم غم کھاتے ہیں

اے تپ ہجر دیکھ مومن ہیں — ہے حرام آگ کا عذاب ہمیں
ہے دعا بھی بے اثر گویا کہیں — عرض عاشق کی پذیرائی نہیں
نہ میں اپنا نہ دل اپنا نہ تم میرے نہ جان اپنا





گر یہی شوق شہادت ہے تو مومن جی چکے — مار ڈالے کاش کوئی کافر دل جو ہمیں
ہے جلوہ ریز نور نظر گرد راہ میں — آنکھیں ہیں کس کے فرش تیری جلوہ گاہ میں
مت کچھ دیر آنے میں کیا جانے کیا بنے — پھینکا ہے جذب شوق نے یوسف کو چاہ میں
جانے دے چارہ گر شب ہجران میں مت بلا — وہ کیوں شریک ہو میری آہ وکراہ میں
ظالم وہ بے وفا ہے عدو جسکے رشک سے — اتنا کچھ آگیا خلل اپنی پناہ میں
شیریں پہ طعن تلخی فرہاد کس لئے — مجھ کو بھی کچھ مزا نہ ملا تیری چاہ میں
ہے دوستی تو جانب دشمن نہ دیکھنا — جادو بھرا ہوا ہے تمہاری نگاہ میں
تا نہ پڑے خلل کہیں آپ کے خواب ناز میں — ہم نہیں چاہتے کہ اپنی شب راز میں
اُٹھ سے اب التفات کے غیر کو ہیں شکائتیں — سن کے مرا مبالغہ منت احتراز میں
منظور ہو تو وصل سے بہتر ستم نہیں — انتار ہا ہوں دور کہ ہجراں کا غم نہیں
بے جرم پایمال عدو کو کیا کیا — مجھ کو خیال بھی تیرے سر کی قسم نہیں
عاشق کشی ہے شیوہ اگر بوالہوس سبھی — آخر کچھ اپنی جان کے دشمن تو ہم نہیں
ناصح کہاں تلک تری باتیں اٹھا سکوں — سچ ہے کہ مجھ میں طاقت جور وستم نہیں
عاشق کشی ہے شیوہ اگر بوالہوس سبھی — آخر کچھ اپنے جان کے دشمن تو ہم نہیں
گر یقینی بات وہاں ہوتی ہے اے مومن قبول — جائینگے کعبہ بھی طفل برہمن کے فکر میں

بسکہ بن آئی مر گئے ہم شب انتظار ہے ابتدائے شوق
زندگی اپنی ہو گئی رنجش بار بار میں

اس بت کو ترک دین سے نہ مومن ہے اعتماد — کیونکر تمھیں شکایت اغوائے دل کروں

دیکھنا کس حال سے کس حال کو پہنچا دیا
بخت تیرے عاشقوں کے نارسا کہنے کو ہیں

میں گلہ کرتا ہوں اپنا تو نہ سن غیروں کی بات
ہیں یہی کہنے کو وہ بھی اور کیا کہنے کو ہیں

وہ ہے بغل میں تو بھی تو یہاں نیند اڑ گئی
یہ سوچ ہے کیا نہ ہو اعدا کے خواب میں

غیر سے سرگوشیاں کر لیجئے پھر ہم بھی کچھ
آرزو ہائے دل رشک آشنا کہنے کو ہیں

ان نالہائے شب کا اثر صبح دیکھیو
آیا خلل گر اس ستم آرا کے خواب میں

نہ چاہوں روز جزا داد یہ ستم دیکھو
کب آزمائے ہیں جب وقت امتحان نہیں

ہیں غیر مرے نکلنے سے خوش
گویا کہ میں ان کا مدعا ہوں

ربط اس سے ہے مثل شعلہ و شمع
مر جاؤں گر ایک دم جدا ہوں

اس کو میں نہ چھوڑ جائے مجھ کو
ہر چند عدو کا نقش پا ہوں

اس نام کے صدقے جس کی دولت
مومن رہوں اور بتوں کو چاہوں

کیا کیجئے کہ طاقت نظارہ ہی نہیں
جتنے وہ بے حجاب ہیں ہم شرمسار ہیں

جز نہ سپہر ہیں میرے دشمن تو اور بھی
لیکن بڑے غضب یہی دو تین چار ہیں

پانی کے بدلے برسے گی آج آگ ابر سے
اٹھی ہماری خاک سے بھی کچھ بخار ہیں

شبنم خراب مہر و کتان سینہ چاک ماہ
لو اور بھی ستم زدۂ روزگار ہیں

کیسے گلے رقیب کے کیا طعن اقربا
تیر اہی جی نہ چاہے تو باتیں ہزار ہیں

## ردیف "و" یازدہ بیت

اس غیرت ناہید کے ہر تان ہے دیپک
شعلہ سا چمک جائے ہے آواز تو دیکھو

مجلس میں میری ذکر کے آتے ہی اٹھے وہ
بدنامی عشاق کا اعزاز تو دیکھو

وفا سکھلا رہیگا دل ہمارا
تمہارے خاطر نامہربان کو



سینے کی جگہ آنے لگا خون
چھپاؤں کس طرح زخم نہاں کو

سمجھتا کیونکہ دیوانے کی باتیں
نہ پایا محرم اپنے رازدان کو

دن رات فکر جور میں یوں رنج اٹھانا کب تلک
میں بھی ذرہ آرام لوں تو بھی ذرہ آرام لو

مومن تم اور عشق بتاں اے پیر و مرشد خیر ہے
یہ ذکر اور منہ آپ کا صاحب خدا کا نام لو

گو آپ نے جواب برا ہی دیا ولے
مجھ سے بیان نہ کیجئے عدو کے پیام کو

یہاں وصل ہے تلافی ہجران میں اے فلک
کیوں سوچتا ہے تازہ ستم انتقام کو

جب تو چلے جنازۂ عاشق کے ساتھ ساتھ
پھر کون وارثوں کی سنے اذان عام کو

کچھ شور محبت کی تو لذت ہی نہ پوچھو
ہے آپ کے بھی حسن سے کتنا نمکین یہ

الٹے وہ شکوے کرتے ہیں اور کس ادا کے ساتھ
بے طاقتی کے طعنے میں عذر جفا کے ساتھ

بے پردہ غیر پاس اسے بیٹھا نہ دیکھتے
اٹھ جاتے کاش ہم بھی جہاں سے حیا کے ساتھ

اس کی گلی کہاں یہ تو کچھ باغ خلد ہے
کس جائے مجھ کو چھوڑ گئی موت لا کے ساتھ

تھے وعدے سے پھر آنے کی خوشی یہ خبر نہ تھی
ہے اپنی زندگانی اسی بیوفا کے ساتھ

ہم اور یہ بدعت طپش دل کے سبب سے
مومن میرے سینے پہ رہے بعد فنا ہاتھ

اے جامہ زیب میں ہوں وہ مجنوں کہ قفس کا
پھٹ جائے سینہ میرے گریباں کے جوڑ دیکھ

میرا قلق بھی قبلہ نما سے نہیں ہے کم
باور نہیں تجھے تو ذرہ موڑ دیکھ

جلنا ترا بتوں میں بھی تاثیر کر گیا
مومن یقین نہیں ہے تو پتھر کو پھوڑ دیکھ

## ردیف "ے" پنجاہ و ہشت بیت

منظور نظر غیر سے ہے اب ہمیں کیا ہے
بے دید تری آنکھ سے دل پہلے پھرا ہے

بس بس نہ کر و بات کہ یاد آئی ہے مجھ کو
ناصح سے جو کچھ بے خودیوں میں بھی سنا ہے

تو یہ گنہ عشق سے فرماتے ہے واعظ
یہ بھی کہیں دل دے کے گنہ گار ہوا ہے

پرہیز سے اس کے گئی بیماری دل آہ
بیگانگیوں میں بھی عجب ربط رہا ہے

میں ترک وفا سے بھی وفادار ہوں مشہور
کہیں تجھ سے جو اے دشمن ارباب وفا ہے

مومن نہ سہی بوسہ پا سجدہ کرینگے
وہ بت ہے جو اوروں کا تو اپنا بھی خدا ہے

گر ذرہ اور بھی اے جوش جنون فوار و ذلیل
مجھ سے ایسا ہو کہ ناصح کو بھی عار آجائے

فصد کی حاجت مجھے کیا چارہ گر
بہ گیا خوں دیدۂ خونبار سے

وعدہ کر کے وہ نہ آئے نامۂ بر
تو نہ پوچھا ہو یگا تکرار سے

جا بجا نہریں ہیں جاری میں نے اشک
پہنچی ہوگی دامن کہسار سے

لاغری سے زندگی مشکل ہوئی
ہے گراں تر جان جسم زار سے

کر علاج جوش وحشت چارہ گر
لاؤ ے یک جنگل مجھے بازار سے

اب تو مرجانا بھی مشکل ہے تیرے بیمار کو
ضعف کے باعث کہاں دنیا سے اٹھا جائے ہے

شکوۂ دشمنی کریں کس سے
وہاں شکایت ہے دوست داری کی

تم اٹھ گئے محفل سے ذکر آتے ہی مجنون کا
سایہ سے میری وحشت اے رشک پری اتنی

بے پردہ پس چلوں یکبار تم آبیٹھے
بے تاب نظر کس کو کیوں جلوہ گری اتنی

کیا ہو گئی خود بینی اب غیر سے چشمک ہے
یا خوش نگہی ہی وہ کچھ یاد نظری اتنی

کہتا ہے مرے آگے وہ مجھ پہ عدو غش ہے
ہے ہے میری الفت سے ہے بے خبری اتنی

پیغامبر رقیب سے ہوتے ہیں مشورے
سنتا نہیں کسی کی یہ کہنے کی بات ہے

چھٹ کر کہاں اسیر محبت کی زندگی
ناصح یہ بندہ غم نہیں قید حیات ہے



کیونکر خدا کو دوں کہ بتوں کو ہے احتیاج
مومن یہ نقد دل زر جان کی زکواۃ ہے

لذت مرگ سے ہجراں میں دعا ہے کہ خدا
یہ مزا ہو نہ نصیبوں میں کسی بخس کے

سنا اس نے مرا نالہ اثر بھی کچھ ہوا شاید
کہ دشمن کہہ گیا بے فایدہ کیوں غل مچاتا ہے

خیال خواب راحت ہے علاج اس بدگمانی کا
وہ کافر گور میں مومن مرا شانہ ہلاتا ہے

میرے تغیر رنگ کو مت دیکھ
تجھ کو اپنی نظر نہ ہو جائے

بات ناصح کرتے ڈرتا ہوں
کہ فغان بے اثر نہ ہو جائے

اے قیامت نہ آئیو جب تک
وہ میرے گور پر نہ ہو جائے

رشک دشمنی کا فایدہ معلوم
مفت جی کا ضرر نہ ہو جائے

ہنسو نہ تم تو مرے حال پر میں ہوں وہ ذلیل
کہ جس کی ذلت و خواری سے تم کو شان لگے

دیکھا عذاب رنج دل زار کے لئے
عاشق ہوے ہیں وہ میرے آزار کے لئے

لے تو ہی بھیج دے کوئی پیغام تلخ اب
تجویز زہر ہے ترے بیمار کے لئے

جفاے یار کو سونپا معاملہ اپنا
اب آگے ہو نہ ہو امید انفصال تو ہے

تسلی دم واپسیں ہو چکی
ہمیں ہو چکے جب نہیں ہو چکی

وہ ہمدوش ہوگا بھی تو غیر سے
میری قسمت اے شانہ بین ہو چکی

خیال اجل سے تسلی کروں
وہ طاقت بھی جان حزین ہو چکی

جان بلب ہوں خبر وصل سنا دے قاصد
لب ہلانے میں ترے کام مرا ہوتا ہے

وہ بدخواہ مجھ سا تو میرا نہیں
عبث دوستی تم کو دشمن سے ہے

کیونکر نہ کہیں منت اعدا نہ کرینگے
کیا کیا نہ کیا عشق میں کیا کیا نہ کرینگے

ہنس ہنس کے وہ مجھ سے ہی میرے قتل کی باتیں
اس طرح سے کرتے ہیں کہ گویا نہ کرینگے

کر ذکر وفا سے بھی غصہ ہے تو اب سے — گو قتل کا وعدہ ہو تقاضا نہ کرینگے
توبہ ہے کہ ہم عشق بتوں کا نہ کرینگے — وہ کرتے ہیں اب جو نہ کیا تھا نہ کرینگے
مر گئے پر ہے بے خبر صیاد — اب توقع نہیں رہائی کی
جاں گئی پر نہ گئی جور کشی — بعدِ مردن بھی دباتے ہیں مجھے
جان سے جاتے ہیں کیا کیا حسرتیں — کاش وہ دل میں بھی آنا چھوڑ دے
ناتوانی سے نزاکت ہے زیاد — مجھ سے تو دامن چھڑانا چھوڑ دے
شب ہجر میں کیا ہجوم بلا ہے — زبان تھک گئی مرحبا کہتے کہتے
نہیں یا صنم مومن اب کفر سے کچھ — کہ خو ہو گئی ہے صدا کہتے کہتے
وہ مٹا دی نامۂ مضمونِ وصل — گر ہو خطِ کاتب تقریر سے
یوں بنا کر حال دل کہنا نہ تھا — بات بگڑی میرے ہی تقدیر سے
دوستو! لے آؤ قاتل کو کسی تدبیر سے — سر کٹائینگے کہ اب تو جنگ ہے تقدیر سے
کام جز الفت نہیں اے کاتب اعمال یہاں — فایدہ حرفِ مکرر کی بھلا تحریر سے
اے فسوں گر چشم جادو پر نہیں چلتا عمل — دیکھنا بھی چھٹ نہ جاوے سرمۂ تسخیر سے
ہو گئی ساری زمین صرف حروف نور قم — یک جہاں ویران ہے میرے نامے کی تحریر سے
ان کو جلدی جانے کی مجھ کو عذاب جان کنی — دونوں کا دم ناک میں ہے موت کی تاخیر سے
میرے لکھے کو مٹایا آپ نے اچھا ہوا — تھا شگون ہی مدعا یہاں نامے کی تحریر سے
اے جنوں اپنی اسیری بعد مردن بھی رہے — حلقۂ ماتم میں آئے حلقۂ زنجیر سے
نالہائے بو الہوس نے کھو دیا آزار شوق — لو ہم اچھے ہو گئے درمانِ بے تاثیر سے
بزم دشمن سے نہ اٹھے وہ کسی تدبیر سے — مل گئے خاک میں محشر تری تاخیر سے



مہر تخلص رجب بیگ یک شعر از فکرت اوست ؎

میں جاں بلب ہوں رونے دے اے نکتہ چین مجھے — آیا ہے یاد خال لب نازنین مجھے

مہر تخلص منشی مہر چند وطن اقامت فرخ آباد است بیشتر در لکھنو و اکبر آباد بسر بردہ عمرش صرف پیشکاری تحصل مواضع مختلفہ نمود سہ بیت اوراست۔

اے کمانِ ابرو جہاں جاتا ہوں تیر اخدنگ — پہنچتا ہے ایک دم میں پاس میرے پر لگا
یہ تو اپنے خواب میں بھی بر نہ آئی آرزو — ہم خیال وصل جانان بیشتر باندھا کیے
شرمگیں چشم کے بیمار کی لے جلد خبر — بولتا ہی نہیں کہتے ہیں بڑی دیر ہوئی

مہلت تخلص مرزا علی از لکھنو است عرض سخن با قلندر بخش جرأت کردہ نوشتہ اند کہ و یرا با علی نقی محشر منازعت اتفاق افتاد ہر دو بر کشتن ہم راضی شدند از دست محشر زخم کاری باور سید با اصرار پرسندگان نامش بر زبان نیاورد این قصد را محشر داشت و بہماں صدمہ روحش کالبد خاکی را گذاشت یک بیت از وست۔

مرنے کے بعد بھی نہ گئی دل کی یہ طپش — آرام زیر خاک بھی اب خاک کیجئے

سید سخنوران ہندوستان رستم شاعران دوران فقیر المشرب اعلیٰ حسب والانسب افصح الفصحا و اشعر الشعراء صاحب کلام دلپذیر میر محمد تقی المتخلص بہ میر شرافت بنیاد نیک نہاد از اہل اکبر آباد کہ خواہر زادۂ حقیقی سراج الدین علی خان آرزو است در فن ریختہ گوئی در عصر خود نظیر نداشت و بکلام شیرین در فصاحت و بلاغت سر بشہرت می افراشت بدایت حال بشاہ جہاں آباد بر خوردو بعزت و اعتبار تمام زندگانی می کرد و پس ازان سر بلکھنو کشید و از سرکار وزیر الممالک نواب آصف الدولہ بہادر مرحوم معزز ماندہ ہر چند میر ادر زبان ریختہ تو غل بسیار بود چنانچہ شش دیوان ریختہ و مثنویات باقسام ترتیب دادہ معہذا در

فارسی ہم دستگاہی بایستہ داشتہ وکلیات خویش قریب بست ودوہزار وچہار صدوچہل ونہ بیت یادگار خود گذاشتہ آخر کار در اوایل مایہ ثلث عشر بوداع دار فانی پرداختہ بجنت البقا مقیم گشتہ میر اگرچہ فقیر مشرب بودہ اما تہذیب جبلی وخاندان خویش راگاہے نگذاشتہ چناچہ در شکار ہمراہ غفران مآب نواب آصف الدولہ بہادر بودہ صید نامجات ملحق بہ غزلیات بانواع سخن ترتیب دادہ کہ ہفتصد وپنجاہ وشش بیت است نواب فی بیت را بحساب یک اشرفی عنایت فرمودہ میر آنرا واپس کردہ دل تنگ شدہ راہی وطن خویش گشت واین اشعار در آخر شکارنامہ کہ واقع است بر آزار دکیش دلیل۔

## اشعار

زمانے میں ہے رسم کہنے کی کچھ
امید اس سے ہے نام رہنے کی کچھ

پے آصف الدولہ میں بھی میر
کہے صیدی نامے بہت بے نظیر

بہت کچھ کہا ہے کرو میر بس
کہ اللہ بس اور باقی ہوس

جواہر تو کیا کیا دکھایا گیا
خریدار لیکن نہ پایا گیا

متاعِ ہنر پھیر لیکر چلو
بہت لکھنو میں رہے گھر چلو

نواب بحر داستماع خبر روانگی از قدردانی در عقبش روان شدہ بمنزل سیوم یافتہ ہمراہ خود آوردہ بحساب فی بیت صدروپیہ دادہ ازانجاکہ میر در فقیروفاقہ بدرجۂ کمال مستغنی بود ہموں وقت آنرا بہ غربا تقسیم فرمودوبعزت واعتبار می زیست



این دوہزار ہشت صدوشعت وپنج اشعار از نتائج افکار اوست۔

ردیف الالف منتخب از دیوان اول میر ۳ صدوشش اشعار۔

تھا مستعار حسن سے اس کے جو نور تھا
خورشید میں بھی اس ہی کا ذرہ ظہور تھا

کل پاؤں ایک کاسۂ سر پر جو آگیا
ایک سر وہ استخوان شکستوں سے چور تھا

کہنے لگا کہ دیکھ کے چل راہ بے خبر
میں بھی کبھو کسو کا سر پُر غرور تھا

تھا وہ تو رشک حور بہشتی ہمیں میں میر
سمجھے نہ ہم تو فہم کا اپنے قصور تھا

کیا میں بھی پریشانی خاطر سے قرین تھا
آنکھیں تو کہیں تھیں دل غم دیدہ کہیں تھا

جانا نہیں کچھ جز غزل آکر لے جہاں میں
کل میرے تصرف میں بھی قطعہ زمیں تھا

نام آج کوئی یہاں نہیں لیتا ہے انہوں کا
جن لوگوں کے کل ملک یہ سب زیرِ نگین تھا

مسجد میں امام آج ہوا آکے وہاں سے

کل تک تو یہی میرؔ خرابات نشین تھا
اس عہد میں الٰہی محبت کو کیا ہوا
چھوڑا وفا کو ان نے مروت کو کیا ہوا
امید وار وعدۂ دیدار مر چلے
آتے ہی آتے یارو قیامت کو کیا ہوا
بخشش نے مجھ کو ابرِ کرم کے کیا خجل
اے چشم جوش اشک ندامت کو کیا ہوا
کب تک تظلم آہ بھلا مرگ کے تئیں
کچھ پیش آیا واقعۂ رحمت کو کیا ہوا
تھی صعب عاشقی کی ہدایت یہی میرؔ پر
کیا جانئے کہ حال نہایت کو کیا ہوا
شبِ ہجر میں کم تظلم کیا
کہ ہمسائیگاں پر ترحم کیا
کہا میں نے کتنا ہی کل کا ثبات
کلی نے یہ سن کر تبسّم کیا
زمانے نے مجھ جرعہ کش کو
کیا خاک و خشت سر خم کیا



جگر ہی میں ایک قطرہ خوں ہے سر شک
پلک تک گیا تو تلاطم کیا
کسو وقت پاتے نہیں گھر اسنے
بہت میرؔ نے آپ کو گم کیا
عہدِ جوانی رو رو کاٹا پیری میں لیں آنکھیں موند
یعنے رات بہت تھی جاگے صبح ہوئی آرام کیا
یہاں کے سفید و سیہ میں ہمکو دخل جو ہے سواتنا ہے
رات کو رو رو صبح کیا یا دن کو جوں توں شام کیا
میرؔ کے دین ومذہب کو اب پوچھتے کیا ہو ان نے تو
قشقہ کھینچا دیر میں بیٹھا کب کا ترک اسلام کیا

## ولہ

الٹی ہو گئیں سب تدبیریں کچھ نہ دوانے کام کیا
دیکھا اس بیچارے دل نے آخر کام تمام کیا
عہد جوانی رو رو کاٹی پیری میں لیں آنکھیں موند
یعنے رات بہت تھی جاگی صبح ہوئی آرام کیا

حرف نہیں جان بخش میں اسکے خوبی اپنی قسمت
ہم سے جو پہلے کہہ بھیجا سو مرنے کا پیغام کیا
ناحق ہم مجبوروں پر یہ تہمت ہے مختاری کی
چاہتے ہیں سو آپ کریں ہیں ہم کو عبث بدنام کیا
سارے انداوباش جہاں کے تجھ سے سجود میں رہتے ہیں
بانکے ٹیڑھے ترچھے تیکھے سب کا تجھ کو امام کیا
سرزد ہم سے بے ادبی تو وحشت میں بھی کم ہی ہوئی
کوسوں آسکے اور گئے پر سجدہ ہر گام کیا
کس کا کعبہ کیسا قبلہ کون حرم کیا احرام
کوچے کے اس کے باشندوں نے سب کو
شیخ جو ہے مسجد میں ننگارات کو تھا میخانے میں
جبہ ،خرقہ، کرتا ، ٹوپی مستی میں انعام کیا
کاش اب برقع منھ سے اٹھادے ورنہ کیا حاصل
آنکھ مندے پر انے گو دیدار کو اپنے عام کیا
یہاں کے سپیدہ سیہ میں ہمکو دخل جو ہے سواتنا ہے
رات کو رو رو صبح کیا یا دن کو جوں توں شام کیا
پیچ چمن میں اسکو کہیں تکلیف ہوالے آئی تھی



رخ سے گل کو مول لیا قامت سے سرو غلام کیا
ساعد سیمین دونو اسکے ہاتھ میں لا کر چھوڑ گئے
بھولے اس کے قول و قسم پر ہائے خیال خام کیا
کام ہوئے ہیں سارے ضایع ہر ساعت کے ساعت میں
استغنا کی چوکنی
ایسے آہوے رم خوردہ کی وحشت
سحر کیا اعجاز کیا جن لوگوں نے تجھکو رام کیا
میر کے دین و مذہب کو اب پوچھتے کیا ہو
قشقہ کھینچا دیر میں بیٹھا کب کا ترک اسلام
منعم نے بنا ظلم کی رکھ گھر تو بنا یا
پر آپ کوئی رات ہی مہمان رہیگا
چھوٹوں کہیں ایذا سے لگا ایک ہی جلاد
تا حشر میرے سر پہ یہ احسان رہیگا
جانے کا نہیں شور سخن کا میرے ہر گز
تا حشر جہاں میں میرا دیوان رہیگا
دل دینے کی ایسی حرکت انے نہیں کی
جب تک جیگا میر پشیمان رہیگا

نے خون ہو آنکھوں سے بہا تک نہ ہوا داغ
اپنا تو یہ دل میرؔ کسو کام نہ آیا

جس سر کو غرور آج ہے یہاں تاجوری کا
کل اس پہ یہیں شور ہے پھر نوحہ گری کا

آفاق کی منزل سے گیا کون سلامت
اسباب لٹا راہ میں یہاں ہر سفری کا

ہر زخم جگر داور محشر سے ہمارا
انصاف طلب ہے تیری بیداد گری کا

ٹک میرؔ جگر سوختہ کی جلد خبر لے
کیا یار بھروسا ہے چراغ سحری کا

قامت خمیدہ رنگ شکستہ بدن نزار
تیرا تو میرؔ غم میں عجب حال ہو گیا

بیتاب جی کو دیکھا دل کو کباب دیکھا
جیتے رہے تھے کیوں ہم جو یہ عذاب دیکھا

آباد جسمیں تجھ کو دیکھا تھا ایک مدت
اس دل کے مملکت کو اب ہم خراب دیکھا

لیتے ہی نام اسکا سوتے سے چونک اٹھے ہو



ہے خبر میرؔ صاحب کچھ تم نے خواب دیکھا

پیدا ہے کہ پنہاں تھی آتش نفس میری
میں ضبط نہ کرتا تو سب شہر یہ جل جاتا

میں گریۂ خونین کو رو کے ہی رہا ورنہ
یکدم میں زمانے کا یہاں رنگ بدل جاتا

استادہ جہاں میں تھا میدان محبت میں
وہاں رستم اگر آتا تو دیکھ کے ٹل جاتا

نالہ ہم خاکساروں کا آخر
خاطر عرش کا غبار ہوا

مر چلے بیقرار ہوکر ہم
اب تو تیرے تئیں قرار ہوا

مانند شمع مجلس شب اشکبار پایا
القصہ میرؔ کو ہم بے اختیار پایا

کیا اعتبار یہاں کا پھر اسکو خوار دیکھا
جس نے جہاں میں آکر کچھ اعتبار پایا

آہوں کے شعلے جس جا اٹھتے تھے میرؔ سے شب
وہاں جا کے صبح دیکھا مشت غبار پایا

مارا زمین میں گاڑا تب اسکو صبر آیا

اس دل نے ہم کو آخر یوں خاک میں ملایا

پوجے سے اور پتھر ہوتے ہیں یہ صنم تو

اب کس طرح اطاعت ان کی کروں خدایا

تا چرخ نالہ پہنچا لیکن اثر نہ دیکھا

کرنے سے اب دعا کے میں ہاتھ ہی اٹھایا

آخر کو مرگئے ہیں اسکی ہی جستجو میں

جی کے تئیں بھی کھویا لیکن اسے نہ پایا

شکوہ کروں میں کب تک اس اپنے مہربان کا

القصہ رفتہ رفتہ دشمن ہوا ہے جان کا

ہر صبح میرے سر پر ایک حادثہ بنا ہے

پیوند ہو زمین کا شیوہ اس آسمان کا

کم فرصتی جہاں کے مجمع کی کچھ نہ پوچھو

احوال کیا کہوں میں اس مجلس روان کا

ناحق یہ ظلم کرنا انصاف کہہ پیارے

ہے کونسی جگہ کا کس شہر کا کہاں کا

پوچھو تو میرؔ سے کیا کوئی نظر پڑا ہے



چہرہ اتر رہا ہے کچھ آج اس جوان کا

میرے سلیقے سے میری نبھی محبت میں

تمام عمر میں ناکامیوں سے کام لیا

سب کھلا باغ جہاں اِلاّ یہ حیران و خفا

جس کو دل سمجھے تھے ہم سو غنچہ تھا تصویر کا

گور مجنوں سے نہ جاوینگے کہیں ہم بینوا

عیب ہے ہم میں جو چھوڑیں ڈھیر اپنے پیر کا

کس طرح سے مانئے یا رو کہ یہ عاشق نہیں

رنگ اڑ جاتا ہے ٹک چہرہ تو دیکھو میرؔ کا

موجیں کرے ہے بحر جہاں میں ابھی تو تو

جا نیگا بعد مرگ کہ عالم حباب تھا

دل جو نہ تھا تو رات زخود رفتگی میں میرؔ

گہہ انتظار وگاہ مجھے اضطراب تھا

کیا طرح ہے آشنا گاہے گہی نا آشنا

یا تو بیگانے ہی رہیئے ہو جئے یا آشنا

پا یمال صد جفا ناحق نہ ہوا ے عندلیب

سبزۂ بیگانہ یہی تھا اس چمن کا آشنا

بلبلیں پائیز میں کہتے تھیں ہوتا کاشکے
یک مزہ رنگ قراری اس چمن کا آشنا
گو گل ولالہ کہاں سنبل سمن ہم نسترن
خاک سے یکساں ہوے ہیں ہاے کیا کیا آشنا
داغ ہے تابان علیہ الرحمہ کا چھاتی پہ میر
ہو نجات اس کو بیچارہ ہم سے بھی تھا آشنا
مفت آبروئے زاہد علامہ لے گیا
یک مغنچہ اتار کے عمامہ لے گیا
داغ فراق و حسرت و صل آرزوئے شوق
میں ساتھ زیر خاک بھی ہنگامہ لے گیا
پہنچا نہ پہنچا آہ گیا سو گیا غریب
وہ مرغ نامہ بر جو میرانامہ لے گیا
چھوٹا جو میں قفس سے تو سب نے مجھے کہا
بیچارہ کیونکہ تا سر دیوار جائیگا
تو بیر میرے عشق کی کیا فایدہ طبیب
اب جان ہی کے ساتھ یہ آزار جائیگا
کیا کہوں کیسا ستم غفلت سے مجھ پر ہو گیا



قافلہ جاتا رہا میں صبح ہوتے سو گیا
یکسی مدت تلک بر سا کے اپنے گور پر
جو ہماری خاک پر سے ہو کے گذرا رو گیا
مدعا جو ہے سو وہ پایا نہیں جاتا کہیں
ایک عالم جستجو میں جی کو اپنے کھو گیا
مت ہو دشمن اے فلک نجھ پایمال راہ کا
خاک افتادہ ہوں میں بھی ایک فقیر اللہ کا
سر خرو لاتی نہیں ہمت میری ہر ایک پاس
ہوں گدائے آستان میں میر حضرت شاہ کا
میں داڑھی تیری واعظ مسجد ہی میں منڈھواتا
پر کیا کروں ساتھ اپنے حجام نہیں رکھتا
گرمی عشق مانع نشو و نما ہوئی
میں وہ نہیں تھا کہ اگا اور جل گیا
مستی میں چھوڑ دیر کو کعبے چلا تھا میں
لغزش پڑی ہوئی تھی و لیکن سنبھل گیا
گذرا بنائے چرخ سے نالہ پگاہ کا
خانہ خراب ہو جیو اس دل کی چاہ کا

ایک قطرہ خوں ہو کے پلک سے ٹپک پڑا
قصّہ یہ کچھ ہوا دلِ غفران پناہ کا

بد نام و خوار زار و نزار و شکستہ حال
احوال کچھ نہ پوچھئے اس رو سیاہ کا

اے تاج شہ نہ سر کو فرولاؤں تیرے پاس
ہے معتقد فقیر نمد کے کلاہ کا

بیمار تو نہووے جئے جب تلگ کہ میرؔ
سونے نہ دیگا شور تیری آہ آہ کا

دل سے شوق رخ نکو نہ گیا
جھانکنا تانکنا کبھو نہ گیا

سب گئے ہوش و صبر و تاب و تواں
لیکن اے داغ دل سے تو نہ گیا

تیرہ عالم ہوا یہ روز سیاہ
اپنے دل کے غبار میں دیکھا

جن بلاؤں کو میرؔ سنتے تھے
ان کو اس روزگار میں دیکھا

کئی دن سلوک و داع کا مرے رہے دل زار تھا



کبھو درد تھا کبھو داغ تھا کبھو زخم تھا کبھو وار تھا
دمِ صبح بزم خوش جہاں شب غم سے کم نہ تھی مہربان
کہ چراغ تھا سو تو دود تھا جو پتنگ تھا سو غبار تھا
دل مضطرب سے گذر گئی شب وصل اپنی ہی فکر میں
نہ دماغ تھا نہ فراغ تھا نہ شکیب تھا نہ قرار تھا
نہیں تازہ دل کی شکستگی یہی درد تھا یہی خستگی
اسے جب سے ذوقِ شکار تھا اسی زخم سے سروکار تھا
کبھو جائیگی جو ادھر صبا تو یہ کہیو اس سے کہ بیوفا
مگر ایک میرؔ شکستہ پا تیرے باغ تازہ میں خار تھا

مہر کی تجھ سے توقع تھی ستمگر نکلا
موم سمجھے تھے تیرے دل کو سو پتّھر نکلا

اشک تر قطرہ خون لختِ جگر پارہ دل
ایک سے ایک عدد آنکھ سے بہتر نکلا

گنج کاوی جو کے سینے کے غم ہجران نے
اس دفینہ میں سے اقسام جواہر نکلا

ہم نے جانا تھا لکھیگا تو کوئی حرف اے میرؔ
پر ترا نامہ تو یک شوق کا دفتر نکلا

نہیں ستارے یہ سوراخ پڑگئے ہیں تمام
فلک حریف ہوا تھا ہمارے آہوں کا
حساب کا ہیکا روز شمار میں مجھ سے
شمار ہی نہیں ہے کچھ میرے گناہوں کا
ہم رہروان راہ فنا ہیں ہر نگ عمر
جاوینگے ایسے کھوج بھی پا یا نہ جا ئیگا
پھوڑا سا ساری رات جو پکتا رہے گا دل
تو صبح تک تو ہاتھ لگا یا نہ جائیگا
یاد اسکی اتنی خوب نہیں میرؔ باز آ
نادان پھر وہ جی سے بھلا یا نہ جائیگا
دھوکا ہے تمام بحر دنیا
دیکھے گا کہ ہونٹ تر نہ ہو گا
دنیا کی نہ کر تو خواستگاری
اس سے کبھو بہرہ ورنہ ہو گا
آ خانہ خرابی اپنی مت کر
قحبہ ہے یہ اس سے گھر نہ ہوگا
ہو اس سے جہاں رو سیاہ تو بھی



نالے میں میرے اثر نہ ہو گا
پھر نوحہ گری کہاں جہاں میں
ماتم زدہ میرؔ اگر نہ ہوگا
غم اسکو ساری رات سنا یا تو کیا ہوا
یا روز اٹھ کے سر کُو پھرا یا تو کیا ہوا
ان نے تو مجھ کو جھوٹے بھی پوچھا نہ ایکبار
میں نے اسے ہزار جتا یا تو کیا ہوا
مت رنج کر کسی کو اپنے تو اعتقاد
دل ڈھائے کر جو کعبہ بنا یا تو کیا ہوا
کیا کیا دعائیں مانگی ہے خلوت میں شیخ یوں
ظاہر جہاں سے ہاتھ اٹھا یا تو کیا ہوا
وہ فکر کر کہ چاک جگر پاوے التیام
ناصح جو تو نے جامہ سلایا تو کیا ہوا
جیتے تو میرؔ ان نے مجھے داغ ہی رکھا
پر گور پر چراغ جلایا تو کیا ہوا
گرچہ سردار مزوں کا ہے امیری کا مزا
چھوڑ لذت کتیئں لے تو فقیری کا مزا

ایک آزاد ہے ٹک چک نمک مرغ کباب
تاتو جانے کہ یہ ہوتا ہے اسیری کا مزا
دل جو تھا یک آبلہ پھوٹا گیا
رات کو سینہ بہت کوٹا گیا
طایر رنگ حنا کے سی طرح
دل نہ اسکے ہاتھ سے چھوٹا گیا
میں نہ کہتا تھا کہ منھ کر دل کے اور
اب کہاں وہ آئینہ ٹوٹا گیا
دل کی ویرانی کا کیا مذکور ہے
یہ نگر سو مرتبہ لوٹا گیا
میرؔ کس کو اب دماغ گفتگو
عمر گذری ریختہ چھوٹا گیا
اتنی گذری جو تیرے ہجر میں سو اسکے سبب
صبر مرحوم عجب مونس تنہائی تھا
اے دوست کوئی مجھ سا رسوا نہ ہوا ہوگا
دشمن کے بھی دشمن پر ایسا نہ ہوا ہوگا
ٹک گور غریباں کی کر سیر کہ دنیا میں



ان ظلم رسیدوں پر کیا کیا نہ ہوا ہو گا
ہے قاعدۂ کلی یہ کوئے محبت میں
دل گم جو ہوا ہوگا پیدا نہوا ہو گا
اس کہنہ خرابی میں آبادی نہ کر منعم
ایک شہر نہیں یہاں جو صحرا نہوا ہو گا
جز مرتبۂ گل کو حاصل کرے ہے آخر
ایک قطرہ نہ دیکھا جو دریا نہوا ہوگا
صد نشتر مژگان کے لگنے سے نہ نکلا خون
آگے تجھے میرؔ ایسا سودا نہوا ہوگا
عالم میں کوئی دل کا طلبگار نہ پایا
اس جنس کا یہاں ہم نے خریدار نہ پایا
حق ڈھونڈھنے کا آپ کو آتا نہیں ورنہ
عالم ہے سبھی یار کہاں یار نہ پایا
مربوط ہیں تجھ بھی یہی ناکس و نااہل
اس باغ میں ہم نے گل بے خار نہ پایا
دم بعد جنون مجھ میں نہ محسوس تھا یعنے
جامے میں میرے یاروں نے یکتار نہ پایا

خواہ مجھ سے لڑ گیا اب خواہ مجھ سے مل گیا
کیا کہوں اے ہمنشین میں تجھ سے حاصل دل گیا
اپنے ہی دل کو نہ ہوا شد تو کیا حاصل نسیم
گو چمن میں غنچہ پژ مردہ تجھ سے کھل گیا
دل سے آنکھوں میں لہو آتا ہے شاید رات کو
کشمکش میں بیقراری کے یہ پھوڑا چھل گیا
فیس کا کیا کیا گیا ادھر و دین ہوش و صبر
جس طرف صحرا سے لیلیٰ کا چلا محمل گیا
رشک کی جا گا ہے مرگ اس کشتۂ حسرت کی میرؔ
نعش کے ہمراہ جس کی گور تک قاتل گیا

تابہ مقدور انتظار کیا
دل نے اب زور بے قرار کیا
دشمنی ہم سے کی زمانے نے
کہ جفا کار تجھ سا یار کیا
یہ تو ہم کا کار خانہ ہے
یہاں وہی ہے جو اعتبار کیا
سخت کافر تھا جن نے پہلے میرؔ



مذہب عشق اختیار کیا
سمجھے تھے میرؔ ہم کہ یہ ناسور کم ہوا
پھر ان دنوں میں دیدۂ خونبار نم ہوا
کافر ہمارے دل کی نہ پوچھ اپنے عشق میں
بیت الحرام تھا سو وہ بیت الصنم ہوا
آئی نظر جو گور سلیمان کی ایک روز
کوچے پر اس مزار کے تھا یہ رقم ہوا
کای سرکشاں جہاں میں کھینچا تھا ہم بھی سر
پایاں کار مور کے خاکِ قدم ہوا
کیا کیا عزیز دوست ملے میرؔ خاک میں
نادان یہاں کسو کو بھی غم ہوا
افسوس کی یہی چشم ان سے خلاف عقل
بار علاقہ سے تو عبث پشت خم ہوا
اہل جہاں ہیں سارے تیرے جیتے جی تلک
پوچھیں گے بھی نہ بات جہاں تو عدم ہوا
دل کے تئیں آتش ہجراں سے بچا یا نہ گیا
گھر جلا سامنے پر ہم سے بجھا یا نہ گیا

دل میں رہ دل میں کہ معمار قضا سے ابتک
ایسا مطوع مکان کو ہ بنا یا نہ گیا
شہر دل آہ عجب جایئے تھی پر اسکے گئی
ایسا اجڑا کہ کسطرح بنا یا نہ گیا
بلا جس چشم کو کہتے ہیں مردم
وہ ہے عین بلا مسکن ہمارا
ہوا رونے سے راز دوستی فاش
ہمارا گر یہ تھا دشمن ہمارا
نہ پہنچے میکدے میں میر کیونکر
گرو سو جا ہے پیراہن ہمارا
گلیوں میں اب تلک بھی مذکور ہے ہمارا
افسانہ محبت مشہور ہے ہمارا
مقصود لو تو دیکھیں کب تک پہنچتے ہیں ہم
بالفصل اب ارادہ تا گور ہے ہمارا
کیا آرزو تھی جس سے سب چشم ہوگئے ہیں
ہر زخم سوجگہ سے ناسور ہے ہمارا
ہیں مشت خاک لیکن جو کچھ نہیں میر ہم ہیں



مقدور سے زیادہ مقدور ہے ہمارا
کر وگے یاد باتیں تو کہو گے
کہ کوئی رفتہ بسیار گو تھا
جہاں پر ہے فسانے سے ہمارے
دماغ عشق ہم کو بھی کبھو تھا
مگر دیوانہ تھا کل بھی کسو کا
کہ پیراہن میں سو جگہ رفو تھا
نہ دیکھا میر آوارہ کو لیکن
غبار یک ناتواں ساکو بکو تھا
راہ دور عشق میں روتا ہے کیا
آگے دیکھئے ہو تا ہے کیا
قافلے میں صبح کے ایک شور ہے
یعنے غافل ہم چلے سوتا ہے کیا
سبز ہوتی ہی نہیں یہ سر زمین
تخم خواہش دل میں تو بو تا ہے کیا
غیرت یوسف ہے یہ وقت عزیز
میر اسکو رایگاں کھوتا ہے کیا

رونا ٹک یک تھا تو غم پیکراں سہا
دس دن رہے ہم سو رہا رہا
پہلو میں ایک گرہ سی تہ خاک ساتھ ہے
شاید کہ مرگئے پہ بھی خاطر میں کچھ رہا
آنکھوں نے راز داری محبت کی خوب کی
آنسو جو آتے آتے رہے. تو لہو بہا
کس کس طرح سے میرؔ نے کاٹا ہے عمر کو
اب آخر آخر آن کے یہ ریختہ کہا
شمع سان جلتی رہی ہے لیکن نہ تو ڑایار سے
رشتۂ الفت تمامی عمر گردن میں رہا
ہم نہ کہتے تھے کہ مت دیرو حرم کی راہ چل
اب یہ دعوی حشر تک شیخ و برہمن میں رہا
وہ دشت خوفناک رہا ہے مراوطن
سنکر جسے خضر نے سفر سے حذر کیا
کچھ کم نہیں ہیں شعبہ ہ بازوں سے میگسار
دارو پلا کے شیخ کو آدم سے خر کیا
ہیں چاروں طرف خیمے کھڑے گردباد کے



کیا جانئے جنوں نے ارادہ کدھر کیا
کچھ نہ دیکھا پھر بجز یک شعلۂ پر پیچ و تاب
شمع تک ہم نے تو دیکھا تھا کہ پروانہ گیا
ایک ہی چشمک تھی صحبت احباب کی
دیدۂ تر ساتھ لے مجلس سے پیمانہ گیا
گل کھلے صدرنگ تو کیا بے پری سے اے نسیم
مدتیں گذریں کہ وہ گلزار کا جانا گیا
محبت کا جب روز بازار ہو گا
بکینگے سر اور کم خریدار ہو گا
عجب شیخ جی کی ہے شکل و شمایل
ملیگا تو صورت سے بیزار ہوگا
نہ پوچھ اپنی مجلس میں ہے میرؔ بھی یہاں
جو ہوگا تو جی سے گنہگار ہو گا
اشک. آنکھوں میں کب نہیں آتا
لہو آتا ہے جب نہیں آتا
صبر تھا ایک مونس ہجراں
سو وہ مدت سے اب نہیں آتا

دل سے رخصت ہوئی کوئی خواہش
گریہ کچھ بے سبب نہیں آتا
دور بیٹھا غبار میر اس سے
عشق میں یہ ادب نہیں آتا

کب تک تو امتحان میں مجھ سے جدا رہیگا
جیتا ہوں تو تجھی میں یہ دل لگا رہیگا
یہاں ہجر اور ہم میں بگڑے ہے کب کی صحبت
زخم دل و نمک میں کب تک مزا رہیگا
عمر عزیز ساری دل ہی کے غم میں گذری
بیمار عاشقی یہ کس دن بھلا رہیگا
کیا ہے جواہ اٹھ گیا ہے پر بستہ وفا ہے
قید حیات میں ہے تو میر آرہیگا
جو یہ دل ہے تو کیا سر انجام ہوگا
تہ خاک بھی خاک آرام ہوگا
نہ نکلا کر اتنا بھی ہے پردہ گھر سے
بہت اسمیں ظالم تو بد نام ہوگا
جگر چاکی ناکامی دینا ہے آخر



نہیں آئے جو میر کچھ کام ہوگا
بار ہا گور دل جھکا لایا
اب کی شرط وفا بجا لایا
نہ نکلا گراتنا بھی بے پردہ گھر سے
بہت اسمیں ظالم تو بدنام ہوگا
قدر رکھتی نہ تھی متاع دل
سارے عالم میں میں دکھا لایا
ابتدا ہی میں مرگئے سب یار
عشق کی کون انتہا لایا
اب تو جاتے ہیں بتکدے سے میر
پھر ملینگے اگر خدا لایا
جوں برگ ہائے لالہ پریشان ہوگیا
مذکور کیا ہے اب جگر لخت لخت کا
دلی میں آج بھیک بھی ملتی نہیں انہیں
تھا کل تلک دماغ جنہیں تاج و تخت کا
ہم عشق میں نہ جانا غم ہی سدا رہیگا
دس دن جو ہے یہ مہلت سو یہاں وہاں رہیگا

برقع اٹھے پہ اسکے ہوگا جہان روشن
خورشید کا نکلنا کیونکر چھپا رہیگا

دل ہی کہ غم میں گذری اپنی تو عمر ساری
بیمار عاشقی یہ کس دن بھلا رہیگا

دانستہ ہے تغافل غم کہنا اس سے حاصل
تم درد دل کہوگے وہ سر جھکا رہیگا

معیشت ہم فقیروں کی سی اخواں زمان سے کر
کوئی گالی بھی دے تو کہہ بھلا بھائی بھلا ہوگا

عجب کیا ہے ہلاک عشق میں فرہاد و مجنوں کے
محبت روگ ہے کوئی کہ کم اس سے جیا ہوگا

یہاں نام مارکس کا ور دزبان نہ پایا
پر مطلقاً کہیں ہم اسکا نشان نہ پایا

ایسی ہے میرؔ کی بھی مدت سے روتے صورت
چہرہ پہ اسکے کس دن آنسو رواں نہ پایا

یہ عیش گاہ نہیں ہے یہاں رنگ اور کچھ ہے
ہر گل ہے اس چمن میں ساغر بھرا لہو کا

بلبل غزل سرائی آگے ہماری مت کر



سب ہم سے سیکھتے ہیں انداز گفتگو کا
دے پہلے التفاتیں ساری فریب نکلیں

دیتا نہ تھا دل اسکو میں میرؔ آہ چوکا
پیغام غم جگر کا گلزار تک نہ پہنچا

نالہ میرا چمن کے دیوار تک نہ پہنچا
یہ بخت سبز دیکھو باغ زمانے میں سے

پژمردہ گل بھی اپنے دستار تک نہ پہنچا
شرکت شیخ و برہمن سے میرؔ

کعبہ و دیر سے بھی جائیگا
اپنی ڈیڑھ اینٹ کی جدی مسجد

کس ویرانے میں بنائیگا
دل پہنچا ہلاکی کو نپٹ کھینچ کسالا

لے یار میرے سلمہ اللہ تعالی
کچھ میں نہیں اس دل کی پریشانی کا باعث

برہم ہے میرے ہاتھ لگا تھا یہ رسالا
ممکن نہیں کہ کل کرے ویسی شگفتگی

اس سرزمین میں تخم محبت میں بو چکا

ہر صبح حادثے سے یہ کہتا ہے آسماں
دے جام خون میرؔ کو گر منھ وہ دھوچکا

جوں صبح اب کہاں ہے طول سخن کی فرصت
قصہ ہے کوئی دم کو ہے مختصر ہمارا

یوں دور سے کھڑے ہوکیا معتبر ہے رونا
دامن سے باندھ دامن اے ابر تر ہمارا

اس کا رواں سرا میں کیا میرؔ بار کھولیں
یہاں کوچ لگ رہا ہے شام و سحر ہمارا

غم رہا جب تلک کہ دم میں دم رہا
دل کے جانے کا نہایت غم رہا

دل نہ پہنچا گوشۂ دامان تلک
قطرۂ خوں تھا مژہ پر جم رہا

سنتے ہیں لیلیٰ کے خیمے کو سیاہ
اس میں مجنوں کا مگر ماتم رہا

جامۂ احرام زاہد پر نہ جا
تھا حرم میں لبک نامحرم رہا

میرے رونے کی حقیقت جسمیں تھی



ایک مدت تک وہ کاغذ نم رہا
صبح پیری شام ہونے آئی میرؔ
تو نہ جیتا یہاں بہت دن کم رہا

دہر میں میں خاک بسر ہی رہا
عمر کو اس طور بسر کرگیا

دل نہیں ہے منزل سینے میں اب
یہاں وہ بیچارہ سفر کرگیا

کس کو میرے حال سے تھی آگہی
نالۂ شب سب کو خبر کر گیا

مجلس آفاق میں پروانہ سان
میرؔ بھی شام اپنی سحر کرگیا

آیا جو واقعی میں در پیش عالم مرگ
یہ جاگنا ہمارا دیکھا تو خواب نکلا

ہر حرف غم نے میری مجلس کے تئیں رولایا
گویا غبار دل کا پڑھتا کتاب نکلا

داماں کوہ میں جو میں ڈاڑھ مار رویا
ایک ابر وان سے اٹھکر بے اختیار رویا

سمجھا تو مجھے مرگ کے نزدیک پس از دیر
رحمت ہے میرے یار بہت دور سے آیا
میں صید رمیدہ ہوں بیابانِ جنون کا
رہتا ہے مرا موجب وحشت مرا سایا
یا قافلہ در قافلہ ان رستوں تھے جو لوگ
یا ایسے گئے یہاں سے کہ پھر کھوج نہ پایا
دل ایسے جو زیر غبار اکثر تھا
کچھ مزاج ان دنون مکدر تھا
اس پہ تکیہ کیا تو تھا لیکن
رات دن ہم تھے اور بستر تھا
سر سری تم جہاں سے گذرے
ورنہ ہر جا جہانِ دیگر تھا
دل کی کچھ قدر کرتے رہو تم
یہ ہمارا بھی ناز پرور تھا
اب خرابہ ہوا جہاں آباد
ورنہ ہر یک قدم پہ یہاں گھر تھا
بے زری کا نہ کر گلہ غافل



رہ تسلی کہ یوں مقدر تھا
اتنے منعم جہاں میں گذرے
وقت رحلت کے کس کنے زر تھا
صاحب جاہ و شوکت واقبال
یک از انجملہ اب سکندر تھا
تھی یہ سب کائنات زیر نگین
ساتھ مور و ملخ سا لشکر تھا
لعل و یاقوت و ہم زرو گوہر
چاہیئے جس قدر میسر تھا
آخر کار جب جہاں سے گیا
ہات خالی کفن سے باہر تھا
خوش رہا جب تلک رہا جیتا
میرؔ معلوم ہے قلندر تھا
ہم دیئے ہیں سن رکھیو تم مرجائیں رک کے یکجا
کیا کوچہ کوچہ پھرنا عنوان ہے ہمارا
کرتے ہیں باتیں کس کس ہنگامے کے یہ زاہد
دیوان حشر گویا دیوان ہے ہمارا

ماہیت دو عالم کھاتے پھرے ہے غوطے
یک قطرہ خون یہ دل طوفان ہے ہمارا
کیا خاندان کا اپنے تجھ سے کہیں تقدس
روح القدس ایک ادنے دربان ہے ہمارا
کرتا ہے کام وہ دل جو عقل میں نہ آوے
گھر کا مشیر کتنا نادان ہے ہمارا
رات حیران ہوں کچھ چپ ہی مجھے لگ گئی میرؔ
درد پنہاں تھے بہت پر لب اظہار نہ تھا
اے ابر اس چمن میں نہ ہو گا گل اُمید
یہاں تخم یاس اشک کو میں پھر کے بو دیا
پوچھا جو میں نے درد محبت سے میرؔ کو
رکھ ہاتھ ان نے دل پہ ٹک یک اپنے رو دیا
ہوتا ہے یاں جہاں میں ہر روز و شب تماشا
دیکھا جو خوب تو ہے دنیا عجب تماشا
طالع جو میرؔ خواری محبوب کو خوش آئی
پر غم یہ ہے مخالف دیکھیں گے سب تماشا
حسرت اسکی جگہ تھی خوابیدہ



میرؔ کا کھول کر کفن دیکھا
قاصد جو وہاں سے آیا تو شرمندہ میں ہوا
بیچارہ گر یہ ناک گریبان دریدہ تھا
مت پوچھ کس طرح سے کٹی رات ہجر کی
ہر نالہ میری جان کو تیغ کشیدہ تھا
دل بیقرار گریہ خونین تھا رات میرؔ
آیا نظر تو بسمل در خون طپیدہ تھا
شکر صد شکر کہ میں ذلت و خواری کے سبب
کسی عنواں میں ہمچشم عزیزان نہ ہوا
کونسی رات زمانے میں گئی جسمیں میرؔ
سینہ چاک سے میں دست و گریبان ہوا
کس کی ہوا کہاں کا گل ہم تو قفس میں ہیں اسیر
سیر چمن کی روز و شب تجھ کو مبارک اے صبا
بوے کباب سوختہ آتی ہے کچھ دماغ میں
ہووے نہووے اے نسیم رات کسی کا دل جلا
یادش بخیر دشت میں مانند عنکبوت
دامن کے اپنے تار جو خاروں پہ تن گیا

مارا تھا کس لباس میں عریانی نے مجھے
جس سے تہِ زمین بھی میں بے کفن گیا
آئی اگر بہار تو اب ہم کو کیا صبا
ہم سے تو آشیان بھی گیا اور چمن گیا
سر سبز ملک ہند میں ایسا ہوا کہ میرؔ
یہ ریختہ لکھا ہوا تیرا دکھن گیا
اس قید حبیب سے میں چھوٹا جنون کے دولت
ورنہ گلا یہ میرا جون طوق میں پھنسا تھا
روتی ہے شمع اتنا ہر شب کے کچھ نہ پوچھو
میں سوز دل کو اپنے مجلس میں کیوں کہا تھا
جو اس شور سے میرؔ روتا رھیگا
تو ہمسایہ کاہیکو سوتا رھیگا
میں وہ رونے والا جہاں سے چلا ہوں
جسے ابر ہر سال روتا رھیگا
مجھے کام رونے سے اکثر ہے ناصح
تو کب تک مرے منھ کو دھوتا رھیگا
بس اے گریہ آنکھیں ترے کیا نہیں ہیں



کہاں تک جہاں کو ڈبوتا رھیگا
میرے دل نے وہ نالہ پیدا کیا ہے
جرس کے بھی جو ہوش کھوتا رھیگا
بس اے میرؔ مژگاں سے پونچھ آنسوؤں کو
تو کب تک یہ موتی پروتا رھیگا
ہم اسیروں کو بھلا کیا جو بہار آئے نسیم
عمر گذری کہ وہ گلزار کا جانا ہی گیا
دل عشق کا ہمیشہ حریف نبرد تھا
اب جس جگہ کہ داغ ہے یہاں آگے درد تھا
عاشق ہیں ہم تو میرؔ کے بھی ضبط عشق کے
دل جل گیا تھا اور نفس لب پہ سرد تھا
مت مانیو کہ ہوگا یہ بیدرد اہل دین
گر آوے شیخ پہن کے جامہ قرآن کا
آخر کو خاک ہونا در پیش ہے سبھوں کا
ٹک دیکھ منھ کدھر ہے قامت خمید گاں کا
صحرا میں سیل اشک مرا جابجا پھرا
مجنوں بھی اسکی موج میں مدت بہا پھر

طالع جو خوب تھے تو ہوا جاہ کچھ نصیب
سر پر میرے کروڑ برس تک ہما پھرا
آنکھیں برنگ نقش قدم ہو گئیں سفید
نامے کے انتظار میں قاصد بھلا پھرا
ٹک بھی نہ مڑ کے میری طرف تو نے کی نگاہ
ایک عمر تیرے پیچھے میں ظالم لگا پھرا
دیر و حرم میں کیونکر قدم رہ سکیگا میرؔ
ادھر تو اس سے بت پھرے ادھر خدا پھرا
کیا میرؔ ہے یہی جو تیرے در پہ تھا کھڑا
نمناک چشم خشک لب و رنگ زرد سا
خزاں التفات اس پہ کرتی بجا تھی
یہ غنچہ چمن میں ابھی وا ہوا تھا
زہے طالع اے میرؔ ان نے یہ پوچھا
کہاں تھا تو اب تک تجھے کیا ہوا تھا
آہ کے تئیں دل حیران و خفا کو سونپا
میں نے یہ غنچۂ تصویر صبا کو سونپا
اب تو جاتا ہی ہے کعبہ کو تو بتخانے سے



جلد پھر پہنچیو اے میرؔ خدا کو سونپا
جلوہ ہے اسی کا سب گلشن میں زمانے کے
گل پھول کو ہے ان نے پر دہ سا بنا رکھا
جوں برگ خزاں دیدہ سب زرد ہوے ہم تو
گرمی نے ہمیں دل کے آخر کو جلا رکھا
آہِ سحر نے سوزش دل کو مٹادیا
اس باؤ نے ہمیں تو دیا سا بجھا دیا
پوشیدہ ماز عشق چلا جاے تھا سو آج
بے طاقتی نے دل کے وہ پر دہ اٹھا دیا
اس موج خیز دہر میں ہم کو قضا نے آہ
پانی کے بلبلے کی طرح سے مٹا دیا
سب شور ماومن کوئے سر میں مرگئے
یاروں کو اس فسانے نے آخر سلادیا
آوار گان عشق کا پوچھا جو میں نشان
مشت غبار لیکے صبا نے اڑادیا
اجزابدن کے جتنے تھے پانی ہو بہ گئے
آخر گداز عشق نے ہم کو بہا دیا

کیا کچھ نہ تھا ازل میں نہ طالع جو تھے درست
ہم کو دل شکستہ قضا نے دلا دیا
ہم نے تو سادگی سے کیا جی کا بھی زیان
دل جو دیا تھا سو تو دیا سر جدا دیا
بوئے کباب سوختہ آئی دماغ میں
شاید جگر بھی آتش غم نے جلا دیا
تکلیف درد دل کی عبث ہمنشین نے کی
درد سخن نے میرے سبھوں کو رلا دیا
ان نے تو تیغ کھینچی تھی پر جی جلا کے میرؔ
ہم نے بھی ایکدم میں تماشا دکھا دیا
نظر میں آوے گا جب جی کا کھونا
ملیگا نیند بھر تب مجھ کو سونا
مرا خون تجھ پہ ثابت ہی کرے گا
کنارے بیٹھ کر ہاتھوں کو دھونا
وصیت میرؔ نے مجھ کو بھی کی
کہ سب کچھ ہونا تو عاشق نہ ہونا
اس آستان داغ سے میں زرلیا گیا



گلدستہ دستہ جسکو چراغ دیا گیا
کیا بعد مرگ یاد کروں گا وفا تجھے
سہتا رہا جفا میں میں جب تک رہا جیا
اب وہ جگر طپش سے تڑپتا ہے تشنہ لب
مدت تلک جو میرؔ کا لہو پیا کیا
تیری ہی رہگذر میں یہ جی رہا ہے شوخ
سینو کہ میرؔ آج ہی کل میں گذر گیا

ردیف الالف منتخب از دیوان دوم میرؔ یک صد و ہشتا دوچہار اشعار۔

ہر ذی حیات کا ہے سبب جو حیات کا
نکلے ہے جی ہی اسکے لئے کائنات کا
ہے مستحیل خاک سے اجزاے نوخطان
کیا سہل ہے زمین سے نکلے عین ذات کا
ہر صفحے میں ہے محو کلام اپنا دس جگہ
مصحف کو کھول دیکھ ٹک انداز بات کا
ہم مذنبوں میں صرف کرم سے ہے گفتگو
مذکور ذکر یہاں نہیں صوم و صلوات کا

کیا میر تجھ کو نامہ سیا ہی کا فکر ہے
ختم رسل سا شخص ہے ضامن نجات کا
جلوہ نہیں ہے نظم میں حسن قبول کا
دیوان میں شعر گر نہیں نعتِ رسول ؐ کا
حق کی طلب ہے کچھ تو محمدؐ پر ست ہو
ایسا وسیلہ ہے بھی خدا کے وصول کا
مطلوب ہے زماں و مکان جہاں سے
محبوب ہے ملک کا فلک کا عقول کا
احمد کو ہم نے جان رکھا ہے وہی احد
مذہب کچھ اور ہوگا کسی ابو الفضول کا
جن مردمان کو آنکھیں وپان خدا نے دے
سرمہ کریں ہیں رہ کے تیری خاک دھول کا
مقصود ہے علیؑ کا ولی کا سبھی کا تو
ہے قصد سب کو تیری رضا کے حصول کا
جو معتقد نہیں ہے علیؑ کے کمال کا
ہر بال اسکے تن پہ ہے موجب وبال کا
پایا علی کو جا کے محمد ؐ نے اس جگہ
جس جانہ تھا لگاؤ گمان و خیال کا



توڑا بتوں کو دوشِ نبیؐ پر قدم کو رکھ
چھوڑا نہ نام کعبے میں کفر و ضلال کا
فکر نجات میرؔ کو کیا مدح خوان ہے وہ
اولاد کا علیؑ کے محمدؐ کے آل کا
لذت سے نہیں خالی جانوں کا کھپا جانا
کب خضرؑ و مسیحا نے مر نے کا مزا جانا
ہم جاہ و حشم یہاں کا کیا کہئے کہ کیا جانا
خاتم کو سلیمان کے انگشتر پا جانا
یہ بھی ہے ادا کو ئی خورشید نمط پیارے
منھ صبح دکھا جانا پھر شام چھپا جانا
گردن کشی کیا حاصل مانند بگوے کے
اس دشت میں سر گاڑے جون سیل چلا جانا
اس گریۂ خونین کا ہو ضبط تو بہتر ہے
اچھا نہیں چہرے پہ لہو کا بہا جانا
کیا پانی کے مول آکر مالک نے گھر بیچا
ہے سخت گراں سستا یوسف کا بکا جانا
کب میرؔ بسر آئے تم ویسی فریبی سے
دل کو تو لگا بیٹھے لیکن نہ لگا جانا

پائے خطاب کیا کیا دیکھے عتاب کیا کیا
دل کو لگا کے ہم نے کھینچے عذاب کیا کیا
انواع جرم میرے پھر بے شمار و بے حد
روز حساب لینگے مجھ سے حساب کیا کیا
افراط شوق میں تو رویت رہی نہ مطلق
کہتے ہیں میرے منھ پر اب شیخ و شاب کیا کیا
پھر پھر گیا ہے آکر منھ تک جگر ہمارے
گذرے ہے جان و دل پر یہاں اضطراب کیا کیا
کچھ سوچتا نہیں ہے مستی میں میر جی کو
کرتے ہیں پوچ گوئی پی کر شراب کیا کیا
جھمکی دکھا کے طور کو جن نے جلا دیا
آئی قیامت ان نے جو پردہ اٹھا دیا
اس فتنے کو جگا کے پشیمان ہوئی نسیم
کیا کیا عزیز لوگوں کو ان نے سلا دیا
اب بھی دماغ رفتہ ہمارا ہے عرش پر
گو آسمان نے خاک میں ہم کو ملا دیا
جانے نہ قدر اس گہر شب چراغ کی
دل ریزۂ خزف کی طرح میں اٹھا دیا



تقصیر جان دینے میں ہم نے کبھو نہ کی
جب تیغ وہ بلند ہوئی سر جھکا دیا
گرمی چراغ کی سی نہیں وہ مزاج میں
اب دل فسردگی سے ہوں جیسے بجھا دیا
وہ آگ ہو رہا ہے خدا جانے غیر نے
میری طرف سے اسکے تئیں کیا لگا دیا
اب گھٹتی گھٹتی جان میں طاقت نہیں رہی
ٹک لک چلی صبا کہ دیا سا بڑھا دیا
تنگی لگا ہے کرتے دم اپنا بھی ہر گھڑی
کترھنے نے دل کے جی کو ہمارے کھپا دیا
کیا کیا زیان میرؔ نے کھینچے ہیں عشق میں
دل ہاتھ سے دیا ہے جدا سر جدا دیا
بہتوں کو آگے تھا یہی آزار عشق کا
جیتا رہا ہے کوئی بھی بیمار عشق کا
بے پردگی بھی جاہ کا ہوتا ہے لازمہ
کھلتا ہی ہے زندان یہ اسرار عشق کا
زندانے سیکڑوں میرے آگے رہا ہوے
چھوٹا نہ میں ہی تھا جو گنہگار عشق کا

خواہاں مرگ میں ہیں ہوا ہوں مگر بنا
جی پیچھے ہے پھرے ہے خریدار عشق کا
منصور نے جو سر کو کٹا یا تو کیا ہوا
ہر سر کہیں ہوا ہے سزاوار عشق کا
جاتا وہی سنا ہمہ حسرت جہاں سے
ہوتا ہے جس کسو سے بہت پیار عشق کا
لگ جاے دل کہیں تو اسے جی میں اپنے رکھ
رکھتا نہیں شگون کچھ اظہار عشق کا
چھوٹا جو مر کے قید عبارات میں پھنسا
القصہ کیا رہا ہو گرفتار عشق کا
کھوے رہا نہ جان کو نا آزمودہ کار
ہوتا نہ میرؔ کاش طلبگار عشق کا
ایسا فقیر ہونا بھلا کیا ضرور تھا
دونوں جہاں میرؔ عبث روسیہ ہوا
عمامہ ہے موذن مسجد کا بار خر
قد تو ترا خمیدہ ہو محراب سا ہوا
کوتاہ تھا فسانہ جو مرجاتے ہم شتاب
جی پر و بال سب ہے یہ عمر دراز کا



پھر آج میرؔ مسجد جامع کے تھے اما
داغ شراب دھوتے تھے کل جانماز کا
غم ابھی کیا محشر مشہور کا
شور سا ہے تو و لیکن دور کا
حق تو سب کچھ ہی تو ناحق نہ بول
بات کہتے سر کٹا منصور کا
پرستش اب اسی بت کی ہے ہر سو
رہا ہوگا کوئی بندہ خدا کا
نہ جانو میر کیوں ایسا ہے چپکا
نمونہ ہے یہ آشوب بلا کا
کرو دن ہی سے رخصت ورنہ شب کو
نہ سونے دیگا شور اس بینوا کا
اس موج خیز دہر میں تو ہے حباب سا
آنکھیں کھلیں ترے تو یہ عالم ہے خواب سا
اسباب مہیا تھے سب مرنے ہی کے لیکن
اب تک نہ موئے جو ہم اندیشہ کفن کا تھا
بلبل کو موا پایا گل پھولوں کی دو کان پر
اس مرغ کے بھی جی میں کیا شوق چمن کا تھا

خوگر نہیں ہم یو نہی کچھ ریختے کہنے سے
معشوق جو اپنا تھا باشندہ دکھن کا تھا
رہ میرؔ غریبانہ جاتا تھا چلا روتا
ہر گام گلہ لب پہ یاران وطن کا تھا
یک آن اس زمانے میں یہ دل نہ وا ہوا
کیا جانئے کہ میرؔ زمانے کو کیا ہوا
سو زش وہی تھی چھاتی میں مرنے تلک مرے
اچھا ہوا نہ داغ جگر کا لگا ہوا
سر ہی چڑہا رہے ہر ایک بادہ خوار کے
ہے شیخ شہر یا کوئی ہے جن پڑا ہوا
ظاہر کو گودرست رکھا مر کے میں ولے
دل کا لگاؤ کوئی رہا ہے چھپا ہوا
از خویش رفتہ میں ہی نہیں اسکی راہ میں
آتا نہیں ہے پھر کے ادھر کا گیا ہوا
یوں پھر اٹھا نہ جائیگا اے ابر دشت سے
گر کوئی رو نے بیٹھ گیا دل بھرا ہوا
لیکر جواب خط کا نہ قاصد پھرا کبھو
کیا جانے سر نوشت میں کیا ہے لکھا ہوا



اٹھتی تعب فراق کی جی سے کہاں تلک
دل جو بجا رہا نہ ہمارا بجا ہوا
دامن سے منھ چھپاے جنون کب رہا چھپا
سو جاء سے سامنے ہے گریبان پھٹا ہوا
دیکھا نہ ایک گل کو بھی چشمک زنی میں ہائے
جب کچھ رہا نہ باغ میں تب میں رہا ہوا
کیا جانیئے ملاپ کسے کہتے ہیں یہ لوگ
برسوں ہوے کہ ہم سے تو وہ ہی لڑا ہوا
بحر بلا سے کوئی نکلتا مرا جہاز
بارے خداے عزوجل نا خدا ہوا
اس بحر میں یک اور غزل تو بھی میرؔ کہہ
دریا تھا تو تو تیری روانی کو کیا ہوا
اس کام جان و دل سے جو کوئی جدا ہوا
دیکھا پھر اسکو خاک میں ہمنے ملا ہوا
کھینچا بغل میں میں جو اسے مست پاکے رات
کہنے لگا کہ آپ کو بھی اب نشا ہوا
نے صبر ہے نہ ہوش ہے نے عقل ہے نہ دین
آتا ہے اسکے پاس سے عاشق لٹا ہوا

اٹھتا ہے میرے دل سے کبھو جوش سا تو پھر
جاتا ہے دونوں آنکھوں سے دریا بہا ہوا
جون صید نیم کشتہ تڑپتا ہے ایک سا
کیا جانیئے کہ دل کو میرے کیا بلا ہوا
جون برق مجھ کو ہنستے نہ دیکھا کسو نے آہ
پایا تو ابر سا کہیں روتا کھڑا ہوا
جس شعر پر سماع تھا کل خانقاہ میں
وہ آج میں سنا تو ہے میرا کہا ہوا
پایا مجھے رقیب نے آ اسکے زیر تیغ
دلخواہ بارے مدعی کا مدعا ہوا
بیمار مرگ سا تو نہیں روز اب بتر
دیکھا تھا ہم نے میرؔ کو کچھ تو بھلا ہوا
جوں ابر قبلہ دل ہے نہایت ہی بھر رہا
رونا مرا سنوگے کہ طوفان کر رہا
شب میکدے سے وارد مسجد ہوا تھا میں
پر شکر ہے کہ صبح تئیں بے خبر رہا ہے
کاہیکو میں نے میرؔ کو چھیڑا کہ ان نے آج
یہ درد دل کہا کہ مجھے درد سر رہا



دل کی واشد کے لئے کل باغ میں میں ٹک گیا
سن گلہ بلبل سے گل کا اور بھی جی رک گیا
ہم نہ کہتے تھے کہ غافل خاک ہو پیش از فنا
دیکھ اب پیری میں تیرا قدکدھر کو جھک گیا
پھرتا ہے زندگی کے لئے آہ خوار کیا
اس وہم کے نمود کا ہے اعتبار کیا
بسکہ ہیں اس غزل میں شعر بلند
یہ زمین آسمان ہے گویا
وہی شور مزاج شیب میں ہے
میر اب ابتک جوان ہے گویا
جی رک گئے اے ہمدم دل خون ہو بھر آیا
اب ضبط کریں کب تک منھ تک تو جگر آیا
تابوت پہ بھی میرے پتھر پڑے لیجاتے
اس نخل میں ماتم کے کیا خوب ثمر آیا
در ہی کے تئیں تکتے پتھرا گئیں آنکھیں تو
وہ ظالم سنگین دل کب میرؔ کے گھر آیا
دل عشق میں خون دیکھا آنکھوں کو گیا دیکھا
پیغمبر کنعان نے دیکھا نہ کہ کیا دیکھا

مجروح ہے سب سینہ تسپر ہے نمک پاشی
آنکھوں کے لڑانے کا ہم خوب مزا دیکھا

کہہ دل کو گنوایا ہے یا رنج اٹھایا ہے
اے میر تجھے ہم نے کچھ آج خفا دیکھا

آیا ہے ابر جب کا قبلہ سے تیرا تیرا
مستی کے ذوق میں ہیں آنکھیں بہت ہی خیرہ

مجنون نے حوصلے سے دیوانگی نہیں کی
جاگہہ سے اپنے جانا اپنا نہیں و طیرہ

کیا کم ہے ہو لنا کی صحرائے عاشقی کی
شیروں کو اس جگہ پر ہوتا ہے قشعریرا

غیرت سے میرؔ صاحب سب جذب ہو گئے تھے
نکلا نہ بوند لہو سینہ جوان کا چیرا

بندہ ہے پھر کہاں کا جو صاحب ہو بے دماغ
اس سے خدائی پھرتی ہے جس سے خدا پھرا

خانہ ٔ خراب میرؔ بھی کتنا غیور تھا
مرتے موا پر اسکے کبھو گھر نہ جا پھرا

پھرے کب تک شہر میں اب سوئے صحرا رو کیا
کام اپنا اس جنون میں ہم نے بھی یکسو کیا



عشق نے کیا کیا تصرف یاں کئے ہیں آجکل
چشم کو پانی کیا سب دل کو سب لو ہو کیا

جانا اس آرام گہہ سے ہے بعینہ بس یہی
جیسے سوتے سوتے ادھر سے ادھر پہلو کیا

عاشق ترے لاکھوں ہوئے مجھ سا نہ پھر پیدا ہوا
تجھ پر کوئی اے کام جان دیکھا نہ یوں مرتا ہوا

مدت ہوئی الفت گئی برسوں ہوے طاقت گئی
دل مضطرب ایسا نہ تھا کیا جانئے اب کیا ہوا

کل صبح سیر باغ میں دل اور میرا رک گیا
بلبل نہ بولا منھ سے کچھ گل ٹک نہ مجھ سے وا ہوا

وے دن گئے جو یاں کبھو اٹھتا تھا دل سے جوش سا
اب لگ گئے رونے جہاں پل مارتے دریا ہوا

کتنوں کے دل بیجان ہوئے کتنے نے جانے کیا ہوئے
چلنے میں اسکے دو قدم ہنگامہ یک برپا ہوا

مستی میں لغزش ہو گئی معذور رکھا چاہئے
اے اہل مسجد اس طرف آیا ہوں میں بھکا ہوا

جوں حسن ہے یک فتنہ گر توں عشق بھی ہے پردہ در
وہ شہرہ ٔ عالم ہوا میں خلق میں رسوا ہوا

فرہاد و مجنوں دون گئے ہم اور وامق یوں چلے
اس عارضے سے چاہ کہ وہ کونسا اچھا ہوا
یا حرف حظ ہے در میان یا گیسوؤں کا ہے بیان
کیا میر صاحب کے تئیں پھر ان دنون سودا ہوا
لے رنگ بے ثباتی یہ گلستان بنایا
بلبل نے کیا سمجھ کر یاں آں آشیاں بنایا
اُڑتی ہے خاک یارب شام و سحر جہاں میں
کس کے غبار دل سے یہ خاکدان بنایا
یکرنگ پر نہ ہنا یاں کا عجب نہیں ہے
کیا کیا نہ رنگ لائے تب یہ جہاں بنایا
اس صحن پر یہ وسعت اللہ رے تیری صنعت
معمار نے قضا کے دل کیا مکان بنایا
دل ٹک ادہر نہ آیا ادھر سے کچھ نہ پایا
کہنے کو ترک لیکر یک سوانگ یاں بنایا
دریوزہ کر تے گذری گلیوں میں عمر اپنی
درویش کب ہوے ہم تکیہ کہاں بنایا
وہ تو مٹا گیا تھا تربت بھی میر جی کی
دو چار اینٹیں رکھ کر پھر میں نشاں بنایا



یہ میر ستم کشتہ کس وقت جواں تھا
انداز سخن کا سبب شور و فغان تھا
جادو کی پڑی پرچہ ابیات تھا اسکا
منھ تکیئے غزل پڑھتے عجب سحربیان تھا
جس راہ سے وہ دل زدہ دلی میں نکلتا
ساتھ اسکے قیامت کا ساہنگامہ رواں تھا
افسردہ نہ تھا ایسا کہ جون آب زدہ خاک
آندھی تھی بلا تھا کوئی آشوب جہاں تھا
کس مرتبہ تھی حسرت دیدار میرے ساتھ
جو پھول مرے خاک سے نکلا نگران تھا
مجنوں کو عبث دعوی وحشت ہے مجھی سے
جس دن کہ جنوں مجھ کو ہوا تھا وہ کہاں تھا
غافل تھے ہم احوال دل خستہ سے اپنے
وہ گنج اسی کنج خرابی میں نہاں تھا
کس زور سے فرہاد نے خارا شکنی کی
ہر چند کہ وہ بیکس و بیتاب و توان تھا
گو میر جہاں میں کنھوں نے تجھ کو نہ جانا
موجود نہ تھا تو تو کہاں نام و نشان تھا
خواب میں کل پاوں اپنے دوست کے ملتا تھا میں

آنکھ دشمن کھل گئی سو ہاتھ مل کر رہ گیا
ہم بھی دنیا کی طلب میں سر کے بل ہوتے کھڑے
باری اپنے پاؤں اس رہ میں بچل کر رہ گیا
یک ڈھیری لاکھ کی تھی صبح جائے میرؔ پر
برسوں سے جلتا تھا شاید رات جل کر رہ گیا
طریق خوب ہے آپس میں آشنائی کا
نہ پیش آوے اگر مرحلہ جدائی کا
پڑھتا تھا میں تو سبحہ لئے ہاتھ میں درود
صلواتیں مجھ کو آکے وہ ناحق سنا گیا
رکھتا نشان قبر کا میرے نہ خوش کیا
آیا سو اور خاک میں مجھ کو ملا گیا
کیا پوچھتے ہو داغ کیا مرگ میرؔ نے
مرکر وہ سینہ سوختہ چھاتی جلا گیا
روتے پھرتے ہیں ساری ساری رات
اب یہی روزگار ہے اپنا
کچھ نہیں ہم مثال عنقا لیک
شہر شہر اشتہار ہے اپنا
جس کو تم آسماں کہتے ہو
سو دلوں کا غبار ہے اپنا



ہو گوشہ گیر شہرت مدنظر اگر ہے
عنقا کی طرح اپنا عزلت سے نام نکلا
روکش ہوا جو شب وہ بالائے بام نکلا
ماہ تمام یارو کیا نا تمام نکلا
تھا جن کو عاشقی میں دعویٰ پختہ مغزی
سودا انہوں کا آخر دیکھا تو خام نکلا
نو مید قیس پایا نا کام کوہ کن کو
اس عشق فتنہ گر سے وہ کس کا کام نکلا
کبھی اسکی جو میں جتانے لگا
مجھے سیدھیاں وہ سنانے لگا
تحمل نہ تھا جس کو ٹک سو وہ میں
ستم کیسے کیسے اٹھانے لگا
پریشان ہیں اس وقت میں نیک و بد
موا جو کوئی وہ ٹھکانے لگا
کہتے نہ تھے میرؔ مت کڑھا کر
دل ہو نہ گیا گداز تیرا
آنسو میرے آنکھوں میں ہر دم جو نہ آجاتا
تو کام مرا اچھا پردے میں چلا جاتا
صد شکر کہ داغ دل افسردہ ہو اور نہ

یہ شعلہ بھڑکتا تو گھر بار جلا جاتا
کہتے تو ہو کہتے یوں کہتے جو وہ آتا
یہ کہنے کی باتیں ہیں کچھ بھی نہ کہا جاتا
صحبت سگ و آہو کی یک عمر رہی باہم
وہ بھاگتا مجھ سے تو میں اس سے لگا جاتا
گر عشق نہیں ہے تو یہ کیا ہے بھلا مجھ کو
جی خود بخود اے ہمدم کا ہیکو کھپا جاتا
تکلیف نہ کی ہم نے اس وحشی کو مرنے کی
تھا میر تو ایسا بھی دل جی سے اٹھا جاتا
جو کچھ نظر پڑی ہے حقیقت میں کچھ نہیں
عالم میں خوب دیکھو تو عالم ہے خواب کا
دریا دلی جنھیں ہی نہیں ہوتی کاسہ لیں
دیکھا ہے بازگون ہی پیالہ حباب کا
مجنوں میں اور مجھ میں کرے کیوں نہ فرق عشق
چھٹتا نہیں مزا تو جلے سے کباب کا
لایق تھا رشکھنے ہی کے مصراع قد یار
میں معتقد ہوں میر ترے انتخاب کا
کیا کوئی گذر کوئی محبت میں ہنسی ہے کھیل ہے
پاؤں رکھا جس نے ٹک ادھر پھر اسکا سر گیا



کیا کوئی زیر فلک اونچا کرے فرق غرور
ایک پتھر حادثے کا آلگا سر چڑ گیا
سخت ہم کو میر کے مر جانے کا افسوس ہے
تم نے دل پتھر کیا وہ جان سے آخر گیا
تشویش سے اب خالی کس دن ہے مزاج اپنا
اس دل کی خلش نے بھی کیا آہ خلل ڈالا
مجھ مست کو کیا نسبت اے میر مسایل سے
منھ شیخ کا مسجد میں میں رک کے مسل ڈالا
کیا بے شرکی زندگی کے شیخ شہر نے
بناش بھی وہی تھا وہی مردہ شورہا
بندہا رات آنسو کا کچھ تار سا
ہوا ابر رحمت گنہگار سا
کوئی سادہ ہے اسکو سادہ کہے
لگے ہے ہمیں تو وہ عیار سا
محبت ہے یا کوئی جی کا ہے روگ
سدا میں تو رہتا ہوں بیمار سا
نہیں میر مستانہ صحبت کا باب
مصاحب کرو کوئی ہشیار سا

سینکڑوں پیکسوں کا جان گیا
پر یہ تیرا نہ امتحان گیا
کل میں کہا وہ طور کا شعلہ کہاں گرا
دل نے جگر کے اور اشارت کے یاں گرا
سینے میں شوق میرؔ کے سب درد ہوگیا
دل پر رکھا تھا ہاتھ سو منھ زرد ہوگیا
کچھ زرد زرد چہرہ کچھ لاغری بدن میں
کیا عشق میں ہوا ہے اے میرؔ حال تیرا
ہمارے دیکھتے زیر نگین تھا ملک سب جن کو
کوئی اب نام بھی لیتا نہیں ان ملک گیروں کا
ہر چند شعر میرؔ کا دل معتقد نہ تھا
پر اس غزل کو ہم نے بھی سنکر لکھا رکھا
میں جوانی میں مئے پرست رہا
گردن شیشے ہی میں دست رہا
ہاتھ کھینچا سو پیر ہو کر جب
تب گنہ کرنے کا نہ دست رہا
میرؔ کے ہوش کے ہیں ہم عاشق
فصل گل جب تلک تھی مست رہا



چمن بھی تیرا عاشق زار تھا
گل سرخ ایک زرد رخسار تھا
گئی نیند شیوں سے بلبل کی رات
کہیں دل ہمارا گرفتار تھا
قد یار کے آگے سرو چمن
کھڑا درد جیسے گنہ گار تھا
یہی جنس دل کی گرا نقدر تھی
ولے جب تلک تو خریدار تھا
بہت روئے ہم شبنم و گل کو دیکھ
کہ چسپان ہمیں بھی کہیں پیار تھا
گیا میرؔ یاں کروگے جو یار
کہو گے کہ مسکین عجب یار تھا
اندوہ و غم کی جوش سے دل رک کے خون ہوا
اب کے مجھے بہار سے آگے جنون ہوا

ردیف الالف منتخب از دیوان سیوم میرؔ پنجاہ و دو اشعار۔

مرے مالک نے مرے حق میں یہ احسان کیا
خاک نا چیز تھا میں سو مجھے انسان کیا
مجھ کو شاعر نہ کہو میرؔ کہ صاحب میں نے

درد و غم کتنے کئے جمع تو دیوان کیا
میرا ہی مقلد عمل تھا
مجنوں کے دماغ میں خلل تھا
باتیں ہماری سارے بیڈھینگیاں ہیں دعی ہے
بوڑھے ہوے پہ ہم کو اب تک نہ ڈھنگ آیا
بشرے کی اپنی رونق اے میر عارضی ہے
جب دل کو خون کیا تو چہرے پہ رنگ آیا
جاننا باطل کسو کو یہ قصور فہم ہے
حق اگر سمجھے تو سب کچھ حق ہے یاں باطل ہے کیا
مرثیہ میرے بھی دل کا رقب آور ہے بلا
محتشم کو میرؔ میں کیا جانوں اور مقبل ہے کیا
ان دلبروں سے رابطہ کرنا ہے کام کیا
کر ایک سلام پوچھنا صاحب کا نام کیا
شکرِ خدا کے سر نہ فرو لائے ہم کہیں
کیا جانیں سجدہ کہتے ہیں کس کو سلام کیا
تسبیح تک تو میرؔ نے رکھا کلال کے
وقت نماز اب بھی ہوئے تھی امام کیا
پہلے گلے لگایا پھر دستِ جور اٹھایا



مارا تو ان نے لیکن احسان کرکے مارا
کہنے لگا کہ شب کو میرے تئیں نشا تھا
مستانہ میرؔ کو میں کیا جان کرکے مارا
گیا حسنِ خوبانِ بد راہ کا
ہمیشہ رہے نام اللہ کا
پشیمان ہوا دوستی کر کے میں
بہت مجھ کو ارمان تھا چاہ کا
اسیری کا دیتا ہے مژدہ مجھے
مرا زمزمہ گاہ و بیگاہ کا
رہوں جا کے مرے حضرت یار میں
یہی قصد ہے بندۂ در گاہ کا
عدم کو نہیں مل کے جاتے ہیں لوگ
غم اس راہ میں کیا ہے ہمراہ کا
نظر خواب میں اسکے منھ پر پڑی
بہت خوب ہے دیکھنا ماہ کا
چشم سے خون ہزار نکلے گا
کوئی دل کا بخار نکلے گا
آندھیوں سے سیاہ ہوگا چرخ

دل کا تب کچھ غبار نکلے گا
تھا جسم کا ترک اولی ایام میں پیری کے
جاتا تھا چلا ہر جامہ بھی پرانا تھا
ایک محو تماشا ہیں یک گرم ہیں قصے کے
یاں آج جو کچھ دیکھا سو کل وہ فسانہ تھا
کہتا تھا کسو سے کچھ تکتا تھا کسو کا منھ
کل میر کھڑا تھا یاں سچ ہے کہ دیوانہ تھا
کب اور غزل کہتا میں اس زمین میں لیکن
پردے میں مجھے اپنا احوال سنانا تھا
سینہ کو بی ہے طیش سے غم ہوا
دل کے جانے کا بڑا ماتم ہوا
کیا لکھوں رویا جو لکھتے جون قلم
سب میرے نامے کا کاغذ نم ہوا
آگیا یوں ہی خراماں وہ تو پھر
حشر کا ہنگامہ ہی برہم ہوا
در ہمی سے برہمی سے دیکھیوں
دونو عالم کا عجب عالم ہوا
جسم خاکی کا جہاں پردہ اٹھا



ہم ہوے وہ میر سب وہ ہم ہوا
ہجر کے ایک آن میں دل کا ٹھکانا ہوگیا
ہر زمان ملتے تھے باہم سو زمانہ ہوگیا
واں تعلل ہی تجھے کرتے گئے شام و سحر
یاں تیرے مشتاق کا مرنا بہانہ ہوگیا
شیب میں بھی ہے لباس جسم کا ظاہر قماش
پر اسے اب چھوڑیئے جامہ پرانا ہوگیا
رہنے کے قابل تو ہر گز تھی نہ یہ عبرت سرائے
اتفاقاً اس طرف اپنا بھی آنا ہوگیا
کل مکل بے تاب دل سے آجکل کے کچھ نہیں
میں تو اس غمگش کو بیکل ہی سدا پاتا رہا
ہوگئے ہم مستحب کے بے شعوری سے اسیر
شیخ میں کچھ ہوش تھا میخانے سے جاتا رہا
میر دیوانہ ہی اچھا بات کیا سمجھے میری
یوں تو مجھ سے جب ملا میں اسکو سمجھاتا رہا
عجب دن میر تھے دیوانگی میں دشت گردی کے
سر اوپر سایہ گستر ہوتی تھی کیکر جہاں میں تھا
کبھو وہ تو جہ ادھر کر رہیگا

ہمیں عشق ہے تو اثر کر رہیگا
ہمارا ہی احوال حیرت کی جا گہہ
جو دیکھیگا وہ بھی نظر کر رہیگا
نہیں اس طرف میرؔ جانے سے رہتا
رہیگا تو ادھر ہی مرکر رہے گا
میرؔ کو کتنے دنوں سے رہتی تھی بے طاقتی
رات دل تڑپا بہت شاید کہ مر کر رہ گیا
کیا تم کو پیار سے وہ اے میرؔ منھ لگا دے
پہلے ہی چو مئے تم تو کاٹے ہو گال اسکا
زار رکھا بے حال رکھا بے تاب رکھا بیمار رکھا
حال رکھا تھا کچھ بھی ہم نے عشق نے آخر مار رکھا
عشق ہی ہم میں تصرف کیسے کیسے کر تا ہے
دل کو چاک جگر کو زخمی آنکھوں کو خونبار رکھا
کیا پوچھو ہو دین کے اکابر فاضل کامل صابر نج
عزلت والے کیا لوگوں کو گلیوں میں ان نے خوار رکھا
کام اسے ایک طور پہ لیتے بے طور اسکو ہونے نہ دے
حیف ہے میرؔ سپہر دوں نے ہم سے اسکو نہ یار رکھا
کیا میر دل شکستہ بھی وحشی مثال تھا



دنبالہ گرد چشم سیاہ غزال تھا
آخر کو خواب مرگ ہمیں جا سے لے گئی
جی دینے تک بھی سر میں اسی کا خیال تھا
میں جو کہا کہ دل کو تو تم نے ہرادیا
بولا کہ ذوق اپنا ہمارا ہی مال تھا
کیا میرے روز گار کے اہل سخن کی بات
ہر ناقص اپنے زعم میں صاحب کمال تھا
کہتے تھے ہم تباہ ہے اب حال میرؔ کا
دیکھا نہ تم نے اسمیں بھلا کچھ بھی حال تھا
احوال نہ پوچھو کچھ ہم ظلم رسیدوں کا
کیا حال محبت کے آزار کشیدوں کا

ردیف الالف منتخب از دیوان چہارم میرؔ شصت و پنج اشعار۔

کرتا ہوں اللہ اللہ درویش ہوں سدا کا
سرمایۂ توکل یاں نام ہے خدا کا
میں نے نکل جنوں سے مشق قلندری کی
زنجیر سر ہوا ہے تھا سلسلہ جو پا کا
یارب ہمارے جانب یہ تنگ کیوں ہے مائد
جی ہی سے مارتے ہیں جو نام لیں وفا کا

کیا فقر میں گذر ہو چشم طمع سینے بن
ہے راہ تنگ ایسی جیسے سوئی کا ناکا
واجب کا ہو نا ممکن مصدر صفت ثنا کا
قدرت سے اسکے لب پر نام آوے ہے خدا کا
گل پھول فصل گل میں صدرنگ ہیں شگفتہ
میں دل زدہ ہوں اب کے رنگینیٔ ہوا کا
واعظ کہے سو سچ ہے ولی میفروش سے
ہم ذکر بھی سنا نہیں صوم و صلواۃ کا
عالم کسو حکیم کا باندھا طلسم ہے
کچھ ہو تو اعتبار بھی ہو کائنات کا
گر یار میرؔ اہل ہے تو کام سہل ہے
اندیشہ تجھ کو یو نہیں ہے اپنی نجات کا
تجاہل تغافل تساہل کیا
ہوا کام مشکل تو کل کیا
نہیں تاب لاتا دل زار اب
بہت ہم نے صبر و تحمل کیا
نہ سوز دوروں فصل گل میں چھپا
سر و سینے سے داغ نے گل کیا



حقیقت نہ میرؔ اپنی سمجھی گئی
شب و روز ہم نے تامل کیا
مستانہ اگر چہ میں طاعت کو لگا جاتا
پر بعد نماز اٹھکر میخانے چلا جاتا
کیا شوق کی باتوں کی تحریر ہوئی مشکل
تھے جمع قلم کاغذ پر کچھ نہ لکھا جاتا
تھا میرؔ بھی دیوانہ پر ساتھ ظرافت کے
ہم سلسلہ دارونکی زنجیر ہلا جاتا
گو بیکسی سے عشق کے آتش میں جل بجھا
میں جون چراغ گور اکیلا جلا گیا
آیا نہ اس طرف سے جواب ایک حرف کا
ہر روز خط شوق ادہر سے چلا گیا
بد حال ٹھنڈی سانسیں بھر اکب تلک کرے
سر گرم مرگ میرؔ ہوا تو بھلا کیا
در پر سے تیرے اب کے جاؤنگا تو جاونگا
یاں پھر اگر آونگا سید نہ کہاؤں گا
یہ نذر بدی ہی میں کعبے سے جو اٹھتا ہو
بت خانہ میں جاونگا زنار بند ہاؤں گا

گر میر ہوں چپگا سا پر طرفہ نہرور ہوں
بگڑے گا نہ ٹک وہ تو سو باتیں سناؤنگا
دیوانگی میں مجنوں میرے حضور کیا تھا
لڑکا سا ان دنوں تھا اسکوں شعور کیا تھا
غم قرب بعد کا تھا جب تک نہ ہم نے جانا
اب مرتبہ جو سمجھے وہ اتنا دور کیا تھا
مرنا تھا جس کے خاطر اسکی طرف نہ دیکھا
میرؔ ستم رسیدہ ظالم غیور کیا تھا
جستجو میں یہ تعب کھینچے کہ آخر ہو گئے
ہم تو کھوئے بھی گئے لیکن نہ کچھ پا یا گیا
ہم مست عشق جس کے تھے وہ روٹھ کر گیا
دیکھ اسکو بے دماغ نشہ سب اتر گیا
کہتے ہیں میرؔ کعبے گیا ترک عشق کر
راہ دل شکستہ کدھر وہ کدھر گیا
شاید جگر حرارت عشقی سے جل گیا
کل درد دل کہا سو مرا منھ ابل گیا
چلنے لگے راہ طلب پر ہزار شکر
پہلے قدم ہر پاؤں ہمارا بچل گیا



سراب لگے جھکا نے بہت خاک کی طرف
شاید کہ میرؔ جی کا دماغی خلل گیا
ہم سے تو جز مرگ کچھ تدبیر بن آتی نہیں
تم کہو کیا تم نے درد عشق کا در مان کیا
داخل دیوانگی ہی تھی ہماری عا شقی
یعنے اس سودے میں ہم نے جان کا نقصان کیا
شکر کیا اسکی کریمی کا ادا بندے سے ہو
ایسی ایک نا چیز مشت خاک کو انسا ن کیا
لکھنو و دلی سے آیا بان بھی رہتا ہے اداس
میرؔ کو سر گشتگی نے بیدل و حیران کیا
چشم و فا اخوان زمانے سے سادہ ہو رکھے میرؔ
قصہ ہے مشہور زمانہ پہلے دونو بھائی کا
گیا عشق سو پھر مجھے غم رہا
مژہ نم رہیں حال درہم رہا
ضعیف و قوی دونو رہتے نہیں
نہ یان زال ٹھرا نہ رستم رہا
مکے گیا مدینے گیا کر بلا گیا
جیسا گیا تھا ویسا ہی چل پھر کے آگیا

دیکھا ہو کچھ اس آمدوشد میں تو میں کہوں
خود گم ہوا ہوں بات کے نہ اب جو پا گیا
کچھ نہ میں سمجھا جنون و عشق میں
دیر ناصح مجھ کو سمجھا تا رہا
کیسے کیسے رک گئے ہیں میرؔ ہم
مدتوں منھ تک جگر آتا رہا
کون لیتا تھا نام مجنوں کا
جب کہ عہد جنون ہمارا تھا
کوہ فر ہاد سے کہیں آگے
سر مرا اور سنگ خارا تھا
موسم گل میں ہم نہ چھوٹے حیف
گشت تھا دید تھا نظارہ تھا
خوب کیا جو اہل کرم کے جود کا کچھ نہ خیال کیا
ہم جو فقیر ہوئے تو ہم نے پہلے ترک سوال کیا
ہم کوئی مغان میں تھے ماہ رمضان آیا
صد شکر کہ مستی میں جانا نہ کہاں آیا
گو قدر محبت میں تھی سہل میری لیکن
سستا جو بکا میں تو مجھ کو بھی گراں آیا



رسم اٹھ گئی دنیا سے یکبار مروت کی
کیا لوگ زمیں پر ہیں کیا یہ سمان آیا
جگر خون گیا چشم نم کر گیا
گیا دل سو ہم پر ستم کر گیا
ان آنکھوں کو نرگس لکھا تھا کہیں
مرے ہاتھ دونو قلم کر گیا
شب یک شعلہ دل سے ہوا تھا بلند
تن زار میرا بھسم کر گیا
میری مزرع زرد پر شکر ہے
کل ایک ابر آیا کرم کر گیا
نہ یک بار وعدہ وفا کر سکا
بہت بار قول و قسم کر گیا
فقیری میں تھا شیب بار گران
قدِ راست کو اپنے خم کر گیا
یاری کئی کسو کا کا ہیکو نام نکلا
نا کام عشق تب تو عاشق کا نام نکلا
ہنگامے سے جہاں میں ہم نے جنوں کیا ہے
ہم جس طرف سے نکلے ساتھ اژدہام نکلا

جانا تھا ہم نے تجھ کو تو پختہ مغز ہوگا
دیکھا تو میرؔ تیرا سودا بھی خام نکلا

نے ہم سے کچھ نے اس ستم ایجاد سے ہوا
ظلم صریح عشق کی امداد سے ہوا

شیرین کا حسن ایسا تھا جو خستہ جان دین
جو کچھ ہوا سو خواہش فرہاد سے ہوا

خوش زمزمہ طیور ہی ہوتے ہیں میرؔ اسیر
ہم پر ستم یہ صبح کی فریاد سے ہوا

زار کیا بیمار کیا اس دل نے کیا آزار کیا
داغ سے تن گلزار کیا سب آنکھوں کو خونبار کیا

پیش گئے کب پیش زمانہ طبع خش ہر ناکس کے
ریک گردش میں سپہر نے جیسے سطح زمین ہموار کیا

چاہا ہم نے کیا کیا تھا پر اپنا چاہا کچھ نہ ہوا
عزلت کھوئی ذلت کھینچی عشق نے خوار وزار کیا

پیری میں بے دنداں ہو بیٹھے پر افسوس یہ ہمکو رہا
دانت تمہارے منھ میں کئے ہیں اس مغرور نے یوں نہ کہا

ردیف الالف منتخب از دیوان پنجم میرؔ ہشتاد و دو اشعار۔

دل رفتۂ جمال ہے اس ذوالجلال کا



مستجمع جمیع صفات و کمال کا
ادراک کو ہے ذات مقدس میں دخل کیا

ادہر نہیں گذر گمان و خیال کا
حیرت سے عارفوں کو نہیں راہِ معرفت

حال اور کچھ ہے یاں انہوں کے حال و قال کا
ہے قسمت زمین و فلک سے غرض نمود

جلوہ و گر نہ سب میں ہے اسکے جمال کا
مرنے کا بھی خیال رہے میرؔ اگر تجھے

ہے اشتیاق جان جہاں کے وصال کا
ہے حرف خامہ دل زدہ حسنِ قبول کا

یعنے خیال سر میں ہے لغت رسول کا
رہ پیروی میں اسکے کہ جام نخت میں

ظاہر اثر ہے مقصد دل کے وصال کا
وہ مقتدائے خلق جہاں اب نہیں ہوا

پہلے ہی تھا امام نفوس و عقول کا
سر مہ کیا ہے وضع یئے چشم اہل قدس

احمد کے رہگذار کے خاک اور دھول کا
ہے متحد نبیؐ و علی و وصی کی ذات

یاں حرف معتبر نہیں ہر بو الفضول کا
دھو منھ ہزار پانی سے سو بار پڑھ درود
تب نام لے تو اس چمنستان کے پھول کا
حاصل ہے میرؔ دوستیٔ اہل بیت اگر
تو غم ہے کیا نجات کے اپنے حصول کا
رسوائی شہر ہے یاں حرف و سخن ہمارا
کیا خاک میں ملا ہے افسوس فن ہمارا
ہر ایک کام موقوف ہے وقت پر ہی
دل خون شدہ بھی جگر کر رہیگا
نہ ہو گو خبر مرد ماں حال بد سے
مرا نالہ سب کو خبر کر رہیگا
سخن مشتاق ہے عالم ہمارا
غنیمت ہے جہاں میں دم ہمارا
رہے ہم عالم مستی میں اکثر
رہا کچھ اور ہی عالم ہمارا
رکھے رہتے ہیں دل پر ہاتھ اے میرؔ
یہیں شاید کہ ہے سبب غم ہمارا
کیا پوچھو ہو کیا کہئے میاں دل بھی کیا کام کیا



عشق کیا نا کام رہا آخر کو کام تمام کیا
میرؔ جوان نے منھ کو ادھر کر ہم سے کوئی بات کہی
لطف کیا احسان کیا انعام کیا اکرام کیا
عشق ہو حیوان کا یا انس ہو انسان کا
عشق ہمارے خیال پڑا ہے خواب گئے آرام گیا
جی کا جانا ٹھہر رہا ہے صبح گیا یا شام گیا
لاگ جس کی جس سے ہو دشمن ہے اپنی جان کا
عشق گیا سو دین گیا ایمان گیا اسلام گیا
دل نے ایسا کام کیا کچھ جس سے میں نا کام گیا
آیا یاں سے جانا ہے تو جی جا چھپا نا کیا حاصل
آج گیا یا کل جاویگا صبح گیا یا شام گیا
ہائے جوانی کیا کیا کہئے شور سروں میں رکھتی تھی
اب گیا وہ عہد گیا وہ موسم وہ ہنگام گیا
گالی جھڑکے خشم و خشونت یہ تو سر دست اکثر ہیں
لطف گیا ،احسان گیا ، انعام گیا ، اکرام گیا
لکھنا کہنا ترک ہوا تھا آپس میں تو مدت سے
اب جو قرار کیا ہے دل سے خط بھی گیا پیغام گیا
وصل میں رنگ اڑ گیا میرا

کیا جدائی کو منھ دکھاؤں گا
چھانتا ہوں کیسے گلی کی خاک
دل کو اپنے کبھو تو پاؤں گا
ہر جا پھرا غبار ہمارا اڑا ہوا
تیری گلی میں لائی صبا تو بجا ہوا
آہ سحر نے دل کی نہ کھولی گرہ کبھی
آخر نسیم سے بھی یہ غنچہ نہ وا ہوا
دی میرؔ اثر جو شورش دل میں تھی میں کہاں
نالئے کئے جرس نے بہت سے تو کیا ہوا
پہلو سے اٹھ گیا ہے وہ ناز نین ہمارا
جز درد اب نہیں ہے پہلو نشین ہمارا
کیسا کیا جگر خون آزار کیسے کھینچے
آسان نہیں ہوا دل اندوہگین ہمارا
حرف و سخن تھی اپنی یاد داستاں جہاں میں
مذکور بھی نہیں ہے یا اب کہیں ہمارا
کیا رائیگاں بتوں کو دیکر ہوے ہیں کافر
ارث پدر جو اب تھا یہ کہنہ دین ہمارا
کیا خاک میں ملایا ہم سپہر دون نے



ڈھونڈھا نشان تربت پاتے نہیں ہمارا
آج ہمارا دل تڑپے ہے کوئی ادھر سے آویگا
یا کہ نوشتہ ان ہاتھوں کا قاصد ہم تک لاویگا
خاک میں مل کے میرؔ ہم سمجھے
بے ادائی تھی آسماں کی ادا
رہا میں تو عزت کا اعزاز کرتا
چلا عشق خواری کو ممتاز کرتا
شیخ حرم سے لڑکے چلا ہوں اب کعبے میں نہ آونگا
تا بت خانہ ہر قدم اوپر سجدہ کرتا جاؤں گا
طایف رستہ کعبے کا جو کوئی مجھ سے پوچھیگا
جانب دیر اشارت کر میں راہ ادھر کی بھلاؤنگا
بیدین اب جو ہوا سو ہوا ہوں طوف حرم سے کیا مجھکو
غیر از سوی صنم خانہ میں رو نہ ادہر کو لاؤنگا
آگے مسافر میرؔ عرب میں اور عجم میں کہتے ہیں
اب شہروں میں ہندوستان کے کافر میرؔ کھاؤنگا
ایسا پلیدہ آلودہ دینا نہ خلق نے آگے ہوا ہو گا
شیخ شہر موا ہے کہتے ہیں شہر خدا نے پاک کیا
بعد ہمارے اس فن کا جو کوئی ماہر ہوویگا

درد آگین انداز کے باتیں اکثر پڑھ پڑھ روئیگا
چشم تماشا وا ہودے تو دیکھا بھالی غنیمت ہے
مت موندے آنکھوں کو غافل دیر تلگ پھر سو ویگا
جستجو بھی اسکی کرئے جسکا نشان کچھ پیدا ہو
پانا اسکا میر ہے مشکل کی تو یو نہیں کھودیگا
میر کی نبض پہ رکھ ہاتھ لگا کہنے طبیب
آج کی رات یہ بیمار نہیں جینے کا
میر افسردہ دل چمن میں پھرا
غنچۂ دل کہیں نہ اسکا کھلا
برسوں تئیں جہاں میں کیوں رہا ہے خضر
میں چار دن میں جینے سے بیزار ہو گیا
کیا متقی تھا میر پر آئینِ عشق میں
مجرم ساکشت و خون کا سزاوار ہوگیا
میر نہ اپنے درد دل کو مجھ سے کہا کر روز شب
صبح جو گوش دل سے سنا تھا دل میں میرے درد ہوا
خاک سے آدم کر دکھلایا یہ منت کیا تھوڑی ہے
اب سر خاک بھی ہو جائے تو سر سے کیا احسان گیا
دل تڑپے ہے جان کپہے ہے حال جگر کا کیا ہو گا



مجنوں مجنوں لوگ کہے ہیں مجنوں کیا ہم سا ہو گا
دیدۂ تر کو سمجھ کر اپنا ہم نے کیا کیا حفاظت کی
آہ نہ جانا رو تے روتے یہ چشمہ دریا ہوگا
دل کی لاگ کہیں جو ہو تو میر چھپائے اسکو رکھ
یعنے عشق ہوا ظاہر تو لوگوں میں رسوا ہوگا
اب یاں سے ہم اٹھ جاوینگے خلق خدا ملک خدا
ہر گز نہ ادہر آینگے ، خلق خدا ملک خدا
مطلب اگر یہاں گم ہوا اندیشے کی جاگہہ نہیں
جاکر کہیں کچھ پائینگے خلقِ خدا ملک خدا
دل میں نہ جانے یہ کوئی ہم کھانے کو دین ہیں انھیں
جو ہے مقدر کھائینگے خلقِ خدا ملکِ خدا
گو لکھنو و یران ہوا ہم اور آبادی میں جا
مقسوم اپنا لائینگے خلق خدا ملک خدا
اس بستي سے اٹھ جائینگی درویشوں کی کیا مشورت
وے بھی یہی فر مائینگے خلق خدا ملک خدا
تو میر ہوویگا جہاں امر قضا کے تابعاں
روزی تجھے پہنچائینگے خلقِ خدا ملکِ خدا
ایک اللہ کا بہت ہے نام

جمع باطل ہوں سو الہ تو کیا
میرؔ کیا ہے فقیر مستغنی ،،،،،،
آوے اس پاس بادشاہ تو کیا
بیتابیوں کے جور سے میں جب کہ مرگیا
ہوکر فقیر صبر میری گور پر گیا
اے آہ سرد عرصۂ محشر میں تیج جما
جلتا ہوں میں سنو کہ جہنم ٹھٹھر گیا
مفلس سو مرگیا نہ ہوا وصل یار کا
ہجران میں اسکے جی بھی گیا اور زر گیا
دل گیا مفت اور دکھ پایا
ہو کے عاشق بہت میں پچھتایا
مر گئے پر بھی سنگسار کیا
نخل ماتم میرا یہ پھل لایا
یہ شب ہجر ہے کھڑی نہ رہے
ہو سفیدی کا جس جگہ سایا
بات کہتے جی کا جانا ہو گیا
مرنا عاشق بہت میں پچھتایا
جاے بودن تو نہ تھی دنیا ے دون



اتفاقاً اپنا آنا ہوگیا
رفتہ رفتہ اس پری کے عشق میں
میرؔ سا دانا دیوانہ ہوگیا
بہت کی جستجو اسکی نہ پایا
ہمیں در پیش ہے اب جی کا کھونا
جگر کے زخم شاید ہیں نمک بند
مزا کچھ آنسوؤں کا ہے سلونا
وصیت میرؔ نے مجھ کو یہی کی
کہ سب کچھ ہونا تو عاشق نہ ہونا
طرفہ خیال کیا کرتا تھا عشق و جنوں میں روز و شب
روتے روتے ہنسنے لگا یہ میرؔ عجب دیوانہ تھا
ناخن سے بو الہوس کا گلا یو نہیں چھل گیا
لو ہو لگا کے وہ بھی شہیدوں میں مل گیا
کیا شہر خوش عمارت دل سے ہے گفتگو
لشکر نے غم کے آن کے مارا چلا گیا
روتے کڑھتے خاک میں ملتے جیتے رہے ہم دنیا میں
دس دن اپنی عمر کے گویا عشرہ تھا یہ محرم کا

ردیف الالف منتخب از دیوان ششم میرؔ چہل اشعار ۔

فلک نے پیس کر سرمہ بنایا
نظر میں اسکے میں تو بھی نہ آیا
زمانے میں میرے شور جنون نے
قیامت کا سا ہنگامہ اٹھایا
نہ اٹھا لطف کچھ جوانی کا
کم بہت موسم شباب رہا
کا روان ہائے صبح ہوتے گیا
میں ستم دیدہ محو خواب رہا
معالج کی نہیں تقصیر ہر گز
مرض ہر عاشقی کا لا دوا تھا
صنم خانے سے اٹھ کعبے گئے ہم
کوئی آخر ہمارا بھی خدا تھا
کوئی عنقا سے پوچھے نام تیرا
کہاں تھا جب کہ میں رسوا ہوا تھا
سوز دروں سے مجھ پہ ستم برملا ہوا
ٹکڑا جگر کا آنکھوں سے نکلا جلا ہوا
کیا اور لیکھئے کیسی حجالت مجھے ہوئی
سر کو جھکائے آیا جو قاصد چلا ہوا



کیا لکھوں مشکل ہوئی تحریر حال
خط کا کاغذ رونے سے نم ہوگیا
باغ جیسے راغ وحشت گاہ ہے
یاں سے شاید گل کا موسم ہوگیا
کیا نماز ہے میر اس اوقات کی
جب کہ قد محراب سا خم ہوگیا
وہ دیکھنے ہمیں ٹک بیماری میں نہ آیا
سو بار آنکھیں کھولیں بالیں سے سر اٹھایا
میں رنج عشق کھینچے بہت ناتواں ہوا
مرنا تمام ہو نہ سکا نیم جان ہوا
شاید کہ دل تڑپنے سے زخم دروں پھٹا
خوناب میرے آنکھوں سے منھ پر روان ہوا
غیر از خدا کی ذات مرے گھر میں کچھ نہیں
یعنے کہ اب مکان میرا لا مکان ہوا
گردش نے آسماں کی عجائب کیا سلوک
پیر کبیر جب میں ہوا وہ جواں ہوا
مرغ چمن کی نالہ کشی کچھ خنک سی تھی
میں آگ دی چمن کو جو گرم فغان ہوا

کہتے ہیں میرؔ سے کہیں اوباش لڑ گئے
ہنگامہ ان سے ایسا الٰہی کہاں ہوا
جب رفتنی کو عشق کا آزار ہوگیا
دو چار دن میں برسوں کا بیمار ہوگیا
حیرت زدہ میں عشق کے کاموں کا یار کے
دروازہ پر کھڑے کھڑے دیوار ہوگیا
پہلے فگار سینے کے اطراف درد سے
کوچہ ہر ایک زخم کا بازار ہوگیا
بازار میں جیاں کے ہے حسن کیا متاع
سو جسنے جسنے دیکھا خریدار ہوگیا
گردش نے آسماں کی عجایب کیا سلوک
پیر کبیر جب میں ہوا وہ جوان ہوا
مرغ چمن کی نالہ کشی کچھ خنک سی تھی
میں آگ دی چمن کو جو گرم فغان ہوا
کہتے ہیں میرؔ سے کہیں اوباش لڑ گئے
ہنگامہ ان سے ایسا الٰہی کہاں ہوا
جب رفتنی کو عشق کا آزار ہو گیا
دو چار دن میں برسوں کا بیمار ہوگیا



حیرت زدہ میں عشق کے کاموں کا یار کے
دروازہ پر کھڑے کھڑے دیوار ہوگیا
پہلے فگار سینے کے اطراف درد سے
کوچے ہر ایک زخم کا بازار ہو گیا
بازار میں جہاں کے ہے حسن کیا متاع
سو جسنے جسنے دیکھا خریدار ہوگیا
دل لے کے میری جان کا دشمن ہو انداں
جس بے وفا سے اپنے تئیں پیار ہوگیا
جی ہے جہاں قیامت دردو الم رہا وان
بیمار عاشقی میں شب صبح تک کڑاہا
کرنا وفا نہیں ہے آسان عاشقی میں
پتھر کیا جگر کو تب چاہ کو نبھایا
یا مرتضیٰ علیؑ ہے تیرا گدائے دریہ
کر حال میرؔ پر بھی ٹک التفات شاہا
چلنا ہوا تو قافلہ روز گار سے
میں جوں صدا جرس کے اکیلا جدا گیا
بادل گرج گرج کے سناتا ہے یعنے یان
نوبت سے اپنی ہر کوئی نوبت بجا گیا

میں ہوں خاک افتادہ جس آزار کا
عشق بھی اسکا ہے نام یک پیار کا
قدر جانو کچھ ہماری ورنہ پچھتاؤ گے تم
پھر نہیں ملینگا تم کو کوئی ہم سا آشنا
باغ کو بے لالہ و گل دیکھ کہتے تھے طیور
جھڑ گئے پت جھڑ میں اب کے ہائے کیا کیا آشنا
اب جو ہاتھ آئے ہیں ہم مست مفت کھو دیجو ہمیں
پھر نہ ہو گا تم کو ایسا کوئی پیدا آشنا
جہاں کا دریائے بیکراں تو سراب پایاں کار نکلا
جو لوگ تہ سے کچھ آشنا تھے انہوں نے لب تر کیا نہ اپنا
جو قافلے گئے تھے انہوں کی اٹھی بھی گرد
کیا جانئے غبار ہمارا کہاں رہا
ہے جہاں تو جہاں ہے مشہور ہے مثل
کیا ہے گئے پہ جان کے گو پھر جہاں رہا
سخن مشتاق ہے عالم ہمارا
بہت عالم کرے گا ہم ہمارا
پڑھینگے شعر رو رو لوگ بیٹھے
رہیگا دیر تک ماتم ہمارا



ردیف البا منتخب از دیوان اول میر دو ۲ بیت۔

قدرت کو دیکھ عشق کی مجہ سے ضعیف کو
رکھتا ہے شاد بے خور و بخواب روز و شب
گذرا کسی جہاں میں خوشی سے تمام روز
کس کی کٹی زمانے میں بے غم تمام شب

ردیف البا منتخب از دیوان دوم میر پنج شعر

داغ ہون جلتا ہے دل بے طور اب
دیکھئے کیا گل کھلے ہے اور اب
شعر پڑھتے پھرتے ہیں سب میر کے
اس قلمرو میں ہے ان کا دور اب
برسوں ہوئے گئے اسی پر بھولتا نہیں
یادش بخیر میر رہے خوش جہاں ہے اب
جیسا مزاج آگے تھا میرا سو کب ہے اب
ہر روز دل کو سوز ہے ہر شب تعب ہے اب
جاتا ہوں دن کو ملنے تو کہتا ہے دن کو میر
جو شب کو جائے تو کہے ہے کہ شب ہے اب

ردیف البا منتخب از دیوان سیوم میر دہ ۱۰ اشعار۔

مسکین جہاں تھا دل زدہ مسکین کا ہم تو وہاں

کل دیر میرؔ میرؔ پکارے نہیں ہے اب
بولا جو موپریشان آنکلے میر صاحب
آنا ہوا کہاں سے کہیئے فقیر صاحب
کیا فہم کیا فراست ذوق و بصر سماعت
تاب و توان و طاقت یہ کر گئے سفر سب
منزل کو مرگ کے تھا آخر مجھے پہنچنا
بھیجا ہے میں نے اپنا اسباب پیشتر سب
دنیا میں حسن و خوبی میرؔ یک عجیب شئ ہے
اندان و پارساں جس پر رکھیں نظر سب
شبون میں شب کے ٹوٹے زنجیر میرؔ صاحب
اب کیا میرے جنون کی تدبیر صاحب
ہم سر بھرے تو وہ تیغ نہ سکتے
اپنا گناہ اپنی تقصیر میرؔ صاحب
کھینچتی نہیں کماں اب ہم سے ہوائے گل کی
باد سحر لگے ہے جوں تیر میرؔ صاحب
کب ہیں جوانی کے سے اشعار شور آور
شاید کہ کچھ ہوئے ہیں اب پیر میرؔ صاحب
تم کس خیال میں ہو تصویر سے جو چپ ہو



کرتے ہیں لوگ کیا کیا تقریر میرؔ صاحب

ردیف البا منتخب از دیوان چہارم میرؔ پنج اشعار۔

بیکار بھی درکار ہیں سرکار میں صاحب
آتے ہیں کھینچے ہم کبھو بیگار میں صاحب
طالع سے زلیخا نے لیا مصر میں یوسف
کب ایسا غلام آوے ہے بازار میں صاحب
درد سر کا پھر پھر ہے اب
زندگانی ہی درد سر ہے اب
گفتگو انسان سے محشر میں ہے یعنے کہ میرؔ
سارا ہنگامہ قیامت کا میرے سر پہ ہے اب
التفات زمانہ پر مت جا ،،،،،،
میرؔ دیتا ہے روز گار فریب

ردیف البا منتخب از دیوان پنجم میرؔ پنج اشعار۔

یارب کدھر گئے وے جو آدمی روش تھے
او جڑے دکھائی دے ہیں شہر و دہ و نگر سب
میرؔ اس خرابی میں کیا آباد ہووے کوئی
دیوار و در گرے ہیں ویران پڑے ہیں گھر سب
عشق و جنوں کی کیا اب تدبیر ہے مناسب

زنجیر ہے مناسب شمشیر ہے مناسب
رحم آشنا کسو کو اس بستی میں نہ پایا
اسلامیوں کے یاں کی تکفیر ہے مناسب
دنیا میں کوئی پھر پھر آیا نہیں ہے صاحب
یکبار تم کو مرنا اے میرؔ ہے مناسب

ردیف الباانتخاب از دیوانِ ششم میرؔ سہ ۳ اشعار۔

آیا ہے شیب سر پہ گیا ہے شباب اب
کرنا جو کچھ ہو تم سو کر لو شتاب اب
سر صدقے تیرے ہونے کی خاطر بہت ہے گرم
مارا کرے ہے شام و سحر چکر آفتاب
اس مغل زادی سے نہ تھی ہر بات کی تکرار خوب
بد زبانی بھی کی ان نے تو کہا بسیار خوب

ردیف التانتخب از دیوانِ اول میرؔ بست و دو اشعار

رو زانہ ملوں یار سے یا شب ہو ملاقات
کیا فکر کروں میں کہ کسو ڈھب ہو ملاقات
نے بخت کی یاری ہے نہ کچھ جذب ہے کامل
وہ آپ ہی ملے تو ملے پھر جب ہو ملاقات
وحشت ہے بہت میرؔ کو مل آئی چل کر



کیا جانیئے پھر یہاں سے گئے کب ہو ملاقات
تنگ ہو جائیگا عرصہ خفتگان خاک پر
گر ہمیں زیر زمین سو نپا دل نالاں سمیت
قیس و فرہاد اور وامق عاقبت جی سے گئے
سب کو مارا عشق نے مجھ خانمان و یران سمیت
اٹھ گیا پردہ نصیحت گر کے لگ پڑنے سے میرؔ
پھاڑ ڈالا میں گریبان رات کو دامان سمیت
پلکوں پہ تھے پارۂ جگر رات
ہم آنکھوں میں لے گئے بسر رات
پر زلفوں میں منھ چھپا کے پوچھا
اب ہوئیگی میرؔ کسقدر رات
چھٹا ہی نہیں ہو جسے آزار محبت
مایوس ہوں میں بھی کہ ہوں بیمار محبت
امکان نہیں جیتے جی ہو اس قید سے آزاد
مرجاے تبھی چھوٹے گرفتار محبت
تقصیر نہ خوباں کی نہ جلاد کا کچھ جرم
تھا دشمن جانی مرا اقرار محبت

ہر جنس کے خواہاں ملے بازار جہاں میں
لیکن نہ ملا کوئی خریدار محبت

کچھ مست ہیں ہم دیدۂ پر خون جگر سے
آیا یہی ہے ساغر سرشار محبت

مجھ سا ہی ہو مجنوں بھی یہ کب مانے ہے عاقل
ہر سر نہیں اے میرؔ سزاوار محبت

جی میں ہے یادرخ وزلف سیہ فام بہت
رونا آتا ہے مجھے ہر سحر و شام بہت

دست صیاد تلک بھی نہ میں پہنچا جیتا
بیقراری نے لیا مجھ کو تہ دام بہت

ایک دو چشمک ادہر گردش ساغر کہ مدام
سر چڑھی رہتی ہے یہ گردش ایام بہت

دل خراشی و جگر چاکی و خون افشانی
ہوں تو ناکام پہ رہتے ہیں مجھے کام بہت

پھر نہ آئے جو ہوے خاک میں جا آسودہ
غالباً زہر زمین میرؔ ہے آرام بہت

ہر صبح دم کروں ہوں الحاح یا انابت



تو بھی میری دُعا سے ملتی اجابت
مت لے حساب طاقت اے ضعف مجھ سے ظالم
لایق نہیں ہے تیرے یہ کونسی ہے بابت
کیا کیا لکھا ہے میں نے وہ میرؔ کیا کہیگا
گم ہووے نا مہ بر سے یارب میری کتابت

ردیف التا منتخب از دیوانِ دوم میرؔ پنج اشعار۔

بعد میرے اس غزل پر بھی بہت رو ویگے لوگ
میں بھی ہر ہر بیت پر اسکے بکا کرتا تھا رات
دیکھ خالی جا کہینگے برسوں اہل روزگار
میرؔ اکثر دل کا قصہ یاں کہا کرتا تھا رات
ہوتی ہے اگرچہ کہنے سے یارو پر آئی بات
پر ہم سے تو تھمے نہ کبھی منھ پر آئی بات
اب مجھ ضعیف و زارا کو مت کچھ کہا کرو
جاتی نہیں ہے مجھ سے کسوکی اٹھائی بات
کیا سبب ہے اب مکان پر جو کوئی پاتا نہیں
میرؔ صاحب آگے تو رہتے تھے اپنے گھر بہت

ردیف التا منتخب از دیوان سیوم میرؔ نہ اشعار۔

بیگانگیٔ خلق جہاں جائے خوف ہے
سو دشمنوں میں کیا ہے جو نکلے بھی چار دوست

مجھ بینوا کی یاد رہے میرؔ یہ صدا ،
اس میکدے میں رہیو بہت ہوشیار دوست

شیخ جنت تجھے مجھے دیدار
وہاں بھی ہر ایک کی ہے جدا قسمت

کیا ازل میں ملا نہ لوگوں کو
تھے ہمارے بھی میرؔ کیا قسمت

کریگا اس شور سے شب کو ہی تو
روئینگے سونے کو ہمسائے بہت

میرؔ سے پوچھا جو میں عاشق ہو تم
ہو کے کچھ چپکے سے شرمائے بہت

خدا جانئے ہوویگی کیا نہایت
اجل تو ہے دل کے مرض کی ہدایت

گیا آسماں پر جو نالۂ تو کیا ہے
نہیں یار کے دل میں کرتا سرایت

ہمیں عشق میں میرؔ چپ لگ گئی ہے



نہ شکر و شکایت نہ حرف و حکایت

ردیف التا منتخب از دیوان چہارم میرؔ دو اشعار۔

اب تو پیر ہی حضرت ہو کر ایک کنارے بیٹھے ہیں
جب تھی جوانی تب تو ہم بھی جاتے تھے درگاہ بہت

کیا گذری ہے جی پر تمہارے ہم سے تو کچھ میرؔ کہو
آنے لگی ہے درد و الم سے صاحب لب پر آہ بہت

ردیف التا منتخب از دیوان پنجم میرؔ ہفت اشعار۔

کافر و مسلم دونو ہوئے پر نسبت اس سے کچھ نہ ہوئی
بہت لئے تسبیح پھرے ہم پہنا ہے زنار بہت

منھ کی زردی تنگی نزاری چشم تر پر چھاتی ہے
عشق میں اس کے یعنے ہم نے کھینچے ہیں آزار بہت

نالہ و زاری سے عاشق کے کیا ابر بھاری ظرف ہوگا
دل ہے نالان حد سے زیادہ آنکھیں ہیں خونبار بہت

برسوں ہوے اب ہم لوگوں سے آنکھ انہوں کی نہیں ملتی
برسوں تک آپس میں رہا ہے اپنے جنہوں کے پیار بہت

ارض و سما کی پستی بلندی اب تو ہم کو برابر ہے
یعنے نشیب و فراز جو دیکھی طبع ہوئی ہموار بہت

ردیف التا منتخب از دیوان ششم میر ہفت اشعار۔

منھ پر رکھتا ہے وہ نقاب بہت
ہم سے کرتا ہے اب حجاب بہت

دیر بھی کچھ لگی نہ مرتے ہمیں
عمر جاتی رہی شتاب بہت

دیر تک کعبے میں تھے شب بے ہوش
پی گئے میر جی شراب بہت

میر کی بد حالی شب مذکور تھی
کڑھ گئے یہ حال سنکر ہم بہت

دعویٰ عاشق بیچارے کا کون سنیگا محشر میں
خیال ملا ایک واں بھی ہونگے اسکے خاطر دار بہت

خشکی لب کی زردی رخ کی نمناکی دو آنکھوں کی
جو دیکھے ہی کہے ہے ان نے کھینچا ہے آزار بہت

میر دعا کر حق میں میرے تو بھی فقیر ہے مدت سے
اب جو کبھو دیکھوں اسکو تو مجھ کو نہ آوے پیار بہت

ردیف التا منتخب از دیوان سیوم میر یک شعر۔

نہ ہاتھ آئی اے میر کچھ وجہ مے گرو میھ نے دستار کی ہے عبث



ردیف الجیم منتخب از دیوان اول میر ہشت اشعار۔

حال گلزار زمانے کا ہے جیسے کہ شفق
رنگ کچھ اور ہی ہو جاے ہے یک آن کے بیچ

کان رکھ رکھ کے بہت دردِ دل میر کو تم
سنتے تو ہو پہ کہیں درد نہ ہو کان کے بیچ

میری طاعت کو قبول آہ کہاں تک ہوگا
سبحہ یک ہاتھ میں ہے جام ہے یک ہاتھ کے بیچ

تاب و طاقت کو تو رخصت ہوئے مدت گزری
پند گو یوہنی نہ کر اب خلل اوقات کے بیچ

زندگی کس کے بھروسے پہ محبت میں کروں
ایک دل غمزدہ ہے سو بھی ہے آفات کے بیچ

بے مے و مغبچہ یکدم نہ رہا تھا کہ رہا
اب تلک میر کا تکیہ ہے خرابات کے بیچ

عرش پر ہے ہم نمد پوشان الفت کا دماغ
اوج دولت کا سا ہے یا فقر کی پستی کے بیچ

ہم سیہ کارو نکا ہنسنا وہ ہے منجانے کے اور
آگئے ہیں میر مسجد میں چلے مستی کے بیچ

کنعان سے جاکے مصر میں یوسف ہوا عزیز
عزت کسو کی ہوتی نہیں ہے وطن کے بیچ

فرہاد قیس و میر یہ آوارگان عشق
یوہنی کئے ہیں سب کی رہی من کی من کے بیچ

حلقہ گیسوی خوباں پہ نہ کر چشم سیاہ
میر امرت نہیں ہوتا دہن مار کے بیچ

ردیف الجیم منتخب از دیوان دوم میر سہ ۳ اشعار

فرہا دو قیس جس سے مجھے چاہو پوچھ لو
مشہور ہے فقیر بھی اہل و فا کے بیچ

دل اس چمن میں بہتوں سے میرا لگا ولے
بوے وفا نہ پائی کسو آشنا کے بیچ

جوش و خروش میر کے جاتے رہے نہ سب
ہونا ہے شور چاہنے کے ابتدا کے بیچ

ردیف الجیم منتخب از دیوان چہارم میر یک شعر۔

آگے تو رسم دوستی کی تھی جہاں کے بیچ
اب کیسے لوگ آئے زمین آسمان کے بیچ

ردیف الجیم منتخب از دیوان پنجم میر یک شعر

چشم شوخسے اسکے یارو کیا نسبت ہے غزالوں کو



دیکھتے ہیں ہم بڑا تفاوت شہری اور گنوار کے بیچ

ردیف الجیم منتخب از دیوان اول میر یک ششم شعر

دل یہی ہے جسکو دل کہتے ہیں اس عالم کے بیچ
کاش یہ آفت نہ ہوتی قالب آدم کے بیچ

ردیف الحا منتخب از دیوان اول میر یک شعر

ہونے لگا گزار غم یار ہے طرح — رہنے لگا ہے دل کو اب آزار ہے طرح

ردیف الدال منتخب از دیوان اول میر بیست و یک اشعار

مار رکھا باطن پیر مغان نے شیخ کو — مل گیا اس پیر زن کو غیب سے یک پیر مرد
ایک شب پہلو کیا تھا گرم ان نے تیرے ساتھ — رات کو رہتا ہے اکثر میر کے پہلو میں درد
آویگی میری قبر سے آواز میرے بعد — ابھریگے عشق دل سے تیرے راز میرے بعد
شمع مزار اور پہ سوز جگر مرا — ہر شب کریگے زندگی ناساز میرے بعد
نہ پڑھا خط کو یا پڑھا قاصد — آخر کار کیا کہا قاصد
کہنے قصہ لکھا کروں تا کے — بھیجا کب تک کروں نیا قاصد
باؤ پر ہے برات حس کا جواب — اسکو گزری ہیں سا لہا قاصد
نامہ میر کو اڑاتا ہے — کاغذ باد کر گیا قاصد
شرمندہ اثر کچھ باطن مرا نہیں ہے — وقت سحر ہے شاہد دست دعا ہے شاہد
ہم گرفتار حال ہین اپنے — طایر پر بریدہ کے مانند

دل تڑپتا ہے رشک خونین میں — صید در خون طپیدہ کے مانند
مری سنگ مزار پر فرہاد — رکھ کے تیشہ کہے ہے یا استاد
ہم سے بن مرگ کیا جدا ہو ملال — جان کے ساتھ ہے دل ناشاد
موند آنکھین سفر عدم کا کر — بس ہے دیکھا نہ عالم ایجاد
فکر تعمیر مین نہ رہ منعم — زندگانی کی کچھ بھی ہے بنیاد
خاک بھی سر پہ ڈالنے کو نہیں — کس خرابی میں ہم ہوے آباد
سنتے ہو ٹک سنو کہ پھر مجھ بعد — نہ سنوگے یہ نالہ و فریاد
لگتی ہے کچھ سموم سے تو نسیم — خاک کس دل جلے کی دی بر باد
تیری قید قفس کا کیا شکوہ — نالے اپنے سے اپنے ہے فریاد
خوب ہے خاک سے بزرگون کے — چاہتا تو میرے تئین امداد
پر مروت کہاں کی ہے اے میر — تو ہی مجھ دل جلے کو کر ارشاد

ردیف الدال منتخب از دیوان دوم میر دوازدہ اشعار

ہیں مکان وسر او جا خالی — یار سب کوچ کر گئے شاید
لو ہو آنکھون مین اب نہیں آتا — زخم اب دل کے بھر گئے شاید
اب کہین جنگلون مین ملتے ہنیں — حضرت خضر مر گئے شاید
بیکلی بھی قفس مین ہے دشوار — کام سے بال و پر گئے شاید
شور بازار سے نہیں اٹھنا — رات کو میر گھر گئے شاید



بنی تھی کچھ یک اسے مدت کے بعد — سو پھر بگڑی پہلی ہی صحبت کے بعد
جدائی کے حالات میں کیا کہوں — قیامت تھی یک یک ساعت کے بعد
مواکو ھکن ہے ستون کھود کر — یہ راحت ہوئی ایسی محنت کے بعد
لگا ہے آگ پانی کو دوڑے ہے تو — یہ گرمی تیری اس شرارت کے بعد
کہے کو ہمارے کب ان نے سنا — کوئی بات مانے سو منت کے بعد
سخن کی نہ تکلیف ہم سے کرو — لہو ٹپکے ہے اب شکایت کے بعد
نظر میر نے کیسی حسرت سے کی — بہت روئے ہم اسکی رخصت کے بعد

ردیف الدال منتخب از دیوان سوم میر یازدہ اشعار

زمیں پر میں پھینکا خط کو کر بند
بہت تڑپا کیا جون مرغ پر بند
گرفت دل سے نا چاری ہے یعنے
رہا ہون بیٹھ مین بھی کر کے گھر بند
فن اشعار مین ہون پہلوان میر
مجھے ہے یاد سا کشتی کا ہر بند
عشق لوہو پی گیا سب تن میں ہے سو درد درد
پھول میری خاک سے نکلینگے بھی تو زرد زرد
کب میری شب کو سحر ہے ایک بدحالی کے بیچ

جانتا ہون صبح ہی ہوتا ہون جب میں سرد سرد
کاروان درکاروان یان سے چلے جاتے ہیں لوگ
ہر طرف اس خاکدان میں دیکھتے ہیں گرد گرد
یہ غلط فہمی ہے ہر زن زن ہے یا ہے مرد مرد
مرد وزن سب ہیں نہ بیر دیرو درخت تاک سے
دفتر اعمال میرا بہول جاوین میرؔ کاش
ہے قیامت اس جدیدہ کو جو دیکھیں فرد فرد
بہت ہے تن درد پر زردزرد
اٹھیگی میرے خاک سے گرد زرد
وہ بیمار گو تو نہ جانے مجھے
مرا نامہ لکھنے کو ہے فرد زرد
گزرتے ہے کیا میرؔ دل پر تیرے
تو ہوتا ہے ہر لحظہ کچھ زرد زرد

## ۱۔ دیف الدال منتخب ازدیوان میر چہارم یازدہ اشعار

جاوے جدائی کا یہ آزار گاہ باشد
اچھا بھی ہو وے دل کا بیمار گاہ باشد
گو قدر دل کی کم ہے پر چیز کام کی ہے
لے تو رکھیں تمھین ہو درکارگاہ باشد



کہتا ہون سو کرے ہے لیکن رہون ہون ڈرتا
آوے کسو سخن پر تکرار گاہ باشد
وحشت پہ میرے مت جا غیرت بہت ہے مجھکو
ہو بیٹھون مرنے کو بھی طیار گاہ باشد
ہے ضبط عشق مشکل ہوتا نہیں کسو سے
ڈر میرؔ بھی ہو اسکا اظہار گاہ باشد
تن کو جس جگہ سے چھیڑے ہوں ہے درد درد
ہاتھ لگتے دل کے ہو جاتا ہوں کچہ مین زرد زرد
اب تو وہ حسرت سے آہ و نالہ کرتا بھی گیا
کوئی دم ہونٹون تک ہوجاتا ہے گاہ سرد سرد
شعر دیوان کے مرے کرکر یاد
مجنوں کہنے لگا کہ ہاں استاد
خود کو عشق بتاں میں بھول نہ جا
متوکل ہو کر خدا تعالیٰ کو یاد
وحشی اب گرد یاد سے ہم نیں
عمر افسوس کیا گئی برباد

چار دیواری عناصر میرؔ
خوب جاگہہ ہے پر ہے بے بنیاد

## ردیف الراء منتخب از دیوان اول میر پنجاہ اشعار

ہم تو اسیر کنج قفس ہو کے مر چلے
اے اشتیاق سیر چمن تیری کیا خبر

ہر گام سر راہ تھی بٹ جانے کی محبت
کعبے تلک تو پہنچے لیکن خدا خدا کر

جوں شمع صبحگا ہے یکبار بجھ گئے ہم
اس شعلے خونی ہم کو مارا جلا جلا کر

میں منع میر تجھ کو کرتا نہ تھا ہمیشہ
کھوئی نہ جان تو نے دل کو لگا لگا کر

ساقی تو ایکبار تو توبہ میری تڑا
توبہ کروں جو پھر تو ہے توبہ ہزار بار

کیا زمزمہ کروں ہوں خوشی تجھ سے ہم صغیر
آیا جو میں چمن میں تو جاتی رہی بہار

وسعت جہاں کے چھوڑ جو آرام چاہے میرؔ
آسودگی رکھے ہے بہت گوشہ مزار



قدم دشت محبت میں نہ رکھ میرؔ
کہ سر جاتا ہے گام اولین پر

دل دماغ و جگر یہ سب ایکبار
کام آئے فراق میں اے یار

آزیارت کو قبر عاشق پر
یک طرحکا ہیان بھی جوش بہار

نکلے ہے میری خاک سے نرگس
یعنے اب تک ہے حسرت دیدار

میرؔ صاحب زمانہ نازک ہے قطعہ
دونو ہاتھوں سے تھامئے دستار

سہل سے زندگی پہ کام کے تئیں
اپنے اوپر نہ کیجئے دشوار

چار دن کا ہے مجھلہ یہ سب
سب سے رکھیئے سلوک ہے ناچار

وہاں جہاں خاک کے بربر ہے
قدر ہفت آسمان ظلم شعار

یہی در خواست پاس دل کے ہے

نہیں روزہ نماز کچھ درکار
در مسجد بھ حلقہ زن ہو تم
کہ رہو بیٹھ خانہ خمار

جی میں آوے سو کیجیو پیارے
ایک ہو جو نہ درپے آزار

حاصل دو جہان ہے ایک حرف
ہو میری جان آگے تم مختار

لبوں پر ہے ہر لحظہ آہ شرربار
جلا ہی پڑا ہے ہمارا تو گھربار

کب اسعمر میں آدمی شیخ ہیگا
کتابین رکھین ساتھ گو ایک خربار

جہاں میر رہنے کی جگہ نہیں ہے
چلا چاہیئے یہاں سے اسباب کربار

دل وہ نگر نہیں کہ پھر آباد ہو سکے
پچھتاؤ گئے سنو ہو یہ بستی اجاڑ کر

نکلینگے کام دل کے کچھ اب اہل ریش سے
کچھ ڈھیر کر چکے ہیں یہ آگے اکھاڑ کر



اس فن کے پہلوانوں سے کشتی رہی ہے میر
بتوں کو ہم نے زیر کیا ہے پچھاڑ کر

اس پشت لب کے اوپر دانے عرق کے یون ہیں
یاقوت سے رکھے ہیں جوں موتیوں کو جڑکر

اپنی مزاج میں بھی ہے میر ضد نہایت
پر مر ہی کے اٹھینگے بیٹھینگے ہم جوازکر

کہتا ہے کون تجھ کو یاں ی نہ کرتو وہ کر
پر ہوسکے تو پیارے دل میں بھی ٹک جگہ کر

کیا قصر دل کی تمسے ویرانی نقل کرے
ہو ہوگئے ہیں ٹیلے سارے مکان ڈہہ کر

رنگ شکستہ اپنا بے لطف بھی نہیں ہے
یان کی تو صبح دیکھی ایک اُدہہ رات رہ کر

ایکونکی کھال کھینچی ایکونکو دار کھینچا
اسرار عاشقیکا پچھتائے یار کہکر

شیخی کا اب کمال ہے کچھ اور
حال ہے اور قال ہے کچھ اور

سہل مت پوچھ یہ طلسم جہاں

ہر جگہ یاں خیال ہے کچھ اور
کوز پشتی بھ شیخ کیمت جاؤ
اس پھ بھی احتمال ہے کچھ اور

آبیٹھتا تھا صوفی میکدے میں
شکر خدا کے نکالا ورن سے خراب ہوکر

شرم وحیا کہان تک ہیں میر کوئی دن کے
اب تو ملا کرو ٹک بے حجاب ہوکر

لوح تربت پہ میرے بہلے یہ لکھیو کہ اسے
یار دشمن ہوگیا جان سے مار آخرکار

مشت خاک اپنی جوپامال ہے یاں اسپہ مخا
سر کو کھینچیگا فلک تک یھ غبار آخرکار

اولکار محبت تو بہت سہل ہے میر
جی سے جاتا ہے ولے صبر وقرار آخرکار

ہم بھی پہرتے ہیں یک حشم لے کر
دستہ داغ وفوج غم لے کر

دست کش نالہ پیش روگریہ
آہ چلتی ہے یاں علم لے کر



مرگ یک ماندگی کا وقفہ ہے
یعنے آگئے چلیں گے دم لیکر

ضعف یان تک کھینچا کہ صورت گر
رہ گئے ہاتھ میں قلم لیکر

دل بھ کب اکتفا کرے ہے عشق
جائیگا جان بھی یہ غم لیکر

داڈھی سفید شیخ کی تومت نظر میں کر
بگلا شکار ہو وے تو لگتے ہیں ہاتھ پر

اے ابر خشک مغز سمندر کا منھ نہ دیکھ
سیراب تیرے ہونے کو کافی ہے چشم تر

آخر عدم سے کچھ بھی نہ کھڑا مرا میاں
مجھ کو تھا دست غیب پکڑنے تیری کمر

پشت پا مارے بسکہ دنیا پر
زخم پڑ پڑ گیا میرے پا پر

کم گو جو ہم ہوے تو ستم کچھ نہ ہوگیا
اچھی نہیں یہ بات مت اتنی زبان کر

افسانے ماومن کے سنیں میر کب تلک

چل اب کہ سووین منھ پہ ڈوپٹے کو تان کر

## ردیف الراء منتخب از دیوان دوم میر سیزدہ اشعار۔

قصر جنان تو ہم نے دیکھا نہیں جو کہیئے
شاید نہووے دل سا کوئی مکان زمین پر

یاں خاک سے انھوں کے لوگوں نے گھر بنائے
آثار ہیں جنھوں کے ابتک عیاں زمیں پر

کیا سر جھکا رہے ہو میر اس غزل کو سن کر
بارے نظر کرو ٹک اے مہربان زمین پر

موزون کرو کچھ اور بھی شاید کہ میر جی
رہ جائے کوئی بات کسو کے زبان پر

دامن میں آج میر کے داغ شراب ہے
تھا اعتماد ہم کو بہت اس جوان پر

کچھ خوب نہیں اتنا ستانا بھی کسو کا
ہے میر فقیر اسکو نہ آزار دیا کر

صورت پرست ہوتی نہیں معنی آشنا
ہے عشق سے بتون کے مرا مدعا کچھ اور

مرنے پھ جان دیتے ہیں وارفتگانِ عشق



ہے میر راہ و رسم و بار وفا کچھ اور

مجھ کو قفس میں سنبل وریحان کی کیا خبر
کہہ اے نسیم صبح گلستان کی کیا خبر

رہنا ہے ایک نشہ انھیں جنکو ہے شناخت
ہے زاہدوں کو مستی وعرفان کی کیا خبر

ٹک پوچھتے جو آن نکلتا کوئی رادھر
اب بعد مرگ قیس بیابان کیکیا خبر

برباد جاے یاں کوئی دولت توکیا عجب
آئی ہے تمکو ملک سلیمان کی کیا خبر

آیا ہے ایک شہر غریباں سے تازہ تو
میر اس جوان حال پر یشان کی کیا خبر

## ردیف الراء منتخب از دیوان سوم میر نوزدہ اشعار۔

پیس مارا دل غموں نے کوٹ کر
کیا اجاڑا اس نگر کو لوٹ کر

ابر سے آشوب ایسا کب اٹھا
خوب روئے دیدۂ تر پھوٹ کر

کیون گریباں کو پھروں پھاڑے نہ میر

دامن اسکا تو گیا ہے چھوٹ کر
اے مرغ چمن صبح ہوئی زمزمہ سر کر
دم کھینچ نہ دل سے کوئی تکڑے جگر کر
فرہاد سے پتھر پہ ہویں صنعتیں کیا کیا
دل جاکے جگر کاوی میں کچھ تو بھی ہنر کر
کسب اور کیا ہوتا عوض ریختے کے کاش
پچھتائے بہت میر ہم اسم کام کو کرکر
سعی و طلب بہت کی مطلب کے تئیں نہ پہنچی
نا چار اب جہاں سے بیٹھے ہیں ہاتھ اٹھاکر
ارمان ہے جنھوں کووے اب کریں محبت
ہم تو ہوے پشیمان دل کے تئیں لگاکر
میں میر ترک لے کر دنیا سے ہاتھ اٹھایا
دو ویش تو بھی توہے حق میں میرے دعا کر
تو بھی تو ایکدن چل گلشن میں ساتھ میرے
کرتی ہے کیا تبختر بلبل گل چمن پر
دل جو بجا نہیں ہے وحشی سائیں پھرون ہوں
تم جائیو نہ ہرگز میرے دیوانہ پن پر



کس طرح میر جی کا ہم توبہ کرنا مانیں
کل تک یہی داغ مئے تھے سب رونکے پیرہن پر
سحر گوش گل میں کہا میں نے جاکر
کھلے بند مرغ چمن سے ملاکر
مبارک تمھیں میر ہو عشق کرنا
بہت ہم تو پچھتائے دل کو لگاکر
مذہب سے میرے کیا تجھے میرا دیار اور
میں اور یار اور مرا کاروبار اور
چلتا ہے کام مرگ کا خوب اسکے دور میں
ہوتی ہے گرد شہر کے روز یک مزار اور
بندے کو ان فقیروں میں گینئے نہ شہر کے
صاحب نے میر مجھ کو دیا اعتبار اور
دل کوتو لاگ ہی ہے تکوں راہ کب تلک
اس پر ہے یک عذاب شدید انتظار اور
کاہیکو اس قرار سے تھا اضطراب وقلق
ہوتا ہے ہاتھ رکھنے سے دل بیقرار اور

ردیف الراء منتخب از دیوان چہارم میر پنج اشعار۔

دل رکھ قوی فلک کے زبردستی پر نہ جا
گر کشتی لگ گئی ہے تو تو بھی تلاش کر
پھرتا ہے کیا تو میرؔ گلستاں میں غمزدہ
کچھ دلخراش لکھ بھی قلم یک تراش کر
مرتے ہیں ہم تو آدم خاکی کے شان پر
اللہ رے دماغ کہ ہے آسمان پر
شوخی تو دیکھو آپ ہی کہا آؤ بیٹھو میرؔ
پوچھا کہاں تو بولے کہ میری زباں پر
دل نہیں درد مند اپنا میرؔ
آہ و نالے اثر کریں کیونکر

ردیف الراء منتخب ازدیوان پنجم میرؔ ہفت اشعار۔

بات کہو کیا چپکے رہو ہو یاں آکر
ایسے گنگے بیٹھو ہو تم تو بیٹھے اپنے گھر جاکر
ایک آدھ دن نکل مت اے ابر ادھر سے ہو کر
بیٹھا ہوں میں ابھی تک سارا جہاں ڈبو کر
کیا خوب زندگی کی دنیا میں شیخ جی نے
تعبیر کرتے میں سب اب انکو مردہ شوکر



احوال میرؔ جی کا مطلق گیا نہ سمجھا
کچھ زیر لب کہا بھی سو دیر دیر روکر
رحمت اگر یقینی ہے تو کیا ہے زہد شیخ
اے بیوقوف جاے عبادت گناہ کر
پر کالے آگے تھے کیا نالہائے بلبل
شبنم سے آبلے ہیں گلبرگ سے زبان پر
دل کیا مکان پھراسکا کیا صحن میرؔ لیکن
غالب ہے تو سعی میں میدان لا مکان پر

ردیف الراء منتخب ازدیوان ششم میر بست وسہ اشعار

دل کی آفت ہے آئی جانوں پر
یہ فسانہ رہا زبانوں پر
عشق میں ہوش و صبر سنتے تھے
رکھ گئے ہاتھ سو تو کانوں پر
عرش و دل دونو کا ہے پایہ بلند
سیر رہتی ہے ان مکانوں پر
جیسے بازار میں ہے تجھ سے متاع
بھیڑ ہی رہتی ہے دوکانوں پر

غم و غصہ ہے حصے میں میرے
اب معیشت ہے اپنی کھانوں پر
قصہ دنیا میں میرؔ بہت سنے
نہ رکھوں گوش ان فسانوں پر
جو راہ دوستی میں اے میر مرگئے ہیں
سر دینگے لوگ ان کے پاکی نشان کے اوپر
شاید کہ منھ پھرا ہے بندون سے کچھ خدا کا
نکلے ہے کام اپنا کوئی خدا خدا کر
وہ بیوفا نہ آیا بالیں پہ وقت رفتن
سو بار ہم نے دیکھا سر کو اٹھا اٹھا کر
مدت ہوئی ہمیں ہے و ان سے جواب مطلق
دفتر گئے روانہ لکھ لکھ لکھا لکھا کر
کیا دور میرؔ منزل مقصود کی ہے اپنی
اب تھک گئے ھیں ادھر قاصد چلا چلا کر
ہوں کوبکو صبا سا پر کچھ نہیں ہے حاصل
شاید برات اپنی لکھی ہوا کے اوپر
بندون سے کام تیرا اے میرؔ کچھ نہ نکالا
موقوف مطلب اپنا اب رکھ خدا کے اوپر



زانو پہ سر ہے اکثر مت فکر اسقدر کر
دل کوئی لے گیا ہے تو میرؔ ٹک جگر کر
خورشید ماہ دونو آخر نہ دل سے نکلے
آنکھوں میں پھر نہ آئے جی سے میرے اتر کر
یوسف عزیز دلہا جامصر میں ہوا تھا
ذلت جو ہو وطن میں تو کوئی دن سفر کر
اے ہمنشین غشی ہے میں ہوش میں نہیں ہوں
مجھ کو میری زبانی سو بار اب خبر کر
کیا حال زار عاشق کرے بیان نہ پوچھو
کرتا ہے بات کوئی دل کے تو چشم تر کر
مارے سے غل کئے سے جاتا نہیں ہے ہرگز
نکلے گا اس گلی سے شاید کہ میر مرکر
باندھے کمر سحر گہ آیا ہے میری کین پر
جو حادثہ فلک سے نازل ہوا زمین پر
اقرار میں کہاں ہے انکار کی سی خوبی
ہوتا ہے شوق غالبؔ اسکے نہیں نہیں پر
آخر کو ہے خدا بھی تو اے میاں جہاں میں

بندے کے کام کچھ کیا موقوف ہیں تمھیں پر

تھی چشم خون فشان پر شاید کہ دست و دامن

ہیں میر داغ خون کے پیراہن آستین پر

ردیف الزاء منتخب از دیوان اول میرؔ ہفت شعر۔

ہوتا نہیں ہے باب اجابت کا واہنوز

بسمل پڑے ہے چرخ پہ میری دعا ہنوز

غنچے چمن چمن کھلے اس باغ دہر میں

دل ہی مرا ہے جو نہیں ہوتا ہے وا ہنوز

ہے بال وپر اسیر ہوں کنج قفس میں میرؔ

جاتی نہیں ہے سر سے چمن کی ہوا ہنواز

میرؔ کو ضعف میں میں دیکھ کہا کچھ کہیئے

ہے تجھے کوئی گھڑی قوت گفتار ہنوز

ابھی ایکدم میں زبان جلنے سے رہ جاتی ہے

درد دل کیوں نہیں کرتا ہے تو اظہار ہنوز

آنسو بھرلا کے بہت حزن سے یہ کہنے لگا

کیا کہوں تجھ کو سمجھ اسپہ نہیں یار ہنوز

آنکھوں میں آن رہا جی جو نکلتا ہی نہیں

دل میں میرے گرہ حسرت دیدار ہنوز



ردیف ل ازار منخب از دیوان دو میرؔ یک شعر۔

برسوں سے میرؔ ماتم مجنوں ہے دشت میں

روتا ہے آکے ابر سیہ اس طرف ہنوز

ردیف السین منتخب زدیوان اول میرؔ دو شعر۔

اے ابر تر تو اور کسی سمت کو برس

اس ملک میں ہمارے ہے یہ چشم تر ہی بس

حیران ہوں میرؔ نزع میں اب کیا کروں بھلا

احوال دل بہت ہے مجھے فرصت یکنفس

ردیف السین منتخب از دیوان دوم میرؔ پنج اشعار

یہی گالی یہی جھڑکی یہی چھیڑ

نہ کچھ میرا کہا تونے کبھو پاس

چل اب اے میرؔ بس اس سرو قد بن

بہت رویا چمن کے آبجو پاس

جو دیر سے حرم کو گئے سو وہیں موئے

آتا نہیں ہے جاکے کوئی پھر خدا کے پاس

کیا جانئے کہ کہتے ہیں کس کو یگانگی

بیگانے ہی سے ہم رہے اس آشنا کے پاس

میرؔ اس دل گرفتہ کی یاں تو ملی نہ داد
عقدہ یہ لیکے جاؤنگا مشکل کشا کے پاس

ردیف السین منتخب از دیوان سوم میرؔ پنج اشعار۔

کسو محبوب کے ہو گور پر گل
ہماری خاک کو ہے خار و خس بس

چمن کے غم میں سینہ داغ ہے میرؔ
بہت نکلی ہماری بھی ہوس بس

چشم پوشی نہ کر فقیر ہے میرؔ
مہر کی اسکو یک نظر ہے بس

امیروں تک رسائی ہوچکی بس
مری محنت آزمائی ہوچکی بس

گلے میں گیروی کفنی ہے اب میرؔ
تمھاری میرزائی ہوچکی بس

ردیف السین منتخب از دیوان چہارم میرؔ ایک شعر۔

دوری میں جس کے مر گئے رک رک کے میرؔ ہم
نکلا نہ وہ سو ہو کہ ہماری مزار پاس

ردیف السین منتخب از دیوان پنجم میرؔ شش اشعار۔



یار ہم سے جدا ہوا افسوس
نہ جدا ہوکے پھر ملا افسوس

رات دن ہاتھ ملتے رہتے ہیں
دل کے جانے کا ہے بڑا افسوس

نوش دارو ہے نیش دارو میرؔ
متاثر نہیں دوا افسوس

آنکھ کھلتے گئی بہار افسوس
گل کو دیکھا بھی نہ ہزار افسوس

نہ معروف نہ آشنا کوئی
ہم ہیں بے یار و بے دیار افسوس

کیا کیا تم نے ہم سے کہا تھا کچھ نہ کیا افسوس
کیا کیا کڑھایا جی سے مارا لہو پیاس افسوس

ردیف الشین منتخب از دیوان اول میرؔ نہ اشعار

دل تو افگار ہے جگر ہے ریش
یک مصیبت ہے مرے تئیں درپیش

پان تو لیتاجا فقیروں کے
برگ سبز است تحفہ درویش

فکر کر زاد آخرت کا بھی

میرؔ اگر تو ہے عاقبت اندیش
شب اس دل گرفتہ کو وار کر بزور ے

بیٹھے تھے شیرہ خانے میں ہم کتنے ہرزہ گوش
آئی صدا کہ یاد کرو دور رفتہ کو

عبرت بھی ہے ضرور ٹک اے جمع تیز ہوش
جمشیدؔ جن نے وضع کیا جام کیا ہوا

وے صحبتیں کہاں گئیں کیدھروے ناونوش
خبر لالہ اسکے جام سے پاتے نہیں نشان

ہے کو کنار اسکی جگہ اب سبو بدوش
جھومی ہے بید جاے جوانان میگسار

بالائے خم ہے خشت سر پیر میفروش
میرؔ اس غزل کو خوب کہا تھا ضمیر نے

پرائے زبان دراز بہت ہو چکے خموش

ردیف الشین منتخب از دیوان دوم میر دہ اشعار

کیا کہیئے کیا رکھے ہیں ہم تجھ سے یار خواہش
یک جان وصد تمنا یکدل ہزار خواہش

لے ہاتھ میں قفس ٹک صیاد چل چمن تک
مدت سے ہے ہمیں بھی سیر بہار خواہش



نے کچھ گنہ ہے دل کا نے جرم چشم اسمیں
رکھتی ہے ہمکو اتنا ہے اختیار خواہش

حالانکہ عمر ساری مایوس گذری تسپر
کیا کیا رکھیں ہیں اسکی امیدوار خواہش

کرتے ہیں سب تمنا پر میرؔ جی نہ اتنے
رکھیئے یار تم کو پایان کار خواہش

مطلق نہیں ہے ادھر اس دلربا کی خواہش
کیا جانتے کہ کیا ہے یار و خدا کی خواہش

اقلیم حسن سے ہم دل پھیر لے چلے ہیں
کیا کرے یاں نہیں ہے جنس وفا کی خواہش

خونِ جگر ہی کھانا آغاز عشق میں ہے
رہتی ہے اس مرض میں پھر کب غذا کی خواہش

وہ شوخ دشمن جان اے دل تو اسکا خواہاں
کرتا ہے کوئی ظالم ایسی بلاکی خواہش

میری بھی حق میں کر ٹک ہاتھوں کو میرؔ اونچا
کہتا ہے اہل دل سے ہر یک دعا کی خواہش

ردیف الشین منتخب از دیوان سوم میرؔ پنج اشعار

اسکے در پر شب نہ کر اے دل خروش
کہتے ہیں دیوار بھی رکھتی ہے گوش
دوستوں کا دردِ دل ٹک گوش کر
گر نصیب دشمناں ہے دردِ گوش
فکر میں مرگ کے ہوں سر در پیش
ہے عجب طور کا سفر درپیش
کیا کروں نقل راہ ہستی میں
مرحلے آئے کسقدر درپیش
کیا پتنگے کو شمع روئے میرؔ
اسکی شب کو بھی ہے سحر درپش

ردیف اشین منتخب از دیوان پنجم میر سہ ۳ اشعار۔

رکھتے رہے بتوں سے مہر وفا کی خواہش
اس آرزو نے مارا یہ بھی خدا کی خواہش
بیماری دلی پر میں صبر کر رہا ہوں
جی کو نہیں ہے میرے مطلق دوا کی خواہش
حیران کار الفت اے میرؔ چپ ہوں میں تو
پوچھا کرو ہو ہر دم کیا بینوا کی خواہش



ردیف الطا منتخب از دیوان دوم میرؔ چہار اشعار ــــ

عشق کی راہ نہ چل خبر ہے شرط
اول گام ترک سر ہے شرط
دعویٔ عشق یوں نہیں صادق
زردیٔ رنگ و چشم تر ہے شرط
قصد حج ہے تو شیخ کو لے چل
کعبے جانے کو یہ بھی خر ہے شرط
دل کا دینا ہے سہل کیا اے میرؔ
عاشقی کرنے کو جگر ہے شرط

ردیف الطا منتخب از دیوان پنجم میرؔ یک شعر ۔

عشق کو جرأت و جگر ہے شرط زرد سے رنگ و چشم تر ہے شرط

ردیف الظا منتخب از دیوان سوم میرؔ شعر ۔

جو وہ ہے تو ہے زندگانی سے حظ
مزا عمر کا ہے جوانی سے حظ
نہیں وہ تو سب کچھ یہ ہے لطف ہے

نہ کھانے میں لذت نہ پانی سے حظ
کہا درد دل رات کیا میرؔ نے
اٹھایا بہت اس کہانی سے حظ

ردیف العین منتخب از دیوان سوم میرؔ پنج اشعار ۔

ہے میری ہے یک غزل پر اجتماع
خانقاہ میں کرتے ہیں صوفی سماع
وجد میں رکھتا ہے اہل فہم کو
میرے شعرو شاعری کا استماع
یار دشمن ہوگیا اس کے سبب
ہے متاع دوستی بھی کیا متاع
دل جگر خون ہوکے رخصت ہو گئے
حسرت آلودہ ہے رشک وداع
میر درد دل نہ کہہ ظالم بس اب
ہوگیا ہے سامعوں کو تو صداع

ردیف الغین منتخب از دیوان سوم میرؔ پنج اشعار ۔

اب نہیں سینے میں میرے جاے داغ



سوز دل سے داغ ہے بالائے داغ
دل جلا آنکھیں جلیں جی جل گیا
عشق نے کیا کیا ہمیں دکھلائے داغ
دل جگر جل کر ہوئے ہیں دونو ایک
درمیان آیا ہے جب سے پائے داغ
منفعل ہیں لالہ و شمع و چراغ
ہمنے بھی کیا عاشقی میں کھائے داغ
وہ نہیں اب میرؔ جو چھاتی جلے
کھاگیا سارے جگر کو ہائے داغ

ردیف الغین منتخب از دیوان پنجم میر دو اشعار ۔

اٹھنے دیتا نہیں شکستہ دل
ڈہ گیا کیا مکان دریغ دریغ
تب کھلی آنکھ میرؔ اپنی جب
جاچکا کاروان دریغ دریغ

ردیف الفا منتخب از دیوان اول میرؔ ہفت اشعار ۔

ایک دن میں نے لکھا تھا اسکو اپنا درد دل

آج تک جاتا نہیں سینے سے خامے کے شگاف
کن لیا ہے تم سے مجھلگا کہ داد دو

ٹک کان ہی رکھا کرو فریاد کے طرف
حیران کار عشق ہے شیرین کا نقش میر

کچھ یوں ہے دیکھتا نہیں فریاد کے طرف
محبت نے شاید کہ دی دل کو آگ

دھواں سا ہے کچھ اس نگر کے طرف
بہت رنگ ملتا ہے دیکھو کبھو

ہماری طرف سے سحر کے طرف
نہ سمجھا گیا ابر کیا دیکھ کر

ہوا تھا مرے چشم تر کے طرف
ٹپکتا ہے پلکوں سے خون مستقل

نہیں دیکھتے ہم جگر کے طرف

ردیف الف منتخب از دیوان دوم میر دو اشعار ۔

اس پہلوئ فگار کو بستر سے کام کیا
مدت ہوئی کہ چھوئے ہے آرام کی طرف

دیکھی ہے جب سے اس بت کافر کی شکل میر



جاتا نہیں ہے جی تنگ اسلام کی طرف

ردیف الف منتخب از دیوان سوم میر دو اشعار ۔

کیا پیام و سلام ہے موقوف
رسم ظاہر تمام ہے موقوف

روز وعدہ ہے ملنے کا لیکن
صبح موقوف شام ہے موقوف

ردیف القاف منتخب از دیوان اول میر دو اشعار ۔

درد ہے خود ہی خود دوا ہے عشق
شیخ کیا جانے تو کہ کیا ہے عشق

تو نہووے تو نظم کل اٹھ جائے
سچ ہیں شاعرانِ خدا ہے عشق

ردیف القاف منتخب از دیوان دوم میر پنج اشعار ۔

کیا کہوں تم سے میں کہ کیا ہے عشق
جان کا روگ ہے بلا ہے عشق

عشق معشوق عشق عاشق ہے

یعنی اپنا ہی مبتلا ہے عشق
عشق ہے طرز وطور عشق کے تئیں
کہیں بندہ کہیں خدا ہے عشق
گر پرستش خدا کی ثابت کے
کسو صورت میں ہو بھلا ہے عشق
میرؔ جی زرد ہوتے جاتے ہو
کیا کہیں تم نے بھی کیا ہے عشق

ردیف القاف منتخب از دیوان سوم میر ہفت اشعار۔

کیا حقیقت کہوں کہ کیا ہے عشق
حق شناسوں کے ہاں خدا ہے عشق
دل لگا ہو تو جی جہاں سے اٹھا
موت کا نام پیار کا ہے عشق
اور تدبیر کو نہیں کچھ دخل
عشق کے درد کی دوا ہے عشق
کیا ڈبویا محیط میں غم کے
ہم نے جانا تھا آشنا ہے عشق
عشق سے جا نہیں کوئی خالی



دل سے لے عرش تک بھرا ہے عشق
کون مقصد کو عشق میں پہنچا
آرزو عشق مدعا ہے عشق
میر مرنا پڑے ہے خوباں پر
عشق مت کر کہ بد بلا ہے عشق

ردیف القاف منتخب از دیوان پنجم میر چہار اشعار۔

ارض و سما میں عشق ہے سارا چاروں اور بھرا ہے
ہم ہمیں جناب عشق کے بندے نزدیک اپنے خدا عشق
ظاہر و باطن اول آخر پائیں بالا عشق ہے سب
نور و ظلمت معنی و صورت سب کچھ آپ ہی ہوا ہے عشق
ایک طرف جبرئیل آتا ہے ایک طرف لاتا ہے کتاب
ایک طرف پنہاں ہے دلوں میں ایک طرف پیدا ہے عشق
خاک و باد آب و آتش سب ہے موافق اپنے تئیں
جو کچھ ہے سو عشق بتان ہے کیا کہئے اب کیا ہے عشق

ردیف الکاف منتخب از دیوان اول میرؔ بست و چہار اشعار۔

بے چین مجھ کو چاہتا ہر دم ہے زیر خاک

چھاتی پہ بعد مرگ بھی دل جم ہے زیر خاک
آسود گی جو چاہے تو مرنے پہ دل کو رکھ
آشفتگی طبع ہبت کم ہے زیر خاک
تنہا تو اپنے گور میں رہنے پہ بعد مرگ
مت اضطراب کر یو کہ عالم ہے زیر خاک
رویا تھا نزع میں میں اسے یاد کر بہت
ابتک مری ہر ایک مژہ نم ہے زیر خاک
کیا آسمان پہ کھینچے کوئی میرؔ آپ کو
جانا جہاں سے سب کو مسلم ہے زیر خاک
اب وہ نہیں کہ شواش رہتی تھی آسمان تک
آشوب نالہ اب تو پہنچا ہے لا مکان تک
بہہ بھی گیا بدن کا سب ہو کے گوشت پانی
اب کاردرے عزیز اں پہنچی ہے استخواں تک
تصویر کی سی شمعین خامش جلتے ہیں ہم
سوز درون ہمارا آتا نہیں زبان تک
روتے پھرے ہیں لوہویک عمر اس گلی میں
باغ و بہار ہی ہے جاوے نظر جہاں تک



آنکھیں جو روتے روتے جاتے رہیں بجا ہے
انصاف کر کہ کوئی دیکھے ستم کہاں تک
مانند طائر نو پر اٹھے جہاں گئے ہم
دشوار ہے ہمارا آنا پھر آشیاں تک
تن کام میں ہمارے دیتا نہیں وہی کچھ
حاضر ہیں میر ہم تو اپنی طرف سے جان تک
مدت ہوے گھٹ گھٹ ہمیں شہر میں مرتے
واقف نہ ہوا نہ کوئی اس آسرار سے اب تک
برسوں ہوئی دل سوختہ بلبل کو مؤے لعک
ایک دود سا اٹھتا ہے چمن زار سے اب تک
اس باغ میں اغلب ہے کہ سرزد نہواہو
یوں نالہ کسو مرغ گرفتار سے اب تک
شب کو تہ اور قصہ میری جان کا دراز
القصہ اب کہا کروں تجھ سے میں کب تلک
باقی یہ داستان ہے اور کل کی رات ہے
گر جان میری میرؔ نہ آپہنچے لب تلک
توشہ آخرت کا فکر رہے

جی سے جانے کا ہے سفر نزدیک
مر بھی رہ میرؔ شب بہت رویا
ہے مری جان اب سحر نزدیک
کعبہ پہنچا تو کیا ہوا اے شیخ
سعی کر ٹک پہنچ کسی دل تلک
نہ گیا میرؔ اپنی کشتی سے
ایک بھی تختہ پارہ ساحل تلک
میں ترک عشق کرکے ہوا گوشے گیر میرؔ
ہوتا پھروں خراب جھاں میں کہاں تلک
بات امل کی چلے ہی جاتی ہے
ہے مگر عوج بن عنق کی تانگ
میرؔ بندوں سے کام کب نکلا
مانگنا ہے جو کچھ خدا سے مانگ

ردیف الکاف منتخب از دیوان دوم میرؔ شانزدہ اشعار۔

آئی نہ ہاتھ میرؔ کے میت بہ کل نماز
تابوت پر تھی اسکے پنت کثرت ملک
غافل ہیں ایسے سوتے ہیں گویا جہاں کے لوگ



حالانکہ رفتی ہیں سب اس کا رداں کے لوگ
مجنون و کوہکن نہ تلف عشق میں ہوئے
مرنے پہ جی ہی دیتے ہیں اس خاندان کے لوگ
مقدور تک نہ گزرے میرے خون سے یار میرؔ
غیروں سے کیا گلہ ہے یہ ہے آشنا کا رنگ
وہ مرگ سے کیوں ڈراتے ہیں لوگ
بہت اس طرف کو تو جاتے ہیں لوگ
مظاہر سب اسکے ہیں ظاہر ہے وہ
تکلف ہے یاں جو چھپاتے ہیں لوگ
عجب کی جگہ ہے کہ اسکی جگہ
ہمارے تئیں ہی بتاتے ہیں لوگ
رہے ہم تو کوئے گئے سے سدا
کبھو آپ میں ہم کو پاتے ہیں لوگ
اس ابر و کمان پر جو قربا ن ہیں ہم
ہمیں کو نشانہ بتاتے ہیں لوگ
نہ سویا کوئی سوز شب سے میرے
قیامت اذیت اٹھا تے ہیں لوگ

ان آنکھوں کے بیمار ہیں میرؔ ہم
بجا دیکھنے ہم کو آتے ہیں لوگ
لیا چیرہ دستی سے گر میرؔ سر تک
نہ پہنچا کبھو ہاتھ اسکی کمر تلک
مجھے نیند کیسی کہ مانند انجم
کھلے رہتی ہیں میری آنکھیں سحر تک
اٹھاپاس بے اختیاری سے سب کا
بکا بیٹھے کرتے ہیں دو دوپہر تک
دماغ اور دل ہیں سرا سیمہ دونو
سرزخم شاید کہ پہنچا جگر تک
محبت میں جی سے گئے میر آخر
خبر گفتنے ہے یہ ہر ہے خبر تک

ردیف الکاف منتخب از دیوان سیوم میرؔ یک شعر۔

رسم و عادت ہے کہ ہر یکوقت کا ہوتا ہے
میرؔ باری یاد کر رونگے کیا یہ درد لوگ

ردیف الکاف منتخب از دیوان چہارم میر یک شعر۔



کچھ رنج دلی میر جوانی میں کھنچا تھا
زردی نہیں جاتی میرے رخسار سے ابتک

ردیف الکاف منتخب از دیوان پنجم میرؔ یازدہ شعر۔

اب رنج و درد و غم کا پہنچا ہے کام جان تک
پر حوصلے سے شکوہ آیا نہیں زبان تک
آواز کے ہمارے تم حزن پر نہ جاؤ
یہ نالہ حزین تو جاتے ہیں آسماں تک
رونا جہاں جہاں تو عین آرزو ہے لیکن
روتا ہوں رویا جاے میرے کنے جہاں تک
اکثر صداع مجھ کو رہتا ہے عاشقی میں
تصدیع درد و غم سے کھینچے کوئی کہاں تک
نفع کثیر اٹھایا عشق کی تجارت
راضی ہیں میرؔ اب تو ہم جان کی زبان تک
کیا ہم میں رہا گردش افلاک سے ابتک
پھرتے ہیں کمہاروں سی بڑی چاک سے اب تک
دشمن ہوئی ہے جسکے لئے ساری خدائی

مربوط ہیں ہم اس بت بے باک سے ابتک
وے کپڑے تو بدلے ہوے میر اسکو کئی دن
تن پیر ہن شکن تنگی پوشاک سے ابتک
عشق مرد آزمانے آخر کار
کئے فرہاد وقیس و میر ہلاک
دیوانے ہیں شہر وفا کے راہ ورسم کے ہم تو میر
دل کے کئے جی دینے والے قاطبتا گھر گھر ہیں لوگ
تاجا ہیں لوگ کشتہ ہجرن میں یہ غریب
کریو تمام گوروں سے میری مزار الگ
ردیف الکاف منتخب ازدیوان ششم میر پنج اشعار
رہی ہے غش و درد دو دو پہر تک
سرزخم پہنچا ہے شاید جگر تک
ہوے ہیں حواس اور ہوش و خرد گم
خبر کچھ تو آئی ہے اس بے خبر تک
زمیں گرد اس مہ کے میرے ہیں عاشق
ستارے فلک کے رہے ہیں ادہر تک
بہار آئی پر ایک پتی بھی گل کی



نہ آئی اسیران بے بال و پر تک
بہت میر برہم جہاں مین رہینگے
اگر رہ گئے آج کی شب سحر تک

ردیف الام منتخب ازدیوان اول میر ہفدہ اشعار ۔

فصل خزان مین سیر جو کی ہم نے جانے گل
چھانی چمن کی خاک نہ تھا نقش پاے گل
اللہ رے عندلیب کی آواز دلخراش
جی ہی نکل گیا جو کہا ان نے ہائے گل
نکلا ہے ایسی خاک سے کس سادہ رو کے یہ
قابل درود بھیجنے کے ہے صفائے گل
گلچین سمجھ کے چنیو کہ گلشن میں میر کے
لخت جگر پڑے ہیں نہیں برگہاے گل
گل کی جفا بھی جاتی دیکھی وفائے بلبل
یک مشت پر پڑے ہیں گلشن میں حاے بلبل
کر سیر جذب الفت گلچیں نے گل چمن میں
توڑا تھا شاخ گل کو نکلی صدائے بلبل

آئی بہار و گلشن گل سے بھرا ہے لیکن
ہے گوشہ چمن میں خالی ہے جائے بلبل
نہ دلخراش نالے ہر شب کے میر تیرے
کردینگے بے نمک ہی شور و نوائے بلبل
کس کو دماغ و شعر و سخن ضعف میں کہ میر
اپنا رہی ہے اب تو ہمیں بیشتر خیال
سبزہ نورستہ رہ گذر کا ہوں
سر اٹھایا کہ ہوگیا پامال
کیوں نہ دیکھوں چمن کو حسرت سے
آشیاں تھا مرا بھی یاں ہر سال
یک آن میں بدلتی ہے صورت جہاں کی
جلد اس نگار خانے سے کر انتقال چل
سالک بہر طریق بدن ہے و بال جان
یہ بوجھ تیرے ساتھ جو ہے اسکو ڈال چل
دنیا ہے میر حادثہ گاہ مقرری
یاں سے تو اپنا پاؤں شتابی نکال چل
اس مہلت دو روزہ میں خطرے ہزار ہیں



اچھا ہے رہ سکو جو خبردار آج کل
کعبہ تلک تو سنتے ہیں ویرانہ و خراب
آباد ہے سو خانہ خمار آج کل
رہتا نہیں ہے کوئی گھڑی اب تو یار دل
آزردہ دل ستمزدہ دل بیقرار دل

ردیف اللام منتخب از دیوان دوم میر یک شعر۔

گر رنگ ہے چلا ہے اور بو ہے تو ہوا ہے
کہ میر اس چمن میں کس سے لگائے دل

ردیف اللام منتخب از دیوان پنجم میر ہفت اشعار۔

دل دل لوگ کہا کرتے ہیں تم نے جانا کیا ہے دل
چشم بصیرت واہووے تو عجائب دیر کی جا ہے دل
اوج و موج کا آشوب اسکے لیکے زمین سے فلک تلک ہے
صورت میں تو قطرہ خون ہے معنی میں دریا ہے دل
جیسے صحرا کوئی کشادہ دامن ہم تو سنتے ہیں
بند کر آنکھیں ٹک دیکھو تو ویسا ہے صحرا ہے دل
کوہکن و مجنوں وامق تم جس سے پوچھو بتادیوے

عشق و جنون کے شہروں میں ہے ہر چار طرف رسوا ہے دل
میر پریشان دل کے غم میں کیا کیا خاطر داری کی
خاک میں ملتے کیوں نہ پھریں اب خوں ہو بہو گیا ہے دل
رکھتا نہیں ہے مطلق تاب عتاب اب دل
جاتا ہے کچھ ڈھائے خانہ خراب اب دل
مدت سے اب وہی ہے مرا ہم کنار دل
آزردہ دل ستمزدہ وبیقرار دل

ردیف اللام منتخب از دیوان ششم میر ہفت اشعار۔

یک توجہ میں رہی ہے سیر اس کی عرش پر
عقل میں آتے نہیں طرفہ طرفہ کارِ دل
باغ سے لے دشت تک رکھتے ہیں یک شور عجب
ہم اسیرانِ قفس کے نالہائے زار دل
طریقِ عشق میں ہے رہنما دل
پیمبر دل ہے قبلہ دل خدا دل
قیامت تھا مروت آشنا دل
موئے پر بھی مرا اسمیں رہا دل



رکا اتنا خفا اتنا ہوا تھا
کہ آخر خون ہو ہوکر بہا دل
گئے وحشت سے باغ وراغ میں تھے
کہیں ٹھہرا نہ دینا سے اٹھا دل
اسیری میں تو کچھ واشد کبھو تھے
رہا غمگین ہوا جب سے رہا دل

ردیف المیم منتخب از دیوان اول میر یازدہ اشعار۔

کیا بلبل اسیر ہے بے بال وپر کہ ہم
گل کب رکھے ہے تکڑے جگر اسقدر کہ ہم
جیتے ہیں تو دکھا دینگے دعوی عندلیب
گل بن خزان میں اب کے وہ رہتی ہے مر کہ ہم
اب دیکھتے ہیں خوب تو وہ بات ہی نہیں
کیا کیا وگر نہ کہتے تھے اپنی زبان سے تم
قصہ مرا سنو گے تو جاتی رہیگی نیند
آرام چشم مت رکھو اس داستان سے تم
اگر راہ میں اسکے رکھا ہے گام
گئے گذرے خضر علیہ السلام

دہن یار کا دیکھ چپ لگ گئے
سخن یاں ہوا ختم حاصل کلام
قیامت ہے یاں چشم و دل سے رہے
چلے بس تو وہاں جاکے کرئے قیام
نہ دیکھی جہان کوئی آنکھون کے اور
نہ لیوے کوئی جس جگہ دل کا نام
جہاں میر زیر و زبر ہو گیا
خراماں ہوا تھا وہ محشر خرام
گرچہ آوارہ جوں صبا ہیں ہم
لیک لگ چلنے میں بلا ہیں ہم
کوئی خواہاں نہیں ہمارا میرؔ
گویا جنس ناروا ہیں ہم

ردیف المیم منتخب از دیوان دوم میر بست وہشت اشعار ــــ

وقفۂ مرگ اب ضروری ہے
عمر طے کرتے تھک رہے ہیں ہم
یہی جانا کہ کچھ نہ جانا ہائے
سو بھی ایک عمر میں ہوا معلوم



علم سب کو ہے یہ کہ سب تو ہے
پھر ہے اللہ کیا نا معلوم
گرچہ تو ہی ہے سب جگہ لیکن
ہم کو تیری نہیں ہے جا معلوم
عشق جانا تھا مار رکھیگا
ابتدا میں تھی انتہا معلوم
دل بھ جا ہو تو میر کچھ کھا وے
کڑھنے پچنے میں اشتہا معلوم
محرم سے کسوروبرو ہوں کاش کے ابہم
بے وجہ غضب رہنے کا پوچھیں جو سبب ہم
تدبیریں کریں اپنے تن زار و زبوں کا
اضراط سے اندو کے ہون آپ میں جب ہم
یک سلسلہ ہے قیس کا فرہاد کا اپنا
جوں حلقہ زنجیر گرفتار ہیں سب ہم
مجمع میں قیامت کے ایک آشوب سا ہوگا
آنکلے اگر عرصے میں یوں نالہ بلب ہم
گہہ نوچ لیا منھ کو گہے کوٹ لی چھاتی

دل تنگی ہجراں سے ہیں مغلوب غضب ہم
آغاز محبت میں تمامی ہوئے اپنے
آے وائے ہوئے خاک بسر راہ طلب ہم
تربت سے ہمارے نہ اٹھے گرد بھی اسے میؔر
جی سے گئے لیکن نہ کیا ترک ادب ہم
اب چھیڑئے جہاں وہیں گویا ہے دردسب
پھوڑا سا ہو گیا ہے ترے غم میں تن تمام
آوارہ گرد بار سے تھے ہم پہ شہر میں
کیا خاک میں ملا ہے یہ دیوان پن تمام
اس کار دست بستہ پہ ریجھا نہ مدعی
کیونکر نہ کام اپنا کرے کوہکن تمام
یک گل زمیں نہ وقفی کے قابل نظر پڑی
دیکھا برنگ آب روان یھ چمن تمام
نکلے ہیں گل کے رنگ گلستان میں خاک سے
یہ وے ہیں اسکے عشق کے خونیں کفن تمام
میں خاک میں ملا نہ کرون کسطرح سفر
مجھ سے غبار رکھتے ہیں اہل وطن تمام



کچھ ہند ہی میں میر نہیں لوگ جیب چاک
ہے میرے ریختوں کا دیوانہ دکن تمام
منظور سجدہ ہے ہمیں اس آفتاب کا
ظاہر میں یوں کرے ہیں نماز زوال ہم
مرے جاتے تھے فرط الفت سے ہم
جئے ہیں خدا ہی کے قدرت سے ہم
جو دیکھو وہ قامت تو معلوم ہو
کہ روکش ہوئے ہیں قیامت سے ہم
خدا سے بھی شب کو دعا مانگتے
نہ اسکا لیا نام غیر ت سے ہم
رکھا جس کو انکھوں میں ایک عمراب
اسے دیکھ رہتے ہیں حسرت سے ہم
نہ مل میر اب کے امیروں سے تو
ہوئے ہیں فقیر ان کی دولت سے ہم
تکلیف دردِدل کی نہ کر تنگ ہونگے لوگ
یہ بات روز کہتے رہے ہمنشین سے ہم

آورہ گردی اپنی کھینچی میرؔ طول کو
اب چاہینگے دعا کسو عزلت نشین سے ہم

ردیف المیم منتخب از دیوان سوم میر دو اشعار۔

ہمیں سرکشی سربلندی سے کیا رہے ضعف میں ہم تو سر در قدم
کہیں کیا کف پا میں میر آبلے چلیں ہم سروں پر مگر دہر قدم

ردیف المیم منتخب از دیوان چہارم میرؔ ۳ اشعار ۔

ظلم ہوئے ہیں کیا کیا ہم پر صبر کیا ہے کیا کیا ہم
آن لگے ہیں گور کنارے اسکی گلی میں جاجا ہم
ہا ہا ہے کرتا لیگا اسکا غرور دو چندان ہے
گھگیانے کا اب کیا حاصل یوہنی کرے ہیں ہا ہا ہم
میرؔ فقیر ہوئے تو یک دن کیا کہتے ہیں پٹے سے
عمر رہی ہے تھوڑی اسے اب کیونکر کاٹیں بابا ہم

ردیف المیم منتخب از دیوان پنجم میرؔ بازدہ اشعار ۔

عشق ہمارے درپئے جان ہے آنے گھر سے نکل کر ہم
سر پر دیکھا یہی فلک ہے جاویں چل کر کیدھر ہم
بعد نماز دعا میں کیں سو میرؔ فقیر ہوئے تم تو



ایسی مناجاتوں سے آگے کاش کے ہاتھ اٹھاتے تم
در پر حرم کے کشود نہیں تو دیر میں جا کر کافر ہو
قشقہ کھینچو پوتھی پر ہو زنار گلے سے بندھاؤ تم
کیا کریں بیکس ہیں ہم بے بس ہیں ہم بے گھر ہیں ہم
کیونکر اڑ کر پہنچیں اس تک طایر بے پر ہیں ہم
گرنہ روئیں کیا کریں ہر چار سو ہے بیکسی
بیدل و بیطاقت وبے دین و بے دلبر ہیں ہم
وہ جو رشک مہ کبھی اس راہ سے نکلا نہ میر
ہم نہ رکھتے تھے ستارہ یعنے بداختر ہیں ہم
تظلم کہ کھینچے الم پر الم
ترحم کہ مت کر ستم پر ستم
علم بازی آہ جانکاہ ہے
رہے ٹوٹتے ہی علم پر علم
جو ہو سر کے آؤ مانوں نہ میں
عبث کھاتے ہو تم قسم پر قسم
کئی بار آنا ادھر لطف سے
عطا پر عطا ہے کرم پر کرم

خطرناک تھی وادی عشق میرؔ
گئے اس پہ بھی ہم قدم پر قدم

ردیف المیم منتخب از دیوان ششم میرؔ را نہ اشعار۔

وے ہم میں جن کو کہئے آزار دیدہ مردم
الفت گزیدہ مردم کلفت کشیدہ مردم
ہے حال اپنا درہم تسپر ہے عشق کا غم
رہتے ہیں دم بخود ہم آفت رسیدہ مردم
وہ دیکھے ہم کو اکبر جن نے نہ دیکھے ہو ویں
آزردہ دل شکستہ خاطر کبیدہ مردم
جو ہے سو لہو مایل ہے بے طور اور جاہل
اہل جہاں میں ساری صحبت نہ دیدہ مردم
جاتے ہیں اسکے جانب مانند تیر سیدھے
مثل کمان حلقے قامت خمیدہ مردم
اوباش بھی ہمارا کتنا ہے تیڑھا بانکا
دیکھ اسکو ہوگئے ہیں کیا کیا کشیدہ مردم
مت خاک عاشقان پر پھر آب زندگی سا
جاگین کہیں نہ سوتے یہ آرامیدہ مردم



لے لے کے منہ میں تنکا ملتے ہیں عاجزانہ
مغرور سے ہمارے بر خویش چیدہ مردم
تھے دست بستہ حاضر خدمات میں میرؔ گویا
سیمین تنوں کے عاشق ہیں زرخریدہ مردم

ردیف النون منتخب از دیوان اول میرؔ یکصد و سی اشعار۔

بے کلی بے خودی کچھ آج نہیں
ایک مدت سے وہ مزاج نہیں
درد اگر یہ ہے تو مجھے بس ہے
اب دوا کی کچھ احتیاج نہیں
ہم سے اپنے سی کی بہت لیکن
مرض عشق کا علاج نہیں
شہر خوبی کو خوب دیکھا میر
جنس دل کا کہیں رواج نہیں
وحشت میں ہوں بلا گروادی پر اپنے آون
محبوں کی محنتیں سب میں خاک میں ملاؤں
ہنس کر کبھو بلایا تو برسوں تک رولایا
اسکی ستم ظریفی کس کے تئیں دکھاوں

فریادی ہوں تو ٹپکے لو ہو میری زبان سے
نالے کو بلبلوں کی خاطر میں بھی نہ لاؤں
پوچھو نہ دل کے غم کو ایسا نہ ہو وے یاراں
مانندروضہ خوان کے مجلس کے تئیں جگاؤں
یکدم تو چونک بھی پڑ شور وفغاں سے میرے
اے بخت خفتہ کب تک تیرے تئیں جگاؤں
ازخویش رفتہ ہر دم فکر وصال میں ہوں
کتنا میں کھویا جاؤں یارب کہ تجھ کو پاؤں
آسودگی تو معلوم اے میرؔ جیتے جی یاں
آرام تب ہی پاؤں جب جی سے ہاتھ اٹھاؤں
میرؔ صاحب کو دیکھئے جو بنے
اب بہت گھر سے کم نکلتے ہیں
آنکلے تھے جو حضرت میرؔ اس طرف کہیں
میں نے کیا سوال یہ انکے جناب میں
حضرت سنو تو میں بھی تعلق کروں کہیں
فرمانے لاگے روکے یہ اسکے جواب میں
توجان ایک تجھ سے بھی آگے جو کل تھے یہاں



ہیں آج صرف خاک جہان خراب میں
ناکام رہنے ہی کا تمھیں غم ہے آج میرؔ
بہتوں کے کام ہوگئے ہیں کل تمام یاں
مستوجب ظلم و ستم و جور و جفا ہوں
ہر چند کہ جلتا ہوں پہ سرگرم وفا ہوں
آتے ہیں مجھے خوب یہ دونو ہنر عشق
رونے کے تئیں آندھی ہوں کڑھنے کو بلا ہوں
اس گلشن دنیا میں شگفتہ نہ ہوا میں
ہوں غنچہ افسردہ کہ مردود صبا ہوں
مشہور ہیں دلون کے میرے بیقراریاں
جاتے ہیں لامکان کو دل شب کی زاریاں
اب کس کس اپنی خواہش مردہ کو روئے
نہیں ہم کو اس سے سیکڑوں امیدواریاں
کیا جانتے تھے ایسے دن آجائینگے شتاب
روتے گذرتیاں ہیں ہمیں لاتیں ساریاں
بچ جاتا ایک رات جوکٹ جاتے اور میر
کائیں نہیں کوہکن نے بہت لاتیں بھاریاں

آسودہ کیوں کہ ہوں میں کہ مانند گردباد
آوارگی تمام ہے میری سرشت میں

درد واندوہ میں ٹھہرا جو رہا مین ہی ہون
رنگ روجسکے کبھی منھ نہ چڑھا میں ہی ہوں

اپنے کوچے میں فغان جسکی سنو ہو ہر رات
وہ جگر سوختہ وسینہ جلا میں ہی ہوں

میر آوارہ عالم جو سنا ہے تو نے
خاک آلودہ وہ اے بادِ صبا میں ہی ہوں

کاسہ سر کو لئے مانگتا دیدار پھرے
میر وہ جان سے بیزرا گدا میں ہی ہوں

یارب کوئی تو واسطہ سرگشتگی کا ہے
یک عشق پھر رہا ہے تمام آسمان میں

ہم اس سے آہ سوز دل اپنا نہ کہہ سکے
تھی آتش دروں سے پھپھولے زبان میں

غم کھینچتے کو کچھ تو توانائی چاہیئے
سویاں نہ دل میں تاب نہ طاقت ہے جان میں

غافل نہ رہیو ہم سے کہ ہم وے نہیں رہے



ہوتا ہے اب تو حال عجب ایک آن میں
وے دن گئے کہ آتش غم دل میں تھی نہاں

سوزش رہی ہے اب تو ہے ایک استخوان میں
دل نذر و دیدہ پیشکش اے باعث حیات

سچ کہ کہ جی لگے ہے ترا کس مکان میں
کھینچا نہ کر تو تیغ کہ یکدن نہیں ہیں ہم

ظالم قیامتیں ہیں بہت امتحان میں
پھاڑا ہزار جاسے گریبان صبر میرؔ

کیا کہے گئی نسیم سحر گل کے کان میں
زبان رکھ غنچہ سان اپنے دہن میں

بندھی مٹھی چلاجا اس چمن میں
نہ کھول اے یار میرا گور میں منھ

کہ حسرت ہے میری جاگہ کفن میں
رکھا کر ہاتھ دل پر آہ کرتے

نہیں رہتا چراغ ایسی پون میں
نہ تجھ بن ہوش میں ہم آئے ساقی

مسافر ہی رہے اکثر وطن میں

خرد مندی ہوئے زنجیر ورنہ
گذرتی خوب تھی دیوانہ پن میں
کہاں کے شمع و پروانے گئے مر
بہت آتش بجان تھی اس چمن میں
کہاں عاجز سخن قادر سخن ہوں
ہمیں ہے شبہ یاروں کے سخن میں
گداز عشق میں یہ بھی گیا میرؔ
یہی دھوکا سا ہے اب پیرہن میں
کوئی نہیں جہاں مین جو اندوہگیں نہیں
اس غم کدے میں آہ دل خوش کہیں نہیں
کرتا ہے ابر دعوی دریا دلی عبث
دامن نہیں مرا تو مری آستین نہیں
ہم آپ ہی کو اپنا مقصود جانتے ہیں
اپنے سوائے کس کو موجود جانتے نہیں
عجزو نیاز اپنا اپنی طرف ہے سارا
اس مشت خاک کو ہم مسجد جانتے ہیں
صورت پذیر ہم بن ہر گز نہیں دی معنی



اہل نظر ہمیں کو معبود جانتے ہیں
عشق انکے عقل کو ہے جو ماسوا ہمارے
ناچیز جانتے ہیں نابود جانتے ہیں
مہمان میرؔ مت ہو خوان فلک پہ ہرگز
خالی یہ مہرومہ کے دونو رکابیاں ہیں
سب خوبیاں ہیں شیخ مشیخت پناہ میں
پر ایک حیلہ سازی ہے اس دستگاہ میں
شہاں کے کحل جواہر تھے خاک پاجن کی
انہیں کے آنکھوں میں پھرتے سلانیاں دیکھیں
بنی نہ اپنی تو اس جنگجو سے ہرگز میرؔ
لڑائیں جب سے ہم آنکھیں لڑائیاں دیکھیں
صبر و طاقت کو کڑھوں یا خوشدلی کا غم کروں
اسمیں حیران ہوں بہت کس کس کا میں ماتم کروں
موسم حیرت ہے دل بھر کر تورونا مل چکا
اتنے بھی آنسو بہم پہنچیں کہ مشرگاں نم کروں
باہا وعدوں کی راتیں آئیاں
طالعوں نے صبح کر دکھلائیاں

عشق میں ایذائیں سب سے پائیاں
رہ گئے آنسو تو آنکھیں آئیاں

مضطرب ہو کر کیا سب میں سبک
دل نے آخر خفتیں دلوائیاں

پاس مجھ کو بھی نہیں ہے میرؔ اب
دور پہنچے ہیں میری رسوائیاں

اب آنکھوں مین خون دمبدم دیکھتے ہیں
نہ پچھو جو کچھ رنگ ہم دیکھتے ہیں

جو بے اختیاری یہی ہے تو قاصد
ہمیں آکے اسکے قدم دیکھتے ہیں

گھے داغ رہتا ہے دل گھے جگر خون
ان آنکھوں سے کیا کیا ستم دیکھتے ہیں

لکھیں حال کیا اسکو حیرت سے ہم تو
گھے کاغذ وگہ قلم دیکھتے ہیں

وفا پیشگی قیس تک تھی بھی کچھ کچھ
اب اس طور کے لوگ کم دیکھتے ہیں

شتابی آوے اجل میر جاوے یہ رونا



کہ میرے شور سے تصدیع یار پاتے ہیں

عام حکم شراب کرتا ہوں
محتسب کو کباب کرتا ہوں

ٹک تو رہ اے بنائے ہستی تو
تجھ کو کیسا خراب کرتا ہوں

اے عدم ہونے والو تم تو چلو
ہم بھی اب کوئی دم آتے ہیں

دیدہ و دل شتاب گم ہوں میرؔ
سر بہ آفت ہمیشہ لاتے ہیں

آتا ہے دل میں حال اپنا بھلا کہوں
پھر آپ ہی آپ سوچ کے کہتا ہوں کیا کہوں

پروانہ پھر نہ شمع کے خاطر جلا کرے
گر بزم میں یہ اپنا ترا ماجرا کہوں

دل اور دیدہ باعث ایذا ونور عین
کس کے تئیں برا کہوں کسکو بھلا کہوں

آوے سموم جائے صبا باغ سے سدا
گر شمہ اپنے سوز جگر کا میں جا کہوں

جاتا ہوں میر دشت جنون کو میں اب یہ کہ
مجنوں کہیں ملے تو تری بھی دعا کہوں

کہو ویں ہیں یند میری مصیبت بیا نیاں
تم بھی تو ایک رات سنو یہ کہانیاں

آنکھوں نے میر صاحب وقبلہ و رم کیا
حضرت بکا کیا نہ کرو رات کے تئیں

بوے گل اور رنگ گل دونو ہیں دلکش اے نسیم
ایک بقدر یکنگاہ دیکھئے تو وفا نہیں

شکوہ کروں ہوں بخت کا اتنی غضب ہنوتاں
مجھ کو خدا نخواستہ تم سے تو کچھ گلا نہیں

نالے کیا نہ کر سناتو جی میرے یہ عند لیب
بات میں بات عیب ہے میں نے تجھے کہا نہیں

چشم سفید واشک سرخ آہ دل خزین ہے یاں
شیشہ نہیں ہے مئ نہیں ابر نہیں ہوا نہیں

آب و ہوائے ملک عشق تجربہ کی نہی میں بہت
کرکے دوائے درد دل کوئی بھی پھر جیا نہیں

ناز بتاں اٹھا چکا دیر کو میر ترک کر



کعبے میں جاکے بیٹھ میاں تیرے مگر خدا نہیں

دیوانہ ہو گیا تو میر آخر ریختہ کہ کہ
نہ کہتا تھا میں اے ظالم کہ یہ باتیں نہیں بھلیاں

داماں و جیب و دیدہ مشرگان و آستین
اب کونسا رہا ہے کہ ان میں سے تر نہیں

آتا ہے تیرے کوچے میں ہو تا جو میر یاں
کیا جانئے کدھر کو گیا کچھ خبر نہیں

مسجد سے لا میکدے پرکاش ابر روزبر سے برسے
واں رو سفیدیاں ہیں یان رو سیاہیاں

غالب تو یہ ہے زاہد رحمت سے دور ہو وے
درکاروان گنہ ہیں یاں ہے گنا ہیاں

تجھے بھی یار اپنا یوں تو ہم ہر بار کہتے ہیں
ولے کم ہیں بہت وے لوگ جنکو یار کہتے ہیں

تری آنکھوں کو آؤں دیکھنے میں تو عجب مت کر
کہ بہتر ہے عیادت اور انہیں بیمار کہتے ہیں

آجائیں ہم نظر جو کوئی دم بہت ہے یاں
مہلت ہمیں بسان شرر کم بہت ہیاں

یک لحظہ سینہ کوبی سے فرصت ہمیں نہیں
یعنے کہ دل کے جانیکا ماتم بہت ہے یاں
حاصل ہے کیا سوائے ترانے کے دہر میں
اٹھ آسمان تلے سے کہ شبنم بہت ہے یاں
ہم رہ روان راہ فنا دیر رہ چکے
وقفہ بسان صبح کوئی دم بہت ہے یاں
اس بتکدے میں معنی کا کس سے کریں سوال
آدم نہیں ہے صورت آدم بہت ہے یاں
شاید کہ کام صبح تک اپنا کھنچے نہ میرؔ
احوال آج شام سے درہم بہت ہے یاں
لیتے ہیں سانس یوں ہم جوں تار کھنچتے ہیں
اب دل گرفتگی سے آزار کھنچتے ہیں
بے طاقتے نے ہمکو چاروں طرف سے کھویا
تصدیع گھر میں بیٹھے ناچار کھنچتے ہیں
منصور کی حقیقت تم نے سنی ہی ہوگی
حق جو کہے ہے اسکو یاں دار پر کھنچتے ہیں
شکوہ کروں تو کس سے کیا شیخ کیا برہمن



ناز اس بلاے جان کی سب یار کھینچتے ہیں
ناوک سے میر اسکے دل بستگی تھی مجھ کو
پیکان جگر سے میری دشوار کھینچتے ہیں
لاویں اسے بھی بعد میرے میری لاش پر
پر کہ رکھا ہے اپنے ہر ایک مہربان کو میں
گردش فلک کی کیا ہے جو دور قدح میں ہے
جیتار ہونگا چرخ مدام آسماں کو میں
عاشق ہے یامریض ہے پوچھو تو میرؔ سے
باتا ہوں زرد روز بروز اس جوان کو میں
کرنالہ کشی کب تئیں اوقات گذاریں
فریاد کریں کس سے کہاں جاکے پکاریں
جس جاگہ خس و خار کے اب ڈھیر لگے ہین
یاں ہم نے انھین آنکھوں سے دیکھے ہیں بہاریں
ناچار ہو ارخصت جو منگا بھیجے تو بلا
میں کیا کروں جو میر جی جاتے ہیں سدھاریں
یوں ہی حیران و خفا جون غنچہ تصویر ہوں
عمر گزری پر نہ جانا میں کہ کیوں دلگیر ہوں

کھول کر دیوان میرا دیکھ قدرت مدعی
گر چہ ہوں میں نوجوان پر شاعروں کا پیر ہوں
اسقدر بے ننگ خطوں کو نصیحت شیخ جی
باز آؤ ورنہ اپنے نام کو میں میرؔ ہوں
میں وہ پژمردہ سبزہ ہوں کہ ہو کر خاک سے سرزد
یکایک آگیا اس آسماں کے پائمالی میں
آہ اور اشک ہے سدا ہے یہاں
روز برسات کی ہوا ہے یہاں
جس جگہ ہو زمین تفتہ سمجھ
کہ کوئی دل جلا گڑھا ہے یہاں
کیسے کیسے مکان ہیں ستھرے
یک ازانجملہ کربلا ہے یہاں
یک سسکتا ہے ایک مرتا ہے
ہر طرف ظلم ہورہا ہے یہاں
صد تمنا شہید ہیں یک جا
سینہ کوبی ہے تعزیہ ہے یہاں
دیدنی ہی غرض یہ صحبت شوخ



روزو شب طرفہ ماجرا ہے یہاں
خانہ عاشقان ہے جائے خوب
جائے رونے کی جابجا ہے یہاں
کوہ و صحرا بھی کرنہ جائے باش
آج تک کوئی بھی رہا ہے یہاں
ہے خبر شرطہ میرؔ سنتا ہے
تجھ سے آگے یہ کچھ ہوا ہے یہاں
موت مجنوں کو بھی نہیں آئی
کوہکن کل ہی مرگیا ہے یہاں
وجہ کیا ہے کہ میرؔ منھ بہ تیرے
نظر آتا ہے کچھ ملال ہمیں
گئی عمر ساری جیسے شمع باؤ کے پیچ
یہی رونا جلنا گلنا یہی اضطراب تجھ بن
موئے سہتے سہتے جفا کا ریاں
کوئی ہم سے سیکھے وفاداریاں
ہماری تو گذری اسی طور عمر
یہے نالہ کرنا یہی زاریاں

فرشتہ جہاں کام کرتا نہ تھا
مری آہ نے برچھیاں ماریاں
دن نہیں رات نہیں صبح نہیں شام نہیں
وقت ملنے کا مگر داخل ایام نہیں
بیقراری جو کوئی دیکھے سو کہتا ہے
کچھ تو ہے میرؔ کہ یکدم تجھے آرام نہیں
گذر جان سے اور ڈر کچھ نہیں
رو عشق میں پھر خطر کچھ نہیں
ہے اب کام دل جس پہ موقوف تو
وہ نالہ کہ جسمیں اثر کچھ نہیں
تری ہو چکی خشک مژگاں کے سب
لہو اب جگر میں مگر کچھ نہیں

U 712